श्री शिव प्रातः स्मरण स्तोत्रम्

प्रातः स्मरामि भवभीति हरं सुरेशं, गंगाधरं वृषभवाहनमम्बिकेशम्।
खट्वाङ्शूल वरदाभयहस्तमीशं, संसार रोग हर मौषधमद्वितीयम्।।1।।

जो सांसारिक भय को हरने वाले और देवताओं के स्वामी हैं जो गंगा को धारण करते हैं जिनका वृषभ वाहन है जो अम्बिका के ईश हैं तथा जिनके हाथ में खटवांग त्रिशूल और वरद तथा अभय मुद्रा है उन संसार रोग हरने के निमित्त अद्वितीय औषध रूप ईश (महादेव जी) का मैं प्रातः समय में स्मरण करता हूं।

प्रातर्नमामि गिरीशं गिरिजार्द्धदेहं, सर्गस्थितिप्रलयकारणयादिदेवम्।
विश्वेश्वरं विजितविश्वमनोऽभिरामं, संसार रोगहरमौषधमद्वितीयम।।2।।

भगवती पार्वती जिनका आधा भाग हैं, जो संसार की सृष्टि स्थिति और प्रलय के कारण है, आदि देव हैं विश्वनाथ है, विश्वविजयी और मनोहर हैं। सांसारिक रांग को नष्ट करने के लिए अद्वितीय औषधरूप उन गिरीश (शिव) को प्रातः काल नमस्कार करता हूं।

प्रातर्भजामि शिवमेकमनन्तमाद्यं वेदान्तवेद्यमनघं पुरुषं महान्तम्।
नमोदिभेदरहितं च विकारशून्यं संसाररोगहरमौषधम् द्वितीयम्।।3।।

जो अनन्त से रहित आदि देव हैं, वेदान्त से जानने योग्य, पापरहित, एवं महान पुरुष है तथा जो नाम आदि भेदों से रहित, छः विकारों (जन्म, वृद्धि, स्थिरता, परिगमन, अपक्षय और विनाश) से शून्य संसार रोग को हरने के निमित्त अद्वितीय औषधि हैं, उन एक शिवजी को मैं प्रातःकाल भजता हूं।

प्रातः समुत्थाय शिवं विचिन्त्य, श्लोकत्रयं येऽनुदिनं पठन्ति।
ते दुःखजातं बहुजन्मसंचितं, हित्वापदं यान्ति तदेव शम्भोः।।4।।

जो मनुष्य प्रातःकाल उठकर शिव का ध्यान कर प्रतिदिन इन तीनों श्लोकों का पाठ करते है, वे लोग अनेक जन्मों के संचित दुःख समूह से मुक्त होकर शिवजी के परम कल्याणमय पद को पाते हैं।

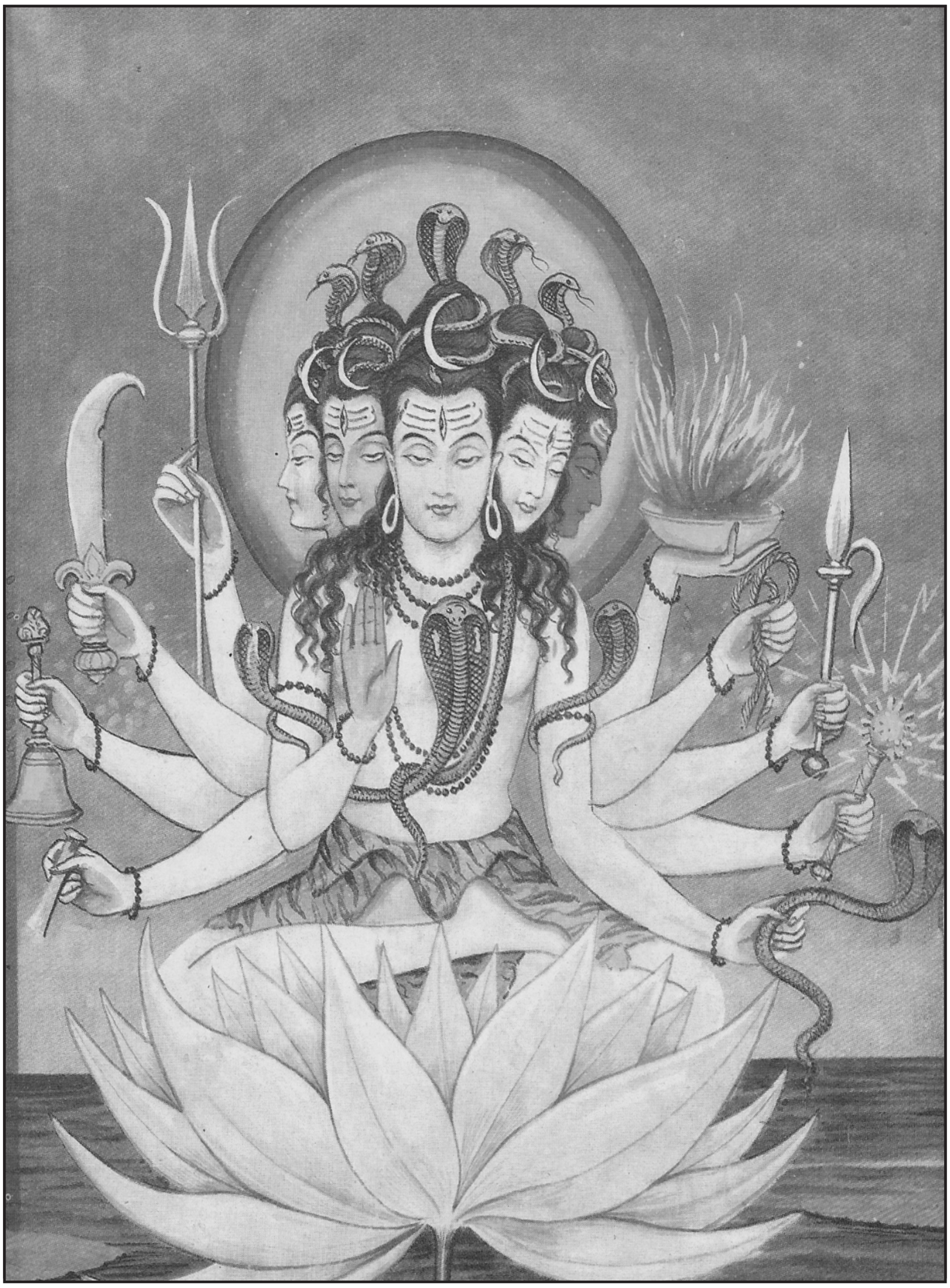

पंचमुखी महादेव

।। हरिः ।।

पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते। पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।।

आत्मा त्वं सुमतिः सदा सहचराः प्राणाः शरीरं गृहं
पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधिस्थितिः।
संचारः पदयोः प्रदक्षिणविधिः स्तोत्राणि सर्वा गिरो
यद्यत्कर्म करोमि तत्तदखिलं शम्भो तवाराधनम्।।

।। श्री गणेशाय नमः ।।
नमः शिवाय
नमः शिवायै

शिव शक्ति कथा

प्रथम अध्याय ;शिवाय खण्डद्ध

नमः शिवाय

।। मंगल वन्दना ।।

पंच वक्त्राय विद्महे, महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।
भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुवरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः
प्रचोदयात्।
जयति शिवा शिव जगत्पते, जय सर्वेश्वर जय उमापते।
साम्ब सदाशिव साम्ब सदाशिव, साम्ब सदाशिव जय जय शंकर।।

शिवां शिवार्चां वितनोमि सत्याम्
शिवो हरेन्मे तमशूलसंधम् ।
गंगातरंगं गुरुगौरिसंगम्
भजाम्यहं गणपतिपादपंकजम् ।।1।।
शिवं स्वरूपं हि शिवस्य काङ्क्षे
छन्दस्सु चौपाई माध्ययेन ।
तथा च दोहामवलम्ब्य भूयः
सुवर्णयामीहि जग(िताय ।।2।।
वन्दे भवानीं शिवशंकर च
श्र(ास्वरूपां विश्वासरूपम् ।
अस्यां कथायां संस्थित्य नित्यम्
सि(ां कथां में प्रकरोतु पूर्णाम् ।।3।।

शिवस्य परमो विष्णुर्विष्णोश्च परमः शिवः ।
एक एव द्विधाभूतो लोके चरति नित्यशः ।।4।।
नमश्चर्मनिवासाय नमस्ते पीतवाससे ।
नमोऽस्तु लक्ष्मीपतये उमायाः पतये नमः ।।5।।

विश्वोन्व स्थितिलयादिषु हेतुमेकं,
गौरीपतिं विदिततत्वमनन्तकीर्तिम् ।
मायाश्रयं विगतमायमचिन्न्त्यरूपं,
बोध स्वरूपममलं हि शिवं नमामि ।।6।।
अहं निर्विकल्पो निराकार रूपो,
विभुर्व्याप्य सर्वत्र सर्वेन्द्रियाणाम् ।
सदा मे समत्वं न मुक्तिर्न बन्धः,
चिदानन्द रूपः शिवोऽहम् शिवोऽहम् ।।7।।
न पुण्यं न पापं न सौख्यं न दुःखं,
न मंत्रो न तीर्थं न वेदा न यज्ञाः ।
अहं भोजनं नैव भोज्यं न भोक्ता,
चिदानन्द रूपः शिवोऽहं शिवोऽहम् ।।8।।
माता च पार्वति पिता महेश्वरः,
भक्ताश्च सकलः बान्धव समानः ।
त्रैलोक्य मानव कुलश्चनुहारो,
रूपो गुरौसख हृदयादि संगे ।।9।।

दोहा

वंदउँ गुरु गं गणपतये, विमल बुद्धि शुभ रूप।
सकल कथन कथमूल तुम, बनु अन्तर मति धूप।।1।।
नयन श्रवण उर माथ मति, शिवम रसे रहुं बूड़।
मने खेत रखवार बनु, भांती धरती जूड़।।2।।
जासु कृपा लय दूरि भै, सृष्टि रूप जग देख।
कृपा सोई मांगत फिरउं, खींचन कथ कृत रेख।।3।।
सोई कृपा पांव लहि, लेत पंगु चढ़ि शैल।
मूक जांहि वाचाल बनि, सुधा बनत विष थैल।।4।।
वन्दउं गुरु पद कंज, ज्ञान सिन्धु नर रूप हरि।
जासु वचन श्रवन परत, अन्तर तिमिरे जांहि जरि।।5।।

चौपाई

वन्दउं गुरु पद पदम परागा। पाइय सुरुचि शिवम रस जागा।।
पद रज कण कणिका परत्येके। चलहिं संवारत भाव विवेके।।
वाणी यंतर श्रवण हृदय बल। चाह पखारइ मन सचलाचल।।
आजहुं नयने कृपा तुम्हारी। बनु कथ दर्शक दृष्टि हमारी।।
प्रज्ञा श्रद्धा रूप तुम्हारे। चाह बसहिं मोरे सहस्त्रारे।।
आदि अन्त दृष्टा नयनन के। एक तुम्ही मोरे जग जन के।।
महिमा मूल सुफल प्रद चारू। ताते तरहिं धरनि परिवारू।।
गुरु पद नख शिख जीवन ज्योती। सुमिरत जागहिं शक्ती सोती।।
दरसेउ उघरहिं विमल प्रकाशा। मिलहीं पथ पूरक अभिलासा।।
शरण गहे बनु दोष प्रभंजन। मिलहीं श्रेय कीर्ति यश चन्दन।।
परम पुनीत ध्यान सद गुरु के। नित वन्दउं शिव कथन शुरु के।।
वन्दउं प्रथम ठांव स्थाना। आसन व्यास रूप जेहि माना।।
धरनी विविध वस्तु पुनि काला। सहित परिस्थिति व्याप्त हवाला।।
सोवत जागत जीवन सगरे। चलत फिरत बोलत हर अखरे।।
कर्म अकर्म ज्ञान विज्ञाने। कबहुं दुराइ नाहि शिव ध्याने।।
तन मन साधन बुधि जिज्ञासा। फिरइ शिवम वृत्ति हेतु प्रकाशा।।
भले लेइ ग्रसि कुमति विमूढ़ा। पर मन प्रन इहि होइ न बूढ़ा।।
तन बाहर मन जबहीं जावै। शिवम शिवा खोजइ फिरि आवै।।
श्रवन सुनन्ह भावै हर गीता। देखहि नयन नाथ पथ रीता।।
करनी कर्म लेखनी कर के। जांहि कतहूं नहि शिवम बिछुरि के।।
भले मोहि कछु देहु न आना। पर इहि देन नाहि अलसाना।।

शिवम शिवा वन्दन कथन, बनु जेहि विधि परिपूर्ण।
सोई बल बुद्धि शक्ति मोहि, देहु विध्न करि चूर्ण।।6।।

सुकृति शंभुतन विमल विभूती। तासु शक्ति नव प्रभा प्रसूती।।
पाइ प्रभा सोई गुन गाऊं। मोह जनित संशय दुरियाऊं।।
देव महीसुर वन्दन बानी। सोई देहिं करहिं गुन खानी।।
करउं प्रनाम सप्रेम सुबानी। शंभु भगत गण सन्तन ज्ञानी।।
साधु समाज दोष पर हारी। तीरथ सकल धरा सुखकारी।।
नव युग दाता प्रज्ञा विधाता। महाकाल गनि वन्दउं प्राता।।
मन उदगाता सम पितु माता। वेद मूर्ति नाशक कलि त्राता।।
लइ उपदेश काग बनु हंसा। बाढ़ै धरनि देव सुर वंशा।।
नहि सत संगति गोई कोई। सो इहि बीज जनम भर बोई।।
जे सत संगति करै करावैं। तिन वन्दउं मो पथ दिखरावैं।।
चलु सत संगति शिव परिवारे। होहीं तहां विषमता छारे।।
सुर मुनि दानव होहि सुखारी। शिवम कुले जे शरण पधारी।।
नाना शास्त्र पुराण प्रमाना। सम सत संगति सत्य न आना।।
जहां वेद विधि विफल प्रभाऊ। तहं सत संग दोष दुरियाऊं।।
सकै न भल करि जहं जल गंगा। सो शठ सुधरेउ पाइ सुसंगा।।
सत संगति मुद मंगल मूला। पूर उद्देशक हर मन शूला।।
बिनु सत्संग विवेक न होई। शिवम कृपा बिनु सुलभ न सोई।।
जहं सत्संग सोह तहं गंगा। आउ शिवा शिव सुध घट संगा।।
आतम अमर कथा तहं होई। सहजे लेहि लोग दुःख खोई।।

आन कठिन करहीं सरल, पुष्प गंध मन जासु।
बार बार विनवउं तिनहि, पुरवहु दास प्रयासु।।7।।

भल अनभल निज निज करतूती। अनुसारे जश मिलइ विभूती।।
जिव जड़ चेतन लख चौरासी। जल थल गगन रूप कोउ बासी।।
काह न सतसंग प्राण पियारू। सब मंह शिव निज शक्ति सचारू।।
शिव शक्ती अंशज जग मानी। करउं प्रनाम जोरि युग पानी।।
उभरेउ ज्ञान चिन्हन्ह निज मर्मा। लहि सत संगति करि सत कर्मा।।
वन्दउं आतम देव प्रभूता। रूप तासु परमातम पूता।।
जग ब्रह्मांश आत्मा रूपा। निवसइ साधन देह स्वरूपा।।
जदपि सृष्टि सब ब्रह्म वतारा। देह देश ता नाम हिगारा।।
आत्म अदेख देह आधीना। बिनु आतम तन जाइ कहीं ना।।
आत्म कराउ करै साकारा। श्रेय प्रेय लह दोउ प्रकारा।।

जे पावइ ते बनै कुबेरा। ललचइ पुनि डारन्ह भव डेरा।।
करु जग तन ते अरि मीताई। माया बंधन फिरइ भुलाई।।
आतम एक देह अनगीना। देह अनुसार जाइ जग गीना।।
सुमति सुसंगति सत शुचिताई। होत मनुज तन पर हित तांई।।
इद्रिन्ह दैहिक प्रजा स्वरूपा। जथ करनी तथ जीवन रूपा।।
ब्रह्म अंश परु आतम नामा। बनि चौरासी फिरु वसुधा मा।।
प्रनवहु मानि शिवा शिव रूपा। जड़ चेतन जित जीव स्परूपा।।
सुजन कुजन सब रूप तुम्हारे। मैं समेत जे मो कहं मारे।।
वन्दउं वेद रूप त्रिपुरारी। राज धरम जेहि ते तुम ढारी।।

बिना धर्म बल राज कहं, राज बिना कहं धर्म।
जथा जीव बिनु देह के, होहि न लौकिक कर्म।।8।।
राज धर्म ते मनुज गढ़ि, देश बनेव बहु ढंग।
कहुं काहूते प्रीति बनि, कहुं काहू से जंग।।9।।

वन्दउं राज धर्म दोउ नीता। अति लघु दोउ ते करु जग प्रीता।।
धर्म सो भल जो शासन कूले। मनो शूल हर सब अनुकूले।।
राज सो भल जो प्रजा हितैषी। न्याय प्रेम तरु बगिया जैसी।।
भल मतिमान कहावै कोई। चलु जे राज धर्म दोउ बोई।।
सो नृप मण्डल मंगलकारी। ले चलहीं अनीति दुतकारी।।
राज विधान जहां रहु पंगुल। कलह कपट तहं चूंगुल चंगुल।।
शायद जाइ धरम दुरियाई। तौ न कबहुं तहं रार ओराई।।
वन्दउं दोऊ पंथ प्रधाने। चलि निज पथ रखु जगहित ध्याने।।
बनु पूरण तब जन उद्देशा। वन्दन मोर शिवम सन्देशा।।
वन्दउं प्राणी दृश्य अदृश्या। आरत अर्थी विरत तपस्या।।
साधु असाधु जाति अनजाती। ठग बटमार अघी हित घाती।।
तरु तीरथ सरिता नद सागर। कपटी कलह कुनीति गुनागर।।
बालक वृद्ध गृही ब्रह्मचारी। बाला देवि भांति महतारी।।
कुलपुर नगर पिता गुरु ढंगे। वन्दउं करन्ह कथन प्रसंगे।।
राजा रंक सकल व्यवसायी। आंतकी जे पर दुख दायी।।
गो गंगा गीता हिम धामा। सुर मुनि सन्त चरन प्रनामा।।
भूसुर भुवन भूत वैताला। जो भव यज्ञ कथा इहि काला।।
ऊंच नीच जन बन्दी खाने। जग हित हेतु भयउ बलिदाने।।
बांधु जे जीवन दर्शक पागी। ज्ञान परोसन बनि अनुरागी।।
ऋषि मुनि आदि अन्त के जेते। तिन पद प्रनवउं वशं समेते।।
निन्दक बैरी प्रीतक मोरे। जे कलि काल चलै विष घोरे।।

विद्यारथी बाल विद्यालय। राज विभाग सकल पत्रालय।।
बनु जहां शिवम शिवा स्थाना। त्राण विनाशक राज विधाना।।
पशु गन खग तन जगती माया। सप्त तत्व बल ज्योती छाया।।
ऋतु मौसम दिन वारिद बारी। सुमन मनोहर छबि फुलवारी।।
सकु न आइ जे ध्यान हमारे। तेहि विनवउं हम बारम्बारे।।

बिबुध विप्र बुध ग्रह नक्षत्र, वन्दि कहउं कर जोरि।
बनि प्रसन्न पुरवहु सकल, मनोभिलाषा मोरि।।10।।

जे पर छिद्र दोष चित धरहीं। बनि ज्ञानी पर निन्दा करहीं।।
व्यसन पियारू न जीवन चारू। अगुन उभारक आप गवांरू।।
देव विरोधी पर दुख शोधी। कामी क्रोधी नाहि प्रबोधी।।
तबहुं तिनहि भावै शिव माया। भले सो जारहिं आपनि काया।।
विष विषधर जित शंभु पुजारी। विनवउं मांनु सुमित अनुहारी।।
सृष्टी एक समय दुइ खानी। दुइनव प्रवर्तक निरमानी।।
भिन्न परस्पर रखु गुण अपने। दीखहुं निशि दिन भांतिय सपने।।
गै दिन रात गये दिन जीवन। देखन्ह कौतुक भूलु सभी मन।।
इहि विधि रोज मरहिं अवतरहीं। तबहुं न शिव माया चित धरहीं।।
कर कोई और करावइ आना। माया वश जग फिरै भुलाना।।
आयु ओराने कुल अधिकाने। पावहिं अवसि सबै अपमाने।।
तबहुं भुलान रहहि कुल सेवा। आपु न भोगि सकइ सुख देवा।।
पाप पुण्य द्वौ सम सग भाई। कुमति सुमति संग करत सगाई।।
जे करि दोऊ सदूपयोगा। सो भव समझदार भल योगा।।
जे अरि ते बोलहिं मृदुबानी। सो गुनिया बड़ हतहिं गलानी।।
साहित्य कलाकार जग जितने। वन्दउं हेतु बनै हित अपने।।
भयउ जे अहहिं विज्ञ विज्ञानी। पंडित योगी ऋषि मुनि ध्यानी।।
होइअ मुदित देहु वरदानू। मोकहं जानि कुटिल अग्यानू।।
वन्दउं व्यासादिक प्रभुताई। जेहि नमने उपजइ कविताई।।
पत्र लेखनी स्याही सत्तर। परसहिं लाइ समस्या उत्तर।।
वन्दउं देव धाम जल धरनी। पावक वायु भावना करनी।।
जेहि विधि बनै कथा अनुवादा। लाइ मोहि सोइ देहु प्रसादा।।

शिवम शकति जगती जननि, बनि रखाउ संसार।
तैसे रक्षण चाह हम, करि विधि वन्दन वार।।11।।

संग न जप तप कछु चतुराई। विज्ञ नाहि विद्या प्रभुताई।।

जौन करावहु सो हम करई। गुन अवगुन कछु सूझि न परई।।
वन्दि चरन मांगउं दिनराती। नाहिय बिछुड़इ पावन थाती।।
करत नहावन गंग सुभाऊ। तन मन पावन उमर गवांऊ।।
राखिय नाथ सगुण दय मोहू। मन मति भाव संग तन लोहू।।
मैं नाही कवि भाव भलोरे। पर विद्या बुधि बल रह थोरे।।
भगति शकति नाही वहि ढंगा। जानि जो सकु त्रयकाल प्रसंगा।।
आयु ओरानि तलक मन अनथिर। तौ विश्वास बनै कैसेन फिर।।
आपु कथे आपुहि बनि रचना। आपुहि बनहु सपूरन सपना।।
भल अनभल सबकै लै भारा। पुरवहु नाथ विचार हमारा।।
भ्रम भटकन सन्देह समेता। दूरि करहु प्रभु कुमति कुचेता।।
यदपि ब्रह्म नर देह संवारी। पर बिनु बसन सोह नहि नारी।।
सुगढ़ रूप रंग प्रद सुन्दरता। मांनु वेश बल ता गुण समता।।
चाम नवीन परसु आकर्षन। मोहित होहिं पाइ जन दरसन।।
शुचि सात्विक आहार विहारा। प्रद तेजस्व विदित संसारा।।
जे मुख मृदुल बैन निकसहीं। सो सुर तरु सुरता संग फरहीं।।
प्राणयाम योग सतकर्मा। प्रद आरोग्य सजीवन धर्मा।।
सुपथ जासु पद चलन्ह सीखहीं। सो सपने दुख नाहि दीखहीं।।
द्वारपाल सम दोऊ काना। बल नयनेउ मन्त्रिन्ह समाना।।
मन मन्दिर बनु माथ पुजारी। घ्राण समुख त्रिदेव नुहारी।।
विद्या कला सोह संग सगरे। पर विवेक बिनु जीवन अखरे।।
तइस प्रभु रचना बनु नीकी। पर बिनु शिवम लगै जग फीकी।।
सहित शिवम गुण प्रज्ञा देहू। मो सम व्यापि रहइ जग नेहू।।
बुधि बल जो इहि काले उपजा। वन्दउं सो सिरजउ शिव गिरिजा।।

वन्दउं बुधि विद्या सकल, सुर सरिता प्रभुताइ।
युगल मनोहर कथन बनु, अस हम प्रज्ञा पाइ।।12।।
जय उमापते पितु गणपते, विष्णु मातु पितु रूप।
तव चरने मन मस्त फिरु, देह दास अनुरूप।।13।।

नमो नमामी शिव सुखदानी। बम बम भोला औढरदानी।।
जय गिरिजापति दीन दयाला। करत रहत सन्तन प्रतिपाला।।
अंग गौर सिर गंग प्रवासी। मुण्डमाल संग ज्योति प्रभासी।।
भाल चन्द्रमा सोहत नीके। कानन कुण्डल नागफनी के।।
वस्त्र खाल बाघम्बर धारी। योगी यती नाम त्रिपुरारी।।
वृषवाहन नन्दी गणनायक। अखिल विश्व के भाग्य विधायक।।
परम ब्रह्म परधाम परमगति। पराशक्ति पति अखिल विश्वपति।।
अलखनिरंजन अन्तरजामी। ओंकारेश्वर सृष्टी स्वामी।।

सब उर प्रेरक सर्वनियन्ता। निर्गुण सगुण आदि अरु अन्ता।।
ऊँ नमो प्रनवहुं जोरेउ कर। जयति जयति जय देव महेश्वर।।
अरध नारि नर रूप तुम्हारो। नयन तीन रांचक संसारो।।
जगताधार सकल सद्योगी। सकला गम महान मुनि योगी।।
पातक तारक विश्व विधाता। एक तुम्हीं त्रिभुवन पितु माता।।
जय जय महादेव भूतेश्वर। ऊँ नमो प्रनवउं जोरेउ कर।।
चतुर्बाहु कर्त्ता कृतबासी। ओजस्वी अघोर अविनाशी।।
अष्टमूर्ति अविराम अनामय। नीलकंठ दुःख हर वरुणालय।।
काल कराल नाथ कुशलागम। योगी रूप विभूति महायम।।
चिदानन्द स्वामी सर्वेश्वर। ओम नमो प्रनवहुं जोरे कर।।
नरक निपातन नाथ निरंजन। निराकार सब दोष प्रभंजन।।
भूपति भूतपाल भण्डारी। कामी काम विनाशन कारी।।
जगत आत्मा करत परमहित। जो नर नारी रटत शिवम नित।।
डमरू धर त्रिशूल विश्वेश्वर। ओम नमो प्रनवहुं जोरे कर।।
नागहार धारक मुण्डमाला। पुरुष पिनाकी देव दयाला।।
जटिल जटाधारी इक बन्धू। पशु पति शूलपाणि गुण सिन्धू।।
सर्व श्रेष्ट सर्वस शर्बाया। नमः शिवाय ऊँ नमः शिवाया।।
जगत वन्द्य ईश्वर परमेश्वर। ओउम नमो प्रनवहुं जोरे कर।।

शिवम शकति माया बनिय, माया बल अदभूत।
तेहि वन्दउं शिवकथ हिते, तिम बूड़इ मन पूत।।14।।

नमो नमो गौरी रुद्रानी। तुम्ही रमा सीता ब्रह्मानी।।
शिव शक्ती तुम शिवा स्वरूपा। भद्रायै कल्याणी रूपा।।
तुहीं शारदा भव बुधि प्रज्ञा। करति शिरोमणि तुम जन अज्ञा।।
सृष्टी सकल स्वरूप तुम्हारा। तुम पालक पोषक संसारा।।
सम जननी जगदम्ब भवानी। वाणी शकति बनहु अनुदानी।।
सब तुम्हार कुछ नाहि हमारा। बन अनबन तुम्हरे शिर भारा।।
जन्मा बाल सुधारइ माता। अस तम ते इहि कथा कै नाता।।
बिना तुम्हारी कृपा को सोहा। बिनु तुम माया को केहि मोहा।।
तुम माया मय तुम्हरी माया। करु नाना करनी जन काया।।
मोहि न ग्रसु माया संसारी। कथा भाव पल नाहि बिसारी।।
माया जौन बनावइ रोगी। ताते बनि रहुं मातु वियोगी।।
जयति जयति जगदम्ब भवानी। तुम सम और दयालु न दानी।।
पुरवहु पूत मनो अभिलाषा। जौन जौन उपजइ जिज्ञासा।।
आशा दूज देइ सो नाही। तुम सब रूप बसति सब ठांही।।
सुर नर मुनि सब बनहिं सुखारी। लाइ श्रद्धा पूजिय महतारी।।

स्वर बुधि विद्या ज्ञानबल, वीणावादिनि देहु।
दें त्रिदेव शुभ शक्तियां, गणपति लेख सनेहु।।15।।
गायत्री के जाप ते, मिटइ सकल संताप।
सो अन्तर गुरु रूप बनि, परसइ प्रभा प्रताप।।16।।

धूप न दीप पुज न समाना। छन्द अज्ञान हीन तप ध्याना।।
प्रखर न भाषा न मृदु बानी। जानु जौन ताकर अभिमानी।।
विनय न जानउं आश लगाये। जौन असंभव पुरवन्ह ताये।।
दीन दयाल सुनहु अब इतना। मानहु बैन दास गनि अपना।।
श्रद्धा सुमन कर कलम हमारे। करउं धन्य हम शरण तुम्हारे।।
वन्दउं गुरु कृपा सत धूरी। जिते उपजु उर भगती पूरी।।
उखरुं अज्ञता जैसेन मूरी। या जरु जैसे लकड़ी झूरी।।
बनि हम शिवम कथा पगडंडी। न मूरति मन्दिर नहि झण्डी।।
पाइ ज्ञान वैराग्य प्रदर्शन। पुलकति होत रहत हमरो मन।।
सो बल आश भरोसा राखिय। शिवम शिवायै गाथा भाखिय।।

अखिल विश्व इक स्वरकथे, थल भारत सुरभूमि।
दरसे उपजत स्वर्ग सुख, इते विश्व रज चूमि।।17।।

भारत धरनि अन्न सुर पानी। सुधा संस्कृति विद्या बानी।।
सम सुरताई देश न आना। विश्व शास्त्र जन विज्ञ बखाना।।
गो गंगा गीता हिम धरनी। ब्रह्म मंत्र मय भूसुर करनी।।
सुर तरु वायु यज्ञ प्रभूता। संग सुरता अतुलित अदभूता।।
जम्बू दीपे भारत नगरी। रह दिसि उत्तर हिमगिरि बखरी।।
सप्त लोक प्रतीक वहां पर। बसहिं सकल सुर जाइ तहां पर।।
ऊंचे शिखर पुरी कैलाशा। तासु नाम शिव लोक प्रकाशा।।
सहित शिवा गणपते षडानन। बसहिं आप शिव भाखु पुरातन।।
निज निज लोक ठांव अनुसारे। बसै देव ऋषि कुल परिवारे।।
देवात्मा हिमालय इहिते। शोभित ब्रह्मकमल सुख गहि ते।।
तहां ऊष्ण शीतल जल धारा। बहहिं निरन्तर विविध प्रकारा।।
पावइ सुरसरिता तन प्राना। खेलहिं गोद देव ऋषि नाना।।
गावहिं हरि हर गुण बहु ढंगे। स्वर अनेक गढ़ि कथा प्रसंगे।।
करै तहां सुर वंश बसेरा। जब जावहिं खल बले खदेरा।।
को न हिमे अवलोकिय लोभा। अतुलित अबरन ता थल शोभा।।
शोभित हिमे बसन शैलेसा। उदरे उचरु ब्रह्म उपदेशा।।
सोह हिमे संग ब्रह्म खजाना।। जौन जाइ सुर लोक बखाना।।
मानव देव रूप गिरि गढ़हीं। वचन वेदमय ब्रह्म तहं पढ़हीं।।

ब्रह्म वतारण मनुज स्वरूपा। स्वर्ग वतारण हिम गिरि रूपा।।
दुर्गा शक्ति जन्म हिम धामा। पावहिं सुर सुख करिय प्रनामा।।
निवसइ जहां देव परिवारा। ता महिमा बरनब दुसवारा।।
हिम जल वायु पाउ जो धरनी। सुरभित रहइ तहां सुरकरनी।।
सकल देव महिमा प्रभुताई। क्षेत्र आर्यावर्त्त सुहाई।।
ब्रह्म लगाव इते इहि ढेरा। मातृ शक्ति धरनी महं पेरा।।
नाम रांचु ता भारत माता। सिंह संगिनी अदभुत गाता।।
सत्य प्रेम सत न्याय पताका। फहरत मिलइ हिमालय खाका।।
तीरथ सरिता भारत माता। रहा हिमालय ते चिर नाता।।
इहि ते हरन देश दुख त्राना। रचइ हिमालय नवयुग प्राना।।

शिवम शिवा पुर धामहिम, देवि देव बल संग।
गंगा औषधि शक्ति दइ, करत रहत दुख भंग।।18।।

जहं सुरधाम आहार विहारा। दर्शि दर्शि जन उतरै पारा।।
सोहैं सकल देव हिम धामे। भारत भूमि तासु जड़ थामे।।
पोषण पालन ता सन होई। बनि बनि पुष्ट देहिं अघ खोई।।
जब जब बाढ़ु अधम अभिमानी। पाइ देव ऋषि हिम बल पानी।।
करहीं असुर अधम बधनाई। होत हिमे अस सदा सहाई।।
देश स्वभाव पाइ दुख भारी। भागइ अवसि हिमालय वारी।।
भांति पूर्वज हिम ऋषि देवा। वन्दन पूजन पाइय सेवा।।
अवसि मुदित बनि बोलहि बानी। कहउ तनय का तुमहि गलानी।।
अइस बंधाइ रहहि हिम धीरा। पाइ जुगुति जन नाशत पीरा।।
जन स्वभाव स्वारथ हित हेते। पूजन देव विविध विधि चेते।।
सुर स्वभाव सेवा सुख पाये। अवसि आर्त जन पीर भगाये।।
विकृति संस्कृति मति कलिकाला। सहित प्रदूषण भांति कराला।।
राज धर्म संग चाल कुचाला। कलह कुचार अनीति घोटाला।।
असुरातंकी द्वेष विषाला। भय ते जीवहि जन महिपाला।।
मिलइ न घर बाहर सुखहाला। तड़फै अभियोगी बनि काला।।
जहं देख तहं इहहि हवाला। जरत सबै जीवहिं इहि काला।।
फिरहि वशं परिवार बेहाला। दूरि दुरान मातु पितु ख्याला।।
करि विषपान बनै मतवाला। आपु फूंकि कथु पथ शिव वाला।।

नाना दोषन्ह भूल गहि, मनुज भुलानेउ आप।
भारत ऋषि चिन्तन करै, परसन देव प्रताप।।19।।

समय चीन्हि जन दुख अनुसारे। युग ऋषि तव हिम धाम पधारे।।
वेद मूर्ति जन प्रज्ञा विधाता। तपोनिष्ठ वसुधा विष घाता।।

हिम ते कहन्ह गयो जन दूखा। खोवन व्यापा कलह कलूषा।।
पहुंचिय नन्दन बन प्रज्ञेश्वर। लाइ ध्यान मन शिव सर्वेश्वर।।
हिमे विनय सुनि देइ वरदाना। जाइ विदारु अधम अभिमाना।।
वर पाइअ मुद फिरु प्रज्ञेशा। तेहि भव बांटु भांति उपदेशा।।
पुनि हिम द्वार रचाइअ यज्ञा। बना बुलावन ऋषि मुनि विज्ञा।।
यज्ञायोजन कृत अनुसारे। होन लाग सब कारोबारे।।
वन्दन वार पताका सोहा। आइ जे दीखु तासु मन मोहा।।
सुर आवन आवाहन भयऊ। सुनि जे चढ़ि निज वाहन अयऊ।।
उमा विलोकिय देवागमना। बोली स्वामी ते प्रिय वचना।।
स्वामि समाधि भाव तुम लीना। हिमगिरि यज्ञ बुलाव सो कीना।।
सुनि शिव थिरकि उठे सुख पाई। नृत्य करिय डमरू डहकाई।।
चढ़ि नन्दी चलु शिवा समेता। गयउ पहुंचि हिम यज्ञे खेता।।
सहित भवानी सोहे शंकर। मुद्रा भाव भरे मंगलकर।।
विधि विष्णु बैठेउ नियराई। जथा भाव शिव वन्दन तांई।।
सकल शक्तियां देवी रूपा। आइ बसिय तहं बनि सुख धूपा।।
जे आवत ते आसन पावत। हरखत यज्ञ लाभ चित लावत।।
गौ गंगा जमुना त्रिवेनी। सबै पधारि जे देवी श्रेनी।।
तीरथ सकल धाम हिय केरे। आइय बैठहिं सब निज फेरे।।
भू हिम सुर सुनि आपु बुलावन। सहित ऋषिन्ह कीन्हीं तहं आवन।।
गिरि तरु बाग तड़ाग पुराणे। आयउ सबै लेन नव प्राणे।।
रवि शशि तारा सप्त ऋषि दल। सन्तन मण्डल आउ मही तल।।
रिद्धि सिद्धि सब ब्रह्म वतारण। लीन्ह तहां आसन करि धारण।।
शक्ती भगति ज्ञान विज्ञाने। ग्रह नक्षत्र तहं करिय पयाने।।
तनय समेते भारत माता। पहुंचेउ करन्ह पुनीते गाता।।

अमर कथा सुख यज्ञ कै, सुनिय बूझि सब जात।
यज्ञ धाम बड़ि भीर भै, देव यज्ञ शुरुआत।।20।।
देव यज्ञ सम्पन्न करि, छिड़ा लोक सम्वाद।
कलि कलूष विधि जाइ केहि, भवा प्रश्न अनुवाद।।21।।

वन्दि गुरु युग ऋषि शिर नाई। महामंत्र प्रथम मुख गाई।।
सकल देव ऋषि धारि शरीरा। बैठ इहां नाशन भव पीरा।।
सुनहु सबै इहि दिन कलिकाले। कुमति पसारिय अधरम पाले।।
त्राहि त्राहि जन जीवन करई। तेहि चंगुल कोउ विधि न उबरई।।
आयउ सब कीजै समधाना । जावै कलि बनु नव युग आना।।
सुनेहु ऋषिन्ह करि मनन सलाहा। पर आवाज न उठु कोउ पाहा।।

शौनकादि तहं चुप इहि अवसर। बैठ तहां बड़ देव धुरन्धर।।
उत्तर सुनन्ह सबै मन चाहत। सोचु सुने बिनु आउ न राहत।।
तौ नारद वीणा झनकारी। बोलेउ विष्णु ओर निहारी।।
नाथ कथहु कलिकाल निपातन। होहि काह विधि कहु सो बातन।।
त्वरित विष्णु ब्रह्मा संकेते।। सो समरथ इहि भाखन हेते।।
सुमन वृष्टि नभ ते झरि लाये। ओउम् नाद मिलि इक स्वर गाये।।
भूः भुवः स्वः । सत चित्त आनन्द ।।
नाम प्रभु के होवहिं अगणित। रहता वह घट घट में स्थित।।
प्रभु का बोध कराये । सत चित्त आनन्द ।।
वह तो है अति निर्मल पावन। कलि कलूष दुर्बुद्धि नशावन।।
दूर विकार हटाये । सत चित्त आनन्द ।।
प्रभु से डरे सो निर्मल होवे। सदबुद्धि पाउ दीनता खोवे।।
सब सुख शक्ति थमाये । सत चित्त आनन्द ।।
सब का अन्तिम वही ठिकाना। उसके घर सबको है जाना।।
अक्षर ब्रह्म सनातन । सत चित्त आनन्द ।।

बड़ विराट सुर सभा बनु, सुनन्ह पढ़न्ह सदज्ञान।
जिते कलिक मल छार बनु, भागइ मन अज्ञान।।22।।

लागी देव सभा हिय धामे। नाइ शीश तेहि करउ प्रनामे।।
तहं देवासन परम विशाला। स्वर्ग स्वरूप दिव्यता आला।।
मन मणि पूरित अतुलित आभा। लागत योगे शिवम शिवा भा।।
सुरन्ह समेत विनय हरि लाये। शिवम शिवा सब शीश नवाये।।
उत्पत्ति रक्षक पालन कारी। सहित शिवा बैठे त्रिपुरारी।।
सम कैलाश सुहावन लागा। सोह देव परिवार विभागा।।
देवि शक्ति नन्दीगण सगरे। सोहे नेर सुनन्ह शिव अखरे।।
दायें बायें पद अनुसारे। बैठे सकल देव तेहि ठारे।।
लाग नेर शिव विष्णु आसन। भयउ ब्रह्मा थापित व्यासासन।।
नारदादि सप्तर्षि सनन्दन। सोहे शौनकादि लै वृन्दन।।
धरि धरि देह सुआसन लेई। आदि मध्य ऋषि आवा जेई।।
राम कृष्ण सोहे हनुमाना। वेद शास्त्र सब सन्त पुराना।।
बालमीक तुलसादि मुनीशा। जे ऋषि मुनि रह देश वरीशा।।
आयउ सबै सुधा रस चाखन। नहि सब नाम कथन बुधि आपन।।
भूसर वृन्द संग प्रज्ञेश्वर। बैठ सुनन्ह कलि हती ब्रह्मेश्वर।।
जीव जन्तु सब भीड़ लगाये। जे इहि सभा खबर सुनि पाये।।

तरु तीरथ खग चले ओनावन। सुनु जे करिय ब्रह्म मुख गावन।।
सभा विशाल जाइ न आंकी। कोटि कइव लगु कह जे झांकी।।
निज श्रेणी अनुसारे आसन। सुर मुनि जीव जन्तु सब साथन।।
रवि शशि रत परसन प्रकाशा। तहां परेउ तम दूरि हिराशा।।
धन्य हिमालय जीवन धरनी। जहां सुधा बरसइ सुर करनी।।
हिम तीरथ दरसे इहि कारण। होहीं दुर्गुण दोष विदारण।।

त्राहि हरण संसार कै, हतन्ह कलिक संताप।
कुल फूटन तड़पन नृप, खोवन मनसा पाप।।23।।
सभा ध्येय सुरता जगै, विष्णु आयसु पाइ।
देवासन विधिना बैठि, शिवम शिवा कथ गाइ।।24।।

चारि वेद गुण ब्रह्म विधाता। सृष्टी हेतु रूप पितु माता।।
मानस मैथुन सृष्टी रांचिय। रूप लाख चौरासी खांचिय।।
बिछुड़ा मानव आदि विलोके। विद्या वेद नुदानिय लोके।।
तानुसार जौ कलिक बियापा। करै सो खोवन शिव प्रतापा।।
बनु भूसुर ग्रहण जे करई। जे न गहहिं ते खल अनुसरई।।
जीवन व्यर्थ आपु करि वंशे। पालहि पोषहि कलिमल अंशे।।
ऐसिय मानव विपति विशाला। देव सभा बनु प्रश्न सवाला।।
उत्तर देन निसारण तांई। बनि वक्ता बैठे विधि आई।।
नावत शीश करत प्रनामा। विधना बोलेउ वचन सभा मा।।
जग आराध्य देव सुर मुनि के। हमहूं शिवम शिवा गुनि धुनि के।।
मानिय पूजि रहउं शरनाई। इन सम दूज न और सहाई।।
सो पालक रांचक संहारी। शक्ति समेत निगुण साकारी।।
राज धरम मानव कोउ देशे। परु दुख दारिद कोऊ क्लेशे।।
अधम अराजकता अनरीती। सोई नाशि सकै सकु जीती।।
काल हतहिं का कलि औकाती। विषम वंश पालहिं भल भांती।।
ता भरोस बल सुरता संगे। दृश्य अदृश्य अवसि कोउ ढंगे।।
मैं मानउं सब ताहि सिखावउं। शिवम शिवा शरणे चलि जावउं।।
जब जब मोकहं विष्णु समेता। भा असूझ मिलु पतन निकेता।।
वन्दि चरण आपन दुख खोवा। मांनु मोरु सबु ता पद रोवा।।
सो अति सहज सरल उपकारी। नाम जपे दुख देहिं विदारी।।
आरत भाव पाइ जन शरनन। करि देहीं सब आपु समर्पन।।
शिवम शिवा आदत हम जानी। तिन समान नाही कोउ दानी।।
जे शिव शिवा चरन अनुरागी। जाइ व्यथा सब बनै सुभागी।।
युगे पदे चित लाइ विधाता। करि वन्दना कथा शुरुवाता।।

सत्र विरचि विधि कथा वकासा। हेतु सभा सद ज्ञान प्रकाशा।।
बार बार नमनत तन मन से। शिवम शकति ब्रह्मा स्तवन से।।

नमस्तुभ्यं भगवते सुव्रतेऽन्ततेजसे।
नमः क्षेत्राधिपतये बीजिने शूलिने नमः।।
नमस्ते ह्यस्मदादीनां भूतानां प्रभवाय च।
वेद कर्मावदातानां द्रव्याणां प्रभवे नमः।।
विद्यानां प्रभवे चैव विद्यानांपतये नमः।
नमो व्रतानां पतये मन्त्राणां पतये नमः।।
अप्रमेयस्य तत्त्वस्य यथा विद्मः स्वशक्तितः।
कीर्तितं तव माहात्म्यमपारं परमात्मनः।।
शिवो नो भव सर्वत्र योऽसि सोऽसि
नमोऽस्तुते।
तं शंकरं शरणदं शरणं व्रजामि।।

अज अनादि अविगत अलख, अकल अतुल अविकार।
वन्दउ शिव पद युग कमल, अमल अतीव उदार।।25।।
आर्तिहरण सुखकरण शुभ, भक्ति मुक्ति दातार।
करउ अनुग्रह दीन गनि, देहु सुविमल विचार।।26।।

सर्व लोक ईश्वर सर्वेश्वर। योगेश्वर योगी परमेश्वर।।
सर्वातीत अनन्य सर्वगत। निज स्वरूप महिमा स्थितरत।।
अंग भूति भूषित चर त्रिभुवन। चन्द्र मुकुट संग गंग भुजंगन।।
व्याघ्रचर्म परिधान मनोहर। अभय वरद मुद्रा गिरिजावर।।
तन कर्पूर गौर उज्ज्वलतम। तेज ओज हारक अन्तर तम।।
भाल त्रिपुण्ड्र मुण्डमालाधर। गल रुद्राक्ष माल शोभाकर।।
विधि हरि रुद्र त्रिविध वपुधारी। तुम्हीं सृजन पालन लयकारी।।
भोग वियोगी दाया सागर। आशुतोष आनन्द उजागर।।
शिव रहस्य शिव ज्ञान प्रचारक। शिवम शिवा प्रिय लोकोद्धारक।।
जय जय आदि देव त्रिपुरारी। महादेव शंकर निरकारी।।
शुद्ध सच्चिदानन्द अनामी। अविनाशी प्रभु अन्तरयामी।।
आदि पुरुष आनन्द अगाधा। अन्त रूप योगी तप साधा।।
भवानन्द आनन्द प्रदाता। पूर्ण रूप शिव सृष्टि विधाता।।
आक धतूर पात सुख भोगी। अमल अगोचर अदभुत योगी।।
व्यापक अनवद्य घटघट बासी। भेद अभेद जगत सुख राशी।।
आध अंग नर आधिल नारी। अति उदार शिव बड़ हितकारी।।
अवनीश्वर अकेल विश्वेश्वर। अलख निरंजन देव महेश्वर।।
पंचानन भूतनपति नाथा। शशि छबि माथ भुजंगन साथा।।

पशुपति वाम देव कण्ठाया। गंगा शीश गिरीश कहाया।।
वेद श्वास सृष्टी तन रूपा। स्वयं शिवा शिव विश्व स्वरूपा।।

कह ब्रह्मा सुनु सभा सुर, तीन काल इहि ढंग।
शिव वन्दन पूजन करउं, पुरवन्ह सकल प्रसंग।।27।।

शिव नौका नाविक शिवरानी। जांनु पूजि ते बनु भल खानी।।
शिव नामामृत पावन थाती। पाप पतन भय असुर निपाती।।
जे शिव नाम लगावहिं गोता। बनहिं सुभागी नाती पोता।।
शि अक्षर सूचक कल्याना। पावन शान्ति सनेह सयाना।।
सुमति सुभाव सगुण सदवेशा। सुखद सुभट सदबुद्धि सुरेशा।।
बनु व अक्षर ब्रह्म विधाता। पर शि का मानत भव प्राता।।
बिनु इकार शिव शव सम जाना। पाइ शकति बल शिव विष पाना।।
जहां शिवा शिव ज्ञापन जापन। नाहि चलै तहं कलि बलतापन।।
जे चाहइ आपन कल्याना। करु सो अवसि शिवा शिव ध्याना।।
जे जाना शिव नाम प्रभाऊ। तिते कलिक विष बड़ भय खाऊ।।
देही शास्त्र पुराण प्रमाना। शिवम नाम महिमा विधि नाना।।
नारदादि विष्णु सब गावत। शिव नामामृत पिय सुख पावत।।
जौ सन्देह होइ मन काहू। लेहु पूंछि बैठा सबु याहू।।
कहि हां हां सब जयति लगाई। कलि सनपाति भाग बगिलाई।।
सुमति गठन जन अन्तर जागे। होवहि मन सतयुग मिलु आगे।।
पुनि बोले विधि सभा निहारी। गावत जयति जयति त्रिपुरारी।।
जय पावक रवि चन्द्र जयति जय। सत चित आनन्द भूमा जय जय।।
जय जय विश्व रूप हरि जय जय। जय हर अखिल आत्मन जय जय।।
जयति उमा गौरीपति जय जय। जयति जगतपति शिवम शिवा जय।।
सोह श्वांस तन शिवम प्रकारा। करहिं शिवा ता गति निरमारा।।
शिवम आपु संग जोड़न तांई। ओउम नाद परथम प्रगटाई।।
व्यापइ ओउम नाद जेहि आनन। देन शकति शिव मानै आपन।।
आपु ते जोड़ि लेहिं तेहि वैसे। साख ते साख जात जुड़ि जैसे।।
सुर मुनि संग जो न सुरताई। फरिय तो जांनु उभरु अधमाई।।
वेदाचार व्यवस्थित कर्मा। विकसन हेतु रचिय हरि धर्मा।।
महामंत्र जप देवाचारा। जुड़न्ह शिवा शिव पावन धारा।।
सका न जुड़ि जे ते अनभागा। बना हेतु तेहि नरक विभागा।।
सोह जासु स्वर उर शिव टहनी। सो जुड़ि पाउ लेहि शिव गहनी।।

शिव प्रथम स्वर ऊँ बनु, प्राण रूप भव बास।
सकल सृष्टि मंह व्यापि रहु, प्रभुता महि आकास।।28।।

ओउम् साधना देव त्रय, करत रहहिं दिन रात।
ओउम् नाद बिनु शक्ति त्रय, ना नाशै उत्पात।।29।।

प्रभुता शिवा शिव नाता। कुछ अपने मुख कथिय विधाता।।
ओउम ब्रह्म बीजाक्षर रूपा। प्रणव शिवम स्वर अकथ अनूपा।।
ओउम ज्योति रक्षक जग त्राता। सकल चराचर कै पितु माता।।
ओउम जापु जे श्रद्धा समेता। बनइ शिवा शिव ता तन चेता।।
ओउम लोक दोउ करै सुधारन। पतित उबारन भव भय हारन।।
ओउम तत्व व्यापइ तन जाहू। बनु आकर्षित लखि सब वाहू।।
ओउम पाइ बनु जग रचनाई। फरु जड़ भीतर चेतनताई।।
ओउम रोग दुख विपति विदारक। देत शकति सुरता तन धारक।।
ओउम् ज्योति पाइअ हम दोऊ। भ्रम भटकन मन संशय खोऊ।।
ओम रूप गनु ब्रह्म सनातन। मंत्रे विद्या मूल प्रभातन।।
ओउम् नमः शिव जे जन जापे। व्यापु न तापर कलि संतापे।।
ओउम शकति जावइ नहिं मापी। बनि स्वर रूप सबै तन व्यापी।।
ओउम् शरण बिनु शरण न मिलई। दूभर स्वर्ग नरक पुर परई।।
ओउम् नाद त्रय शक्ति सुहाई। पूत मानि बनहीं सुखदाई।।
ओउम् रूप भव ब्रह्म समाना। माया अतुल जाहि जग माना।।
ओउम् प्रभुत्व विविध विधि गाई। कह पुनि जिते बढ़हिं सुरताई।।
शिवम चेतना जीव स्वरूपा। जीव बसइ देहे भवकूपा।।
भाव बिना कहं उपजु विचारा। बिनु सदचार जियन्ह बेकारा।।
बनइ अभल सम्वेदन हीना। कर्म काण्ड जौ भाव विहीना।।
कर्मकाण्ड जे कर्म बिसारे। बनु कुपात नहि होहिं उबारे।।
मनो भाव जग परिष्कार तब। आत्म अध्यातम पाइ रहै जब।।
आत्म देह मरम पहिचाना। उपजइ तबहि तासु उर ज्ञाना।।

गुंरू संग गुरु मंत्र ते, गुरुता तन उतिराइ।
सुर स्वरूप मानव बनै, मिलै स्वर्ग चलि आइ।।30।।
ओउम ते प्रचोदयात तक, महामंत्र मति रूप।
सो रांचइ सुर शक्ति बल, प्रभुता अलख अनूप।।31।।

भू र्भुवः स्वः आनन्दा। रूप अवनि नभ संग रवि चन्दा।।
तत्सवितुर्वरेण्यम् परसइ। संग साकारे सुरता दरसइ।।
भर्गो देवस्य धीमहि पाये। सुपथ सुमति आपुहि मन भाये।।
धियो योनः प्रचोदयात् ते। पूरित मिलै दिव्यता जग ते।।
वेद मंत्र सुख सार स्वरूपा। हेतू शिवम शिवा सुख रूपा।।
मंत्र रूप जग जावइ देखी। भले मातु पितु कहि कोउ लेखी।।

ब्रह्म मंत्र सो ब्रह्म समाना। जानहुं सब का करउं बखाना।।
करब कथब सो मंत्र सिखावन। जेहि विधि बनै सतोयुग आवन।।
होइ कलिक मल छार निपातन। सहित सुरन्ह मुनि संशय हातन।।
सुर सुख शासन बनै अखण्डा। चलु बनि मानव त्राहि बिखण्डा।।
महामंत्र सोई जपेउ महेशू। सभा सुनाइ कथिय ब्रह्मेशू।।
एक बार शिव दरसन तांई। तजि निज घर कैलाश सिधाई।।
पहुंचि तहां अवलोकिय ऐसे। ध्यान समाधि मगन शिव जैसे।।
मनहुं प्रनाम शीश पद नाइअ। पुनि हम मातु नेर चलि आइअ।।
भईं कुशलता आसन पावा। ताते आपन प्रश्न उठावा।।
कहउ मातु पितु करि केहि ध्याना। बूझि न पावत मति करि नाना।।
पूंछु विधाता अस कहि बानी। सुनिय मुदित मन बोलु भवानी।।
सुनहुं तनय जित रहु मोहि ज्ञाना। करहिं सो आदि शकति मन ध्याना।।
जापइ महामंत्र दिनराती। अर्जित करहिं तिते त्रय थाती।।
सो सम्पति लै विरचु तिलोका। इहि ते ध्यान करइ नित ओका।।

सुनिय विधाता बूझ मन, लोक हिते बड़ काव।
विधि सोई अपनाइ चलु, हित गनि सभा सुनाव।।32।।
महामंत्र बल जाप से, बनु सब शक्ति सहाइ।
सभा ओर संकेत करि, कह सब चलु अपनाइ।।33।।

कह नारद फिरि त्रयपुर मांही। महिमा शंभु नापि न जाहीं।।
जे साधिय ते लह सुरताई। कल्प वृक्ष भा परहित तांई।।
नेति नेति कहि वेद भाखहीं। आदि आज लौं अगन साखहीं।।
नहि अस दुःख कोऊ त्रय लोका। महामंत्र नाशइ नहि वोका।।
जानत सुनत देव मुनि सबहीं। कह विधि कलिहर को इहि समहीं।।
महामंत्र जपु लाख हजारे। बनु अन्तर स्वर शिवम प्रकारे।।
बुधि बल धन तीनउ प्रभुताई। विकसे खर्चे नाहि ओराई।।
बनु थिर देव सम्पदा गाते। बिनु मारे मरु दुष्वृत्ति बातें।।
उपजइ सन्तति देव समाना। जेहि दम्पत्ति संग मंत्र खजाना।।
जेहि मुख महामंत्र न आवा। कुल कौनव पर असुर कहावा।।
काम धेनु सम भूसुर तांई। सुखद रूप जेस सुर तरु छांई।।
मिलै त्रिगुण जावै त्रय तापा। पाउ मनुज तन देव प्रतापा।।
देवासुर संग्राम न बनई। अगर बनै तो बनु सुर विजयी।।
अक्षर चौबिस परम पुनीता। इनमें बसै शास्त्र श्रुति गीता।।
तासु शक्ति गायत्री नामा। देव रूप सविता सुखधामा।।
कर्म अकर्म ज्ञान विज्ञाना। धन वैभव तामें फरु नाना।।

महामंत्र सम मंत्र न आना। सोह तिमे दोउ लोक विधाना।।
ब्रह्म शक्ति अणु बम्म प्रभुताई। केतनो सुर नर साधि दिखाई।।
महामंत्र जे बनै पुजारी। ताते मुदित रहै त्रिपुरारी।।
महामंत्र नाशक दुखकाला। का औकाति टिकन्ह कलिकाला।।
सर्व सिद्धि प्रद सब सुख दाता। रक्षक प्रवर्तक हर त्राता।।
पूरक मनसा गात प्रशोधक। इहि सम दूज न आत्म प्रबोधक।।
धरनि स्वर्ग फरु अमृत बरसे। सुख सुर शासन प्रकृति परसे।।
भव उद्देश्य देव प्रभुताई। फूलै फरै सुलभ सब तांई।।
महामंत्र जहं साध न जाहीं। कलिकलूष लेही पछुवांही।।
शब्द नाद जहं महामंत्र के। सुमति संग रहु दोउ तंत्र के।।

नाना विधि ब्रह्म मंत्र के, प्रभुता सभा बताइ।
शिवम चरित महिमा कथन, करन ब्रह्म शिर नाइ।।34।।
आसुरिवृत्ति कलूष कलि, जैसेन होइ विध्वंस।
विधना सोई कथन करि, मानि सुलभ शिव अंश।।35।।

ओ३म् आनन्द सदाशिव भाये। अक्षर ब्रह्म रूप कहि जाये।।
सदगुण सदाचार सतसंगा। सदविचार सत्वृत्ति प्रसंगा।।
अभय स्वरुप ओ३म् परतीता। गुणातीत नित्य मायातीता।।
दैवी सम्पत्ति तत्व सार सब। शिवम सुधा रस होवत बरसब।।
पाप जरा मर शोक विहीना। सत संकल्प आत्मा लीना।।
ब्रह्म ब्रह्म शिव ब्रह्म आप ही। मुक्ति रहित रह मुक्ति साथ ही।।
बनि भूमा छबि रहइ महेशा। सोहहि सदा अल्प तन बेशा।।
दिव्य अमूर्त सूक्ष्म सर्वेश्वर। भीतर बाहर अक्षर निरक्षर।।
शब्द न इन्द्रिय गंध स्वरूपा। नहि चित प्राण अप्राण न रूपा।।
बाल न वृद्ध विकास न योगी। जनम न मृत्यु जरा नहि रोगी।।
दैहिक दोषी दोष विहीना। सकल गुणी पर सब गुण हीना।।
भूत भविष्यत नित वर्तमाना। रहित विकार भाव कल्याना।।
जगत नियन्ता शिव जगदीश्वर। ईश महेश नाथ अखिलेश्वर।।
एक रुद्र वृत्त सब अधिकारा। पालन पोषण कृत संहारा।।
जेस अवनी रह नभ उर माही। ताहि त्यागि सकु दूरि न जांही।।
तैसेन आदि शिवा शिव करतल। हम विष्णु शोभित रह हर पल।।
पावक पावन रुद्र स्वरुपा। शान्त रुद्र गनु शिव अनुरूपा।।
रूप सदाशिव सौम्य वायु बन। जगदम्बा परिभाषा जल तन।।

अष्टमूर्ति अरु पंचमुख, दोऊ शिवम स्वरूप।
महिमा दोऊ मूर्ति कै, विशद विराट अनूप।।36।।

सप्त तत्व मिलि सृष्टि विरचहीं। तिमे सदा शिव प्राण परसहीं।।
जेतिक पिण्ड प्राण जग मांही। सोम अगिन सब संग समाहीं।।
अगिन कतहुं कहु सोम प्रधाना। बनि करहीं पिण्डन निरमाना।।
इहि ते सोम सहित इन्द्रागिन। पाइ शिवम बल होहिं सुहागिन।।
वायु मण्डले पंच विभागा। शिरे स्वयम्भू करु अनुरागा।।
अवनि अगिन शशि सोम स्वरूपा। संग रवि मण्डल तेज अनूपा।।
पंच कोष गनु शिव पंचानन। प्रान सोम करु सब मंह आनन।।
रवि मण्डल वृत्त रुद्र सप्राना। करि संहार करै निरमाना।।
रवि शशि सोम अगिन अरु पवना। समय प्रान करि आवा गमना।।
अष्टमूर्ति शिव बनु इहि कारन। करि सम्वत्सर नाम उचारन।।
अगिन स्वभाव करन्ह नभ गमने। सोम स्वभाव चलन्ह पथ पतने।।
तासु क्रिया करवावहि सोई। शिवम शिवा गावत जग जोई।।
पर बिनु एक दूज बिनु कतहूं। काहु न दीखहुं कतहुं सफलहूं।।

शिव स्वरूप वर्णन करत, देव सभा दल संग।
शिव बानी लागे कहन्ह, विधि सुनि रह जेहि ढंग।।37।।

प्रलयस्थितिसर्गाणां कर्त्ताहं सगुणोऽगुणः।
परब्रह्म निर्विकारः सच्चिदानन्दलक्षणः।।1।।
त्रिधा भिन्नो ह्यहं विष्णो ब्रह्मविष्णुहराख्यया।
सर्ग रक्षालय गुणैर्निष्कलोऽहं सदा हरे।।2।।
सुवर्णस्य यथैकस्य वस्तुत्वं नैव गच्छति।
अलंङ्कृतिङ्कृते देव नाम भेदो न वस्तुतः।।3।।
यथैकस्या मृदो भेदो नानापात्रे न वस्तुतः।
कारणस्यैव कार्यं च संनिधानं
निदर्शनम् ।।4।।
वस्तुवत् सर्वदृश्यं च शिव रूपं मतं मम।
अहं भवानजश्चैव रुद्रो योऽयं भविष्यति।।5।।
एक रूपा न भेदस्तु भेदे वै बन्धनं भवेत्।
तथापि च मदीयं हि शिव रूपं सनातनम्।।6।।
मूलीभूतं सदोक्तं च सत्यज्ञानमनन्तकम्।
एवं ज्ञात्वा सदा ध्येयं मनसा चैव तत्वतः।।7।।
त्रयस्ते कारणात्मानोजाताः साक्षान्महेश्वरात्।
चराचरस्य विश्वस्य सर्गस्थित्यन्तहेतवः।।8।।
परमैश्वर्यसंयुक्ताः परमेश्वरभाविताः।
तच्छत्तयाधिष्ठिता नित्यं
तत्कार्यकरणाक्षमाः ।।9।।

पित्रा नियमिताः पूर्वं त्रयोऽपि त्रिषु कर्मसु।
ब्रह्मा सर्गे हरिस्त्राणे रुद्रः संहरणे तथा ।।10।।
लब्ध्वा सर्वात्मना तस्य प्रसादं परमेष्ठिनः।
ब्रह्म नारायणौ पूर्वं रुद्रः कल्पान्तरेऽसृजत् ।।11।।
कल्पान्तरे पुनर्ब्रह्मा रुद्रविष्णू जगन्मयः।
विष्णुश्च भगवान रुद्रं ब्रह्माणमसृजत्पुनः ।।12।।
नारायणं पुनर्ब्रह्मा ब्रह्माणं च पुनर्भवः।
एवं कल्पेषु सर्वेषु ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः।।13।।
परस्परेण जायन्ते परस्परहितैषिणः।
तत्तत्कल्पान्तवृत्तान्तमधिकृत्य महर्षिभिः ।।14।।
एते परस्परोत्पन्ना धारयन्ति परस्परम्।
परस्परेण वर्तन्ते परस्परमनुव्रताः।।15।।
क्वचिद् ब्रह्मा क्वचिद्विष्णुः क्वचिद् रुद्रः प्रशस्यते ।

जयति जयति सुर वृन्द करु, सुनिय बूझि प्रभुताइ।
सोई शिव सब रूप रचु, लय उत्पति बनि जाइ।।38।।
देश काल आकार ता, अनुपम अगन अपार।
नित्य अनित्य सब ढंग सो, शिव सबकै आधार।।39।।
सत चित आनन्द रूप सो, सर्वग आदिक अन्त।
पुनि ब्रह्मा कीनेव कथन, मानि आपु भगवन्त।।40।।

सर्वे नित्याः शाश्वताश्च देहास्तस्य परात्मनः।
हानोपादान रहिता नैव प्रकृतिजाः क्वचित् ।।1।।
परमानन्द सन्दोहा ज्ञानमात्राश्च सर्वतः।
सर्वे सर्वगुणैः पूर्णाः सर्वदोषविवर्जिताः।।2।।
एक एव तदा रुद्रो न द्वितीयोऽस्ति कश्चन।
संसृज्य विश्वभुवनं गोप्तान्ते संचुकोच यः ।।3।।
विश्वतश्चक्षुरेवायमुतायं विश्वतोमुखः।
तथैव विश्वतोबाहुर्विश्वतः पादसंयुतः।।4।।
द्यावाभूमी च जनयन् देव एको महेश्वरः।
स एव सर्व देवानां प्रभवश्चोद्भवस्तथा।।5।।
हिरण्यगर्भं देवानां प्रथमं जनयेदयम्।

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तममृतं ध्रुवम्।
आदित्यवर्णं तमसः परस्तात् संस्थितं
प्रभुम् ।।7।।
अस्मान्नास्ति परं किंचिदपरं परमात्मनः।
नाणीयोऽस्ति न च ज्यायस्तेन पूर्णमिदं
जगत् ।।8।।
सर्वाननशिरोग्रीवः सर्व भूतगुहाशयः।
सर्वव्यापी च भगवांस्तस्मात् सर्वगतः
शिवः ।।9।।
सर्वतः पाणिपादोऽयं सर्वतोऽक्षिशिरोमुखः।
सर्वतःश्रुतिमाँल्लोके सर्वमावृत्य
तिष्ठति ।।10।।
सर्वेन्द्रियगुणाभासः सर्वेन्द्रियविवर्जितः।
सर्वस्य प्रभुरीशानः सर्वस्य शरणं
सुहृत् ।।11।।
अचक्षुरपि यः पश्येदकर्णोऽपि श्रृणोति यः।
सर्वं वेत्ति न वेत्तास्य तमाहुः पुरुषं परं।।12।।
अणोरणीयान् महतो महीयानयमव्ययः।
गुहायां निहितश्चापि जन्तोरस्य
महेश्वरः ।।13।।

शिव स्वरूप महिमा कछुक, विधि भाखिय कर जोरि।
देव सभा श्रवन करिय, भव हित आश अगोरि।।41।।

कह विधना सुनु देव सरेखे। उपजु न प्रीति बिना ता देखे।।
संयोगेन इहि सभा मझारे। सोह शिवा शिव संग दरबारे।।
नीति निपुण विधि भव निर्माता। सभा निरखि कह आगिल बाता।।
बिनु मन जागे देह न जागइ। श्रम बिनु धन बल हाथ न लागइ।।
बिनु साहस कहं शक्ति उघरई। प्रजा बिनु बुधि सुमति न फरई।।
बिना धर्म कहं सत्य यथारथ। भल नहि जीवन बिनु पुरुषारथ।।
सुखारोग्य संयम बिनु नाही। भाव भगति महं ईश समाहीं।।
आयु तेज प्रद प्राणयामे। मिलहिं न शिव बिनु विश्व प्रनामे।।
प्रनवहुं शिवम शिवा जग जानी। सहित सभा जब रूप बखानी।।
सत्यानन्द अनन्त बोधमय। सत्य सनातन विश्व शोधमय।।
त्रयगुण त्रिसुर रूप त्रैलोका। त्रय क्रियापति विश्व विलोका।।
व्यापहि द्यौ भूतल निज रूपे। ध्यावहि योगी विविध स्वरूपे।।
पुरुष पुरातन भव परमातन। विधि विद्या बनि बसु सब गातन।।
सो शिव रूप मनोहर चितवन। मुदित फिरहिं देखिय निज उपवन।।
माथ मुकुट शशि गंग प्रतीका। हारक ताप व्यथा जगती का।।

वाम बांह वेष्ठित जग जननी। हिय मानत शक्ताई अपनी।।
देह नीलमणि भांति मनोहर। देखहि त्रय नयने सगरों घर।।
करिय अर्ध तन आपु सिंगारा। हेतु शिवा करि आध संवारा।।
अध नारीश्वर रूप नमामी। निर्विकार मायापति स्वामी।।
पूर्णानन्द सकल भय हारी। भगतभिलासा पूरण कारी।।
पाश कपाल कमल त्रिशूला। सोहत पालक भव त्रयकूला।।
सत्य प्रदाता नाशक त्राता। जाता जाति भांति पितु माता।।
ध्यान योग संग शैलकुमारी। माया आश्रित माया ढारी।।
नित्य अनित्य आचिन्त्य स्वरूपा। सर्वग तत्वज्ञ निशि दिन धूपा।।
श्वेत कान्ति मन भाउ पुरारी। मय मुद्रा कर मन वपु धारी।।
पद्मासन बाघाम्बर धारी। विश्व बीज वसुधा नर नारी।।
शिव पंचानन कल्प वृक्ष गन। दिव्य प्रभामय वन्दत सुर जन।।
रवि शशि पावक तीन नयन तन। ते विलोकि परसत जीवन धन।।
अजर अमर शिव मंगलकारी। सृजक पालक बल संहारी।।
ध्यानी योगी रूप विधाता। महाकाल पर लगु पितु माता।।
जटा जूट शिर गंग समेता। नीलकण्ठ परहित प्रतिक्रेता।।
सुर सरिता जल होत सुपावन। पाइ रहत शंकर मन भावन।।

सुरमुनि गणन्ह समेत शिव, आवृत पुर कैलास।
पशुपति नाथ विचित्र बनि, देहिं आपु प्रकास।।42।।
महामृत्युंजय रूप शिव, बड़ अदभुत कृत ढंग।
सो छबि दरसे नित मिलै, स्वर्ग सुधा इक संग।।43।।

देव त्रयम्बक अठ भुज धारी। श्वेत कमल पदमासन ढारी।।
शिव मय रहत साधना अपनी। वाम विराजत जगती जननी।।
सोहत एक हाथ अछमाला। मृग मुद्रा दूजे संग पाला।।
शेष हाथ द्वौ अंक सुहाये। घट अमृत सो रहत सजाये।।
भुजन्ह चारि दोउ अमृत कलशे। उपर उड़ेलत जेस जल बरसे।।
सुधा तत्व जब घटा घटन्ह के। दूज उठावत रखा अंकन्ह के।।
शिर ऊपर तेहि लेत उड़ेली। इहि विधि रहत स्वयं शिव खेली।।
रहत पलावित तन मन माथा। शशि गंगा नयने त्रय साथा।।
नागहार बाघाम्बर धारे। शिव अस शिवम शकति संचारे।।
रहत रोज शिव सुधा नहाई। शिव मन महिमा बनि चहुं जाई।।
शंकर त्याग नुराग बदौलत। आपुहि सकल दोष जरि खौलत।।
ता सन्ताप दुरावत रहहीं। सृजत सृष्टि यथा अनुसरहीं।।
जयति मृत्युंजय उमा भवानी। जग जुड़वावत आपुन्ह खानी।।

नमः शिवाय

महामृत्युंजय भगवान शिव

हौं जूँ सः। भूर्भुवः स्वः।
त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिंपुष्टिवर्धनम्।
उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।
स्वः भुवः भूः । सः जूँ हौं ।
यह सम्पुटयुक्त महामृत्युंजय मंत्र है।

भले शंभु संघात्मक, पर एकातम आत्म।
सो आपन धन दान करि, तौ कहाउ परमात्म।।44।।

जयति जयति शंकर त्रिपुरारी। सृष्टीकारक भजन बिहारी।।
बनेव दिगम्बर औढर दानी। विद्यामय जो विधि अनजानी।।
विश्व वस्तु परि पावक मांही। बनत भसम शिव रुचि बड़ तांही।।
नहि बनु भसम तत्व परिवर्तन। आदि अन्त तामे दोउ दर्शन।।
रूप रंग तिम जिम श्वेताई। ताते करु महेश प्रीताई।।
भसम नाहि तेहि आपु समाना। मानि लपेटहिं पुरुष पुराना।।
सुर जन जीवन मुकुति सहारा। शंकर जटा जूट शिर बारा।।
जेतिक वायु रूप जग मांही। पावहिं प्राण जटा शिव छांही।।
शिवम जटा गुण परम अखण्डा। ताते अनुबन्धित ब्रह्माण्डा।।
पायेउ व्योमकेश निज नामा। कह विधि वन्दउं करउं प्रनामा।।
शीश अंग धारा जल गंगा। जोरहिं तीनउ पुर प्रसंगा।।
शैल नाहि जन्मी शिव शीशे। पर करु पावन चलि चहुं दीशे।।
सुधा तत्व शंकर शिर कारन। व्यापि बहत गंगा मजधारन।।
भव सरिता तहं गंग समाना। नाहि कहूं केऊ विश्व बखाना।।
शंभु शीश शशि सत सुखदाई। रहत अदृश्य दिनेश सहाई।।
परम मनोहर प्रिय संस्कारी। शान्ति सोम बल भुवन पसारी।।
नयन युगल भल एक न सोहे। जेहि त्रय नयन ताहि जग मोहे।।
नाशक सकल दोष दुख हानी। नयन तीन पन प्रद गुण खानी।।
होहि भुजंग योगि अनुसारे। शिव समाधि महं करहिं सहारे।।
नाशि अमंगल मंगल देहीं। भूषण रूप सुहावत तेहीं।।
सब गुण सोह नागपति साथा। रखु मारण उत्पादन हाथा।।
सर्प लपेटन चाल विलोके। सिखेउ भानु फेरी सब लोके।।

महाभयानक काल सम, शंकर संग त्रिशूल।
प्रगटावत गुण तीन सो, कार्य सूक्ष्म स्थूल।।45।।

वैरागीपन तीनउ नाता। शिव ते जोड़त भाखु विधाता।।
शंकर ध्यान समाधि अनोखी। सो काहू ते जाइ न जोखी।।
जब जब शंकर लेहिं समाधी। भागइ लोक व्यथा सब ब्याधी।।
शिव समाधि मंतर जे साधिय। तासु कलह कलि आपुइ भागिय।।
आसन वाहन वृषभ प्रकारा। सो करि कलह अगुन दुख छारा।।
हरत अराजकता भय लाई। कुमति दुराइ सुमति पकराई।।
बेश अमंगल रूप अरूपा। धारि लेत शिव मंगल भूपा।।
तेहि विधि बनै लोक हित ढेरा। करहिं महेश सोई विधि हेरा।।

देइ सकल जग जाहि बेराई। ताहि महेश मांनु निज नांई।।
जिते न कोऊ छीनइ ताहू। रचिय महेश करहिं नव वाहू।।
तिते बनइ सो लोक पियारू। पालु उमापति अस संसारू।।
दीन मलीन दुखी जन रोगी। शिव सिरजहिं सब योगी भोगी।।
सर्वेश्वर शंकर त्रिपुरारी। देव दनुज नर मुनि हितकारी।।
सुलभ न सुख कोउ बिनु शिव शरने। वेद शास्त्र ऋषि गण सुर बरने।।
कलि हर शिवम भगति प्रभुताई। आज नाहि कल आवइ धाई।।

सतयुग ध्यान प्रभावते, त्रेता यज्ञ नुष्ठान।
द्वापर पूजा पाठ ते, कलयुग तप शिव गान।।46।।

कलयुग शठ गुण अति अधमाई। दया धरम नहि आन भलाई।।
महाकाल अस काल विलोके। सहित शिवा विचरहिं भव लोके।।
आपुहि पूंछि दोष दुख त्राता। नाशहि तेस जेस भव पितु माता।।
पावन करहिं खोइ दुख काया। वर बल परसि विविध भव माया।।
मुदित सभा सुर सुनहिं एकागे। उपजइ अन्तर शिव अनुरागे।।
धाम हिमे बहहीं निशि बारी। शीतल मन्द सुगंध बयारी।।
खोलि किंवारी ज्ञान द्वार के। पियहिं सुधा रस चूप मार के।।
कहत शिवम कथ विधि मुख चारी। हिम थल लोक ऋषी अनुहारी।।
करहिं श्रवन सुर मानव नांई। शिवम शिवा महिमा प्रभुताई।।
सीख देत विधि जगती हीता। जेस जग विरचन पल शिव प्रीता।।
विधि हरि देव ऋषी जन सबहूं। सुनत सबै जेस सुना न कबहूं।।
कलि नाशन विधि परु जेहि श्रवने। तबहिं ते सुनिय सदा मन मगने।।
हेतु मनुजता देव दुखारी। इते सभा हिम रचु सत वारी।।
पावइ मनुज सहज हित आपन। करन्ह कलिक दुख दोष निपातन।।
सोई कथा विधाता भाखिय। देवि देव विष्णु करि साखिय।।
चारिउ मुखे वेद रचनाई। करि जेस ब्रह्मा तेस इहि गाई।।
परसन नव युग अमृत राशन। विधना नाता जोड़ु सभा सन।।
वन्दत शंकर नाम अनेका। सोहत शिवा नाइ शिर तेका।।
जयति जयति जगदम्ब भवानी। करहु कृपा हरु मनुज नदानी।।
सुध घट शंभु उड़ेलहिं आपू। मातु बनहु तुम सरित प्रतापू।।
तुम माया फेरहु अस माया। सुरता उतरइ भव जन काया।।

शिवा चरन चित लाइ विधि, कीन विनय इहि ढंग।
सुनन्ह चहत माता मुखे, कुछ महिमा प्रसंग।।47।।
पूत भांति विधि मानि के, जननी वचन उचारू।
सुनि सब उर शक्ती जगिय सुरता पाउ उभारू।।48।।

परं ब्रह्म परं ज्योतिः प्रणवद्वन्द्वरूपिणी।
अहमेवास्मि सकलं मदन्यो नास्ति कश्चन ।।1।।
निराकारापि साकारा सर्वतत्वस्वरूपिणी।
अप्रतर्क्यगुणा नित्या कार्यकारणरूपिणी।।2।।
कदापिछयिताकारा कदाचित्पुरुषाकृतिः।
कदाचिदुभयाकारा सर्वकाराहमीश्वरी।।3।।
विरंचिः सृष्टिकर्त्ताहं जग(ाताहमच्युतः।
रुद्रः संहारकर्त्ताहं सर्वविश्वविमोहिनी।।4।।
कालिकाकामलावाणीमुखाः सर्वा हि शक्तयः।
मदंशादेव संजातास्तथेमाः सकलाः कलाः ।।5।।
मत्प्रभावाज्जिताः सर्वे युष्माभिर्दितिनन्दनाः।
तामविज्ञाय मां यूथं वृथा सर्वेशमानिनः।।6।।
यथा दारुमयीं योषां वर्तयत्यैन्द्रजालिकः।
तथैव सर्वभूतानि नर्तयाम्यहमीश्वरी।।7।।
मन्याद् वाति पवनः सर्वंदहति हव्यभुक्।
लोकपालाः प्रकुर्वन्ति स्वस्वकर्माण्यनारतम् ।।8।।
कदाचिच्छेववर्गाणां कदाचिच्छितिजन्मनाम्।
करोमि विजयं सम्यक् स्वतंत्रा निजलीलया ।।9।।
अविनाशि परं धाम मायातीतं परात्परम्।
श्रुतयो वर्णयन्ते यत्तद्रूपं तु ममैव हि।।10।।
सगुणं निर्गुणं चेति मद्रूपं द्विविधंमतम्।
मायाशबलितं चैकं द्वितीयं तदनाश्रितम्।।11।।
एवं विज्ञाय मां देवाः स्वं स्वं गर्वं विहाय च।

कथानन्द सुरयोग बल, ब्रह्मानन्द स्वभाव।
कलि खोवन बल ऊगिगे, ऐसा व्यापु प्रभाव।।49।।
शक्ती प्रभुता देवि मुख, सुनि जे ते हरखान।
अन्तर प्रतिभा दीप्त बनु, पूर्ण मनोरथ ज्ञान।।50।।
सभा प्रयागे देव गण, करत नमन जयकार।
सुर समेत विधना करिय, देवी विनय अगार।।51।।

सच्चिदानन्द रूपिण्यै संसारयोनये नमः।
पंचड्डत्यविधाळयै ते भुवनेश्वर्यै नमो
न म : । । 1 । ।
देवि प्रपन्नार्ति हरे प्रसीद,
प्रसीद मातर्जगतोखिलस्य।
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं,
त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य।।2।।
आधारभूता जगतस्त्वमेव,
मही स्वरूपेण यतः स्थितासि।
अपां स्वरूपस्थितया त्वयैत,
दाप्यायते ड्डत्स्नमलंध्यवीर्ये।।3।।
त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्या,
विश्वस्यबीजं परपमासि माया।
सम्मोहितं देवि समस्तमेतत्,
त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्तिहेतुः।।4।।
विद्याः समस्तास्तव देवि भेदाः,
स्त्रियः समस्ताः सकला जगत्सु।
त्वयैकया पूरितमम्बयैतत्,
का ते स्तुतिः स्तव्यपरा परोक्तिः।।5।।
रोगानशेषानपहंसि तुष्टा,
रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान्।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां,
त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति।।6।।
एतत्ड्डतं यत्कदनं त्वयाद्य,
धर्मद्विषां देवि महासुराणाम्।
रूपैरनेकैर्बहुधाऽऽत्ममूर्ति,
ड्डत्वाम्बिके तत्प्रकरोति कान्या।।7।।
विधासु शास्त्रेषु विवेकदीपे,
ष्वाद्येषु वाक्येषु च का त्वदन्या।
ममत्वगर्तेऽतिमहान्धकारे,
विभ्रामयत्येतदतीव विश्वम्।।8।।

रक्षांसि यत्रोग्रविषाश्च नागा,
यत्रारयो दस्युबलानि यत्र।
दावानलो यत्र तथाब्धिमध्ये,
तत्र स्थिता त्वं परिपासि विश्वम्।।9।।
विश्वेश्वरि त्वं परिपासि विश्वं,
विश्वात्मिका धारयसीति विश्वम्।
विश्वेशवन्द्या भवती भवन्ति,
विश्वाश्रया ये त्वयि भक्तिनम्राः।।10।।
देवि प्रसीद परिपालयनोऽरिभीते,
नित्यं यथासुरवधादधुनैव सद्यः।
पापानि सर्वजगतां प्रशमंनयाशु,
उत्पातपाकजनितांश्च महोपसर्गान्।।11।।
त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वं हि वषट्कारः स्वरात्मिका।
सुधा त्वमक्षरे नित्ये त्रिधा मात्रात्मिका स्थिता।।
अर्धमात्रास्थिता नित्या यानुच्चार्या विशेषतः।।12।।
त्वमेव सन्ध्या सावित्री त्वं देवि जननी परा।
त्वयैत(र्यते विश्वं त्वयैतत्सृज्यते जगत्।।13।।
त्वयैतत्पाल्यते देवि त्वमत्स्यन्ते च सर्वदा।
विसृष्टौ सृष्टिरूपा त्वं स्थिति रूपा च पालने।।14।।
तथा संहृतिरूपान्ते जगतोऽस्य जगन्मये।
महाविद्या महामाया महामेधा महास्तुतिः।।15।।
महामोहा च भवती महादेवी महासुरी।
प्रकृतिस्त्वं च सर्वस्य गुणत्रयविभावनी।।16।।
कालरात्रिर्महारात्रिर्मोहरात्रिश्च दारुणा।
त्वं श्रीस्त्वमीश्वरी त्वं ह्रीस्त्वं बुद्धिर्बोधलक्षणा।।17।।
प्रणतानां प्रसीद त्वं देवि विश्वार्तिहारिणि।
त्रैलोक्यवासिनामीड्ये लोकानां वरदा

देव सभा देवन्ह विनय, सुनिय जगत महतारि।
कर वर मुद्रा मुदित मन, पुनि निज वचन उचारि।।52।।
जब जब सुर गण विनय करि, तब तिन याहि बताव।
जब जे वन्दन मोर करु, तब ता विपति दुराव।।53।।
सुनहु तनय संशय तजहु, कलि अवतरण हमार।
भै गायत्री रूप महं, करन्ह कलिक संहार।।54।।
ह्रीं श्रीं क्लीं मेधा प्रभा, जीवन ज्योति प्रचण्ड।
शान्ति कान्ति जागृति प्रगति, रचना शक्ति अखण्ड।।55।।
प्रणवों सावित्री स्वधा, स्वाहा पूरण काम।
सकल अमंगल दोष हर, गायत्री सुख धाम।।56।।

भूर्भुवः स्वः ऊँ युत जननी। गायत्री नित कलि मल दहनी।।
अक्षर चौबिस परम पुनीता। इनमें बसैं शास्त्र श्रुति गीता।।
जेतिक मंत्र ब्रह्म प्रगटाहीं। महामंत्र सम कोउ जग नाही।।
शाश्वत सतोगुणी सतरूपा। सत्य सनातन सुधा अनूपा।।
लावत तीन देव उर मांही। तिते शक्ति सब करु प्रीताहू।।
सुर तरु रूप सुरन्ह सुख हेता। भुवन स्वर्ग प्रद विद्या खेता।।
ध्यान धरत पुलकित हिय होई। सुख उपजत कलि दुरमति खोई।।
पूरित सकल ज्ञान विज्ञाना। दूज न कोउ ब्रह्ममंत्र समाना।।
सुर सविता गायत्री माता। मंत्र रूप ते राखहिं नाता।।
दारिद दोष दुरावहिं पीरा। नाशै रोग विपति भव भीरा।।
भूत पिचास सबै भय खावैं। यम कै दूत निकट नहि आवैं।।
घर वर सुख प्रद लहैं कुमारी। विधवा रहै सत्य व्रत धारी।।
सन्तति हीन सुसन्तति पावै। राज धर्म संग मेल समावै।।
गृह क्लेश चित चिन्ता भारी। होइ दूरि मिलु स्वर्ग बयारी।।
बल बुद्धि विद्या शील स्वभाऊ। धन वैभव यश तेज उछाऊ।।
सकल बढ़ै उपजइ सुख नाना। वर गायत्री शिवा बखाना।।
अष्ट सिद्धि नव निधि की दाता। सब समर्थ गायत्री माता।।
ऋषि मुनि यती तपस्वी योगी। आरत अर्थी चिन्तित भोगी।।
जे गायत्री शरनेउ जावहिं। कलि हति सो वांछित फल पावहिं।।
वर मुद्रा मन भाव भवानी। सुरन्ह परोसि करिय वरदानी।।
कह गायत्री रूप हमारा। पाइ शरण करुं ताहि उबारा।।
महामृत्युंजय ते शिव भजही। महामंत्र शक्ती रखु संग ही।।
सो मोरे मन परम पियारू। सुरन्ह सभा अस शिवा उचारू।।

शक्ति साधना भाव सद्, सहित श्रद्धा चितलाउ।
आपुहि ता उर प्रविसि हम, करि मनसा सफलाउ।।57।।
मातृ शक्ति कोमल प्रबल, संग गुण प्रभुता ढेर।
निज सर्वस अर्पण करहिं, नाहि लगावहिं देर।।58।।
वायु वेग बल पाइ के, बरसु औ सूखे नीर।
तेस लय सृजन मोहं संग, सोहत ढंग समीर।।59।।
सुरन्ह समस्या पाइ हल, स्वर गुंजाइ जयकार।
पुनि विष्णु बोलेउ वचन, वन्दि शिवा त्रिपुरार।।60।।
जयति शिवा शिव विश्वपति, महिमा अपरम्पार।
तुम निद्रा शकती अतुल, सुर का हम विधि हार।।61।।
अउम् संग विंदु नाद मिलि, गढ़त ओउम कै रूप।
शिवम शकति बनि गढ़त तेहि, प्रद प्रकाश भव कूप।।62।।

ओ३म अक्षर महं शक्ति अकोती। भगती ज्ञान करम बल ज्योती।।
विश्व बीज सब तत्व समेटे। तीन देव प्रभुता तेहि पेटे।।
ओउम शिवम गुण सर्व समरथा। चन्द्र बिन्दु परसइ ब्रह्म अरथा।।
विन्दु तरे जोऊ चन्द्राकारा। तासु किनारन्ह विद्या धारा।।
ऊर्ध्व मध्य अध शुण्डे नोके। शक्ति तुम्हारि सबहि अवलोके।।
हरखहिं देव शिवम जेहि जापे। ग्रसइ न माया जरु भव पापे।।
से विनय शंभु नामावलि। सहज सरल जापे भागइ कलि।।
ओउम् अक्षर ओंकारा। ब्रह्म रूप हर ताहि उचारा।।
ओ३म ब्रह्म अक्षर भव लोके। शिवम शिवा प्रिय हरु सब शोके।।
सदाशिव आपु अनन्ता। श्री वत्सल शिव अनाद्य अन्ता।।
ओ३म शिवाय शिवा सहितम्। नित द्वैत अद्वैत स्वरूप शिवम्।।
अंग अनंग आनन्द अखण्डा। अति दयालु दानी अति दण्डा।।
अति दुखहर अति पावन कारी। अचल अकेल अमंगल हारी।।
अद्रि अक्षय अघृत अधकारी। अनिवर्चनीय आत्म अंगारी।।
अजमन आयु अगोच अनरथा। अखिल असंख्य अपरिमेय अरथा।।
अरिदम अधाक्षज अनपाक्षर। अत्रि अपानिधि अकम्पानुत्तर।।
अनघ अव्यक्ता ओज तेजधर। अष्टमूर्ति अविराम अचलेश्वर।।
अमृताश अमृतवपु अधनर। आश्रम अभव अमृत्यू हर हर।।
अतीन्द्रियो आत्रेय अनरथित। अलंकार अज्ञेय अकम्पित।।

अकरथ ओजस आतम मंगल। अविवेकत अपराजि अचंचल।।
अलखनिरजंन अन्तरजामी। अखिल अनादिय आदि अनामी।।
अतिथि अकालय आनन्दरासी। अंगिरा गुरु अघोर अविनाशी।।
अघ अमोघ हर अनुत्तमाना। अनिवृत अगुण आत्म अधिठाना।।
अनिरुद्धि अमृत शाश्वत साध्या। आध्यात्म अखिलेश असाध्या।।
अरथ अनर्थ आराग अभेदा। अबलोन्मत्त असुर अघ छेदा।।
अमहामाय अवाक अनामय। अर्थ विछंभु आलोक अमृतमय।।
अनादि मध्य निधन अविशिष्टा। अणु आतम अनचिन्त्य असृष्टा।।
अन्नमय अगस्त अकूरो अयमा। आश्रित योग अदीन अनियमा।।
अपरिछेद अधरम अघ हारी। आत्म ज्योति बल आदि बिहारी।।
अजित प्रिये अमृत अविकरता। अक्षु अजात् अरि अनेक कृता।।
अग्रह अकल्मष योनी भूता। हर अज्ञान अघोर अवधूता।।
अनुपम महिमा अनन्त दृष्टी। अग्र ओढरदानी सब सृष्टी।।
अहर्पती आम्नाय अलोभा। अर्थिगम्य आज्ञा अति शोभा।।
ईष्ट ईश गोमान गणेश्वर। गोप गहन ग्रीष्म गोपतीश्वर।।
गिरिरत ग्रहपति गुह गंभीरा। गीन जाप गायत्री हीरा।।
गुण गायत्री साधक उत्तम। गो सख गिरिजा माधव गुरुसम।।
गायत्री वल्लभ खटवांगी। खल कंटक गोविन्द गण संगी।।
गगन उग्र उत्तर उत्तारण। उन्मत वेश उषण गंगधारण।।
खग उदार कीरत उद्योगी। उन्नघ्र उपलव अति आरोगी।।
कृता कृतागम गुण गुणरासी। कंकणि कृतवासुकि कृत बासी।।
कृति कल्याण गिरीश कपाली। कवि कोदण्डी कर्त्ता व्याली।।
कारन कामदेव कम शासन। कामपाल हारी इक आसन।।
काल पक्ष कैलाश पतीश्वर। कलप विरीक्षे गिरि तनया वर।।
गुण नामा कल्याण सभोगी। कपिल कुमार कनक युग योगी।।
कर्णिकार प्रिय दक्ष किरीटी। कल्व केतु कृतज्ञ धूर जटी।।
करण कुमुद कालो जीवितन्ता। कल्प कपर्दी काल कामिकान्ता।।
कमलेक्षण कुशलागम बाला। भूषण भूषित काल कराला।।
कर्म सर्वकर जग अधिकारी। कर डमरू कड़ कड़ किलकारी।।
खण्ड परशु अप्रतिभाकृता। कैलाशे शिखरे मन तृप्ता।।
श्री कण्ठ शिव बन्धु कुबेरा। करे कमण्डल लै करि फेरा।।
ओं नमः शिवाय शिवा सहितम्। जय महादेव हर हर बम बम।।
चन्द्र दण्ड चिदानन्द चिरंतन। चन्द्रमौलि चन्द्रेश संजीवन।।
चतुरश्चतुर प्रीति चित वेशा। चतुर बाहु मुखचार महेशा।।

चतुर्वेद धर चल चतुभावा। चमक चतुष्पथ चरन सधावा।।
कुन्दभ छिन्न संशय जितकामा। जनक जगत गुरु कश्पय नामा।।
जगदादिज जनमादि जलेश्वर। जटिल जनन जन जय जिवितेश्वर।।
जनाध्यक्ष जतकण जगसिन्धू। जुष्य जटाधारी इक बन्धू।।
जप्य जनार्दन एक आतमा। जन्म मृत्यु ऋषि जगत गातमा।।
जन्माधिक प्रभु जगत विधायक। जगत हितैषी इक जग नायक।।
जट मुण्डी कुण्डल जगदीशा। जयति जरातिग जापक ईशा।।
दृढ़ गुण प्रज्ञालू जमदगिना। जग युग कारक जरादि शमना।।
तमिस्त्रहा तत्वविद तीरथ कर। तुम्बवीण तेजोमय द्युति धर।।
तार्क्ष्य तमोहर तीरथ नामा। तारक तीर्थ रूप नियतामा।।
तीर्थद तिग्मांशू तिथ दृश्या। तरस्वी तन्तुवर्धन तेजोस्या।।
तपस्वी तेजोराशि तपोधन। तारक तीरथ देव ताप तन।।
देवासुर आश्रयो देव मय। देव आत्मा जगती ईशय।।
देव देव दुर्वास दुराधर। दुर्गम दुर्ग दुराद दयाकर।।
दिव्य आयुध दुर्जय दण्डाता। रुचिरांगद धुर्यो धृति धाता।।
देवज्ञ देव देवेश दिवाकर। ज्योतिर्मय गुण ग्रहि नन्दीधर।।
दुहिण देव चिन्तक दिवनाथा। दुरति क्रमो दिव प्रिय जगनाथा।।
देवा देव आत्म दुरजेया। देवासिंह असुर सुर सेया।।
दुस्स दर्पहदर्पद दक्षारी। दुष्कृतिहा न्यायी धन बारी।।
दिवपति दण्डी दान्त देवेश्वर। दम्भ देव देवासुर दुख हर।।
देवासुर नम देव सुरेश्वर। दूर श्रवा ध्येइ दुख सपनन्तर।।
देव असुर महमित्र देव धन। देवासुर पालक दाता बन।।
देवासुर धाता वर दन्या। देवासुर गुरु देवत्व धन्या।।
दीर्घतपा दुर्लभ दुरबासा। देव धनाधिप जग प्रकाशा।।
ओउम नमः शिवाय शिवा सहितम्। जय भोले लहरी कृतनन्दम्।।
धुर्जुटि दक्षिणनिल धात्रीशा। असुर ब्याघ्र तत्वम सुर ईशा।।
धेनु धरम धव ध्वनि धमचारी। ध्रुवोऽध्रुव धरा धन धारी।।
धरम पुंज धीमान धनुषधर। धन्वी धरम धाम ध्यानावर।।
धनुर्वेद धामक धतनामा। धर्मग साधन धर्म प्रनामा।।
निराकार निर्वार नाथ जग। नर नारायण नित प्रिय निर्मग।।
नन्दीधर नर्तक निलकण्ठा। नील निधी नित नृत उत्कण्ठा।।
निदाधस्तपन निरहंकारा। नाना भुत रत नागन हारा।।
नमो योनि नन्दी नितमाना। नेक करम कृत नित कल्याना।।
नित्य निमार नृसिंह निरतंका। न्याय निमाय निले निष्कलंका।।

निरावरण निरव्याज नभस्था। निष्कंटक नागेश समरथा।।
नाथ निरंज निपातन नंगा। निःशल्य निःश्रेयद निर्व्यंगा।।
नन्दि नभोगति नील लोहितन। नर देवो निर्लेप नगो सन।।
नियताश्रया नगन व्रत धारी। नन्दीश्वर नन्दी असवारी।।
निष्परपंच आत्मा नित लय। निरवद्यमायोपाय निरामय।।
नम्र स्वभाव नंघावत सबका। नभ मणि रूप भगत भव नवका।।
निरोपद्रव सतशुभो नक्षत्रन। आत्म अनेक निरंकुश नव तन।।
न्यायी नाथ नाव नभ नगरी। शान्ति परायण जर तन पकरी।।
ओउम नमः शिवाय शिवा सहितम्। जय शिव शंकर जय तत्पुरुषम्।।
परम ब्रह्म प्रभुवर परमेश्वर। पूर्णमदः पूर्णात पुरेश्वर।।
पूर्णमिदं पूर्ण मेवाव शिष्यते। पुर्णमादाय पूर्ण मुद उच्यते।।
पूर्णस्य पूर्ण पुरयिता पुरुश्रुत। पिंगल परार्थ पुलस्य पुरूहुत।।
पद्मगरभ पावन पुण्य दर्शन। प्रसन्नात्मा प्रकट प्रति मन।।
प्रभव प्रभाकर परविन मउती। परशर प्रांशु पुलह पर ज्योती।।
पंच यज्ञ परतप उत्पत्ती। श्रवन कीर्तन पुत दत भित्ती।।
पारम्पर्य पापहा फल प्रद। पूरण कीर्ति प्रशातन शुभ सद।।
पावन पाप पछारी बहुश्रुत। पाण्डुराम परकायैक पंडित।।
प्रीतिमान प्रणव पद्मासन। पिंगलाक्ष प्रितिवर्धन पासन।।
परावरज्ञ परावर मुनीश्वर। पागि पिनाक प्रभु शशिशेखर।।
पुराणाय पौराण परंजय। पुष्कल परमेष्ठीन पुरंजय।।
पूत मूर्ति प्रकाश नभस्था। परमारथ गुरुता मध्यस्था।।
पुरुष पिनाकी परिवृढ़ पशुपति। पुष्कर परश्वधि महस्वन मृगपति।।
परमारथ प्रिय पटु पुष्पांखन। परंतपो मृदुल पुर शासन।।
परमातम प्रियभक्त पुरातन। ब्रह्म परम ब्रह्म सृक प्रधानन।।
पारिजात प्रछन प्रेतचारी। पंच विशति तत्वज्ञ भुतधारी।।
पिरोमाय पितु प्रमाणभूता। आत्म प्रकाशी मंगल कूता।।
परम प्रमाण प्रधान पाप हर। प्रणव आत्मक प्राण पुरन्दर।।
प्राण प्रतिष्ठिति रह अधनंगन। पांच जन्य प्रमाण प्रभंजन।।
परात्पर प्रभु प्राण प्रमाना। परम प्रानधर पंथ पुराना।।
ओउम् नमः शिवाय शिवा सहितम्। जय वाम देव सद्योजातम्।।
भसम भगत भोला भण्डारी। भांग भगत भगतन भव पारी।।
भगवन भवन्नाथ भू देवा। भगत वश्य नाही करु भेवा।।
भस्माधूलित भगत लोक धृक। भूत भव्य भृत्यमर्कट तन दृक।।
भसम प्रीति भेजनम् भूत कृत। भोक्ता भिषगनुत्तम भगनेतभित।।

भाजिष्णु भस्माधर भुत वाहन। भसम शयन भूपति भुत भावन।।
भूत पाल भूशय भुत नाशन। भक्तिकाय भूषन भुत साथन।।
भूति भगोविनस्वाना दिव्या। भानु भूर्भुव लक्ष्मी सित्या।।
भीमकाय भालो त्रय नयना। भव भूतेश्वर इश त्रय भवना।।
भीम पराक्रम विग्रह धनागम। सत्य परायण स्नेह कृतागम।।
महा तपस्वी महेश सत्यम। महातेज मंगल मह मंत्रम।।
महादेव महनिधि महमाना। मघवन कौशिक भूत समाना।।
महर्षि महिमा कपिलाचार्या। मध्य महोत्साह सर्वाचार्या।।
महाशक्ति मह बुद्धि महाबल। महाह्रदय योगी महरेतल।।
मानस गोचर मृडनट महधन। महानाद मृड मह वृषवाहन।।
मणिपुर माता महा मनोजव। महावीर्य मय मह औषध लव।।
मृगा बाण अरपण मृग ब्याधा। महामाय मेघाम अगाधा।।
मस्त्र द्वेषि महद्युति महाकर्त्ता। कोश महान चाप महि भर्त्ता।।
महाकोप मय मधुर मान धन। मधुर महेश्वर मन आनन्दन।।
महाज्योतिमय महा स्वरूपा। महाकाल मह गर्भ मभूपा।।
महेष्वास महायश त्यागी। महाकल्प स्तोत विरागी।।
मातरिश्वा नभ स्वान महाभुज। मनोबुधिरहंकार महाद्विज।।
माथ महामति प्रज्ञा स्वामी। मनमंगल मायापति नामी।।
ओउम् नमः शिवाय शिवा सहितम्। तत्सत् हरि ओउम् पुरुषपुरुषम्।।
योगि योगेश्वर योग विहारी। युगादि कर्त्ता युग चक चारी।।
युक्तिरुनतकिर्ति योगी रक्षक। रजनीकश्चारू रवि अक्षक।।
योगी विदोगी योग पार रह। यज्ञ स्वरूपो श्रेष्ठ युगावह।।
ज्ञानस्कन्द महामित त्र्यक्षा। त्रयविद्या विज्ञ नयनाध्यक्षा।।
ह्रतपुण्डरीकमासि त्रिलोकप। क्षेत्रज्ञ क्षेत्रपाल त्रिदशाधिप।।
हीन दोष हर हस गति रोचक। हव्यवह तनून पात त्र्यम्बक।।
हिरण्य वरण ज्योतिष्व अनूपा। रबी त्रिलोक हिरण्य गभ रूपा।।
रस रस रूप रसज्ञ रुचिरांगद। रुद्र रिपु जिव हर भव्या सद।।
रुचि रचनाकर भुत व्यगनाशन। ज्ञान त्रिवर्ग स्वर्गमय साधन।।
लोक सांर्गहर लोकु वर्गोत्तम। क्षाम क्षपण हर क्षमादि क्षत्रम।।
लोक गूढ़ लुक लावण्य कर्त्ता। लोक बन्धु यश लुकपति भर्त्ता।।
लोक नाथ त्रिलोचन धारी। लोक पाल लोकन्ह दुख हारी।।
लोक वीर अग्रणी लोकचर। त्रिपुरारी स्फुट लोकोत्तर।।
लोक शल्य धृक रसद यशोधन। लोहित आतम रसप्रिय त्रय तन।।
लोकागुवा दृढ़ी लिंगध्यक्षा। लोक सुखोघर योगाध्यक्षा।।

लोक हिरण्य रेतालू हव्या। देव दमयिता न्याय सगम्या।।
हिरण्य हिरण्ये कवच त्रिशूला। अक्ष ललाटो मंगल मूला।।
ओउम् नमः शिवाय शिवा सहितम्। शिव शुभ रूप अकेलू अजनम्।।
शिव जन सुखद सुशान्त सतोतन। शमशानी सब सिद्ध सुलभोमन।।
सब दर्शन श्रीमान मनोगति। सार सदाशिव शम्बर सुधपति।।
स्वर्ग बन्धु वन्दारू वन्दित। सुखद लोक सब सूक्ष्म शत्रुजित।।
सत्य सतोगति सद सुखदानी। सब संगति सब ढंग सुहानी।।
स्थ विरोध्रुव सौम्य सनातन। सोम शुद्धातम सूर्य सतापन।।
सुभग शान्त सबशोधन शंकर। सारससप्लव सारो हर हर।।
सुभन सुकीर्ति साध्य सदचारा। सर्व शंभु साधू सुतकारा।।
सब संसार चक्र वृत साधन। सुमशिपिविष्ट सुरो पुर शासन।।
सर्ग शाख सम्भाव्य सुशरणा। शूर सुनीति समाधिय सगणा।।
सर्वावास सुब्रह्मण्य शिवालय। ससि सर्वेश्वर शमशानालय।।
सथिर स्थपति सतपथ चारा। शमशानस्थ रूप शिशु वारा।।
सर्व प्राण सम्बादि सुबीरा। शनि सबकर्मालयो सुधीरा।।
सर्वायुध सुरमित्र स्वभावन। संभव सर्वाषी सब भावन।।
सर्वग सार सुकीर्ति संदोहा। शुचि उत्तम स्कन्ध गुरु सोहा।।
स्वस्ति शरोहत प्रतापवाना। शक्र प्रमाथी सब श्रुति माना।।
स्थाविष्ठ सोऽहं सम्वत्सर। स्थानद स्पष्ट सबाक्षर।।
शुद्ध विग्रहा सुतंतु सुखारी। सुपरण समावर्त शुभ धारी।।
शिखि सारथि सकले सचराचर। सदमति स्वसित कृते सब गोचर।।
सात्विक सत्य कीर्ति श्रीमाना। सत्य पराक्रम समरथवाना।।
शैल सुरभि शिशिरात्य सुरेशा। सर्वलोक धृक सुमत सुबेशा।।
स्वधृत सर्वतत्व सत्त्व वाहन। सूकर सुमुख सत्य व्रत साधन।।
स्वयं ज्योति भव ज्योति सुखानिल। सकलोनिषकल सृष्टा ज्योतिल।।
सब प्रर्वतक स्वरमय महस्वन। सर्वशरण सत्यवान सशस्त्रन।।
शिवम सदा रत सन्मय सविता। श्रुति प्रकाश योनि शुचि स्मिता।।
साम्नाय सब बंध विमोचन। स्तव प्रिय सब सत्वावलम्बन।।
सकलागम पराग समयोगी। सम सिद्ध शुभद नाम सद्योगी।।
ओउम् नमः शिवाय शिवा सहितम्। जय साम्ब सदाशिव सत सत्यम्।।
शरण्य शर्बरीपति सनुरागा। स्तुतिस्तव्य शाक्ल सुभागा।।
शास्ता बैव स्वतो यम लोचन। स्निग्ध परकृति दक्षि सिद्धोतन।।
स्वाधिष्ठान पदाश्रय स्वक्षा। शुद्धि सज्जाती सुर अध्यक्षा।।
सर्व देव उत्तम सुकुमारा। साम सुप्रीति स्वर्ग स्वर द्वारा।।

शिख श्री पर्वत प्रिय सबबासी। सद्योनी सिद्ध खंग प्रिय काशी।।
सहस्त्रबाहु स्वधर्म शबद पति। शक्र शान्त शुभ स्वयं सतांगति।।
सोमय सूक्षम शुभद सुकर्त्ता। सर्वो शस्त्र भृतावर अकर्त्ता।।
सहस्त्रार्चि सब भूत महेश्वर। साक्षि प्रतीकन सुव्रत सुधर।।
सहसजीत शत्रुता न सबसे। शुचि सुन्दर सौभागि सुवर से।।
साम्ब सदाशिव शान्त सुभद्रा। शंभु सदाशिव कर वर मुद्रा।।
सुमति शब्द ब्रह्म सदा ध्यान रत। शत्रुहती शोकारि स्वर्गगत।।
संग्रही शिखण्डी कवची शूली। सहसमूर्द्धा सत मद झूली।।
शिष्ट इष्ट शिव सर्वस सिधिदा। सूनिष्पक्ष सुषेण सुस्सुविधा।।
विश्वम विश्वगात विश्वभूषन। वगिस वेदान्ता विश्वोदीपन।।
विश्वमूर्ति ब्रह्मा विजितात्मा। वामदेव वर्णी विनीतात्मा।।
ब्रह्म वेद निधि वित्त विरेश्वर। बधिर विराट बाघचर्मेश्वर।।
वेद शास्त्र तत्वज्ञ विधि ज्ञाता। बालाखिल्य सुबाल विशाखा।।
विश्वगर्भ बहु रूप विशारद। विश्वरूप वृषांक वेद सद।।
विद्येश विद्रुम छबि विरुपाक्षा। वसु वसुमना विरक्त विश्वाक्षा।।
ओउम् नमः शिवाय शिवा सहितम्। जय रामेश्वरं जय केतारम्।।
व्याप्ति वायु वाहन विश्वकर्त्ता। ब्राह्मण विश्ववेश विश्व भर्त्ता।।
ब्रह्मगर्भ विमलोदय वत्सल। वेद पिरंचि विशारद वविमल।।
बलनिधि विश्व संश्रय वर वाहन। बुधि व्यवसाय व्याल कल्पावन।।
वीर भद्र व्यवस्थान विगत ज्वर। ब्रह्म ज्योति विभु विश्वम्भरेश्वर।।
वरद विचक्षण विरुप विधाता। विश्व वाहन वर्णाश्रम दाता।।
वृत्तिर्वरद वसु प्रद वसु रेता। ब्रह्मवर्चस्व वसुधामस वेत्ता।।
विरद विरागा विद्या रासी। विकरान्ता विद्वत्व विकासी।।
विश्वगोप्ता विज्ञ विरोचन। वीर्यवान विष्णु कंध पोतन।।
वीर चुड़ामणि वय बघलोचन। वैरंच्य वाचस्पति विश्व भोजन।।
विश्व उत्पात्ती विश्व वीरोसन। विश्वावास वृषाक विमोचन।।
विधि विवुधाग्र सेतु विष्माक्षा। वयधु विशोकन्ह विशालाक्षा।।
विष्णु वीतभय विधेयात्मा। वर गुण बनदो वियोगात्मा।।
वृहदगर्भ वीकोविद व्यासा। ब्रह्मचारी वरशील वियासा।।
वृहदश्व वेगिपलोन सुमंगल। वरह श्रृंग धुकछृंगी विश्रृंखल।।
वशिष्ठ विश्वमित विष्ठरश्रवा। माधु बसन्त विद्वो वसुश्रवा।।
वज्र हस्त बड़ वाणाध्यक्षा। ब्राह्मण वेधा विश्व अध्यक्षा।।
वाहन बीज रूप वृषवर्धन। विगल विनोमुनि ब्याजूमर्दन।।
वरेण्य विक्रम वसुधागालव। ब्राह्म व्युढोरसको त्रय गातव।।

विशिख सतोकृति सकलाधारा। विश्वत सम्वृत्त सबहक सारा।।
ओउम् नमः शिवाय शिवा सहितम्। वन्दउ लै दारा वंश सुतम्।।
सहसनाम स्तुति करिय, विष्णु शीश नवाइ।
सुनिय शिवा शिव मुदभये, पुनि महिमा हरि गाइ।।63।।
राखिय अन्तर बड़ अनुरागे। महिमा नाम कहन्ह हरि लागे।।
नाम शिवा शिव सुधा रसायन। मनोरोग हर दोष पलायन।।
गाथा नाम सतत जहं होई। भागु कलह कलि अवगुण रोई।।
सकल मनोरथ पूरण बनहीं। मुक्ति मिलै संशय न पनपहीं।।
सुपथ सुचारी सदबुधि धारी। मिलहिं सुसन्तति सत व्रत नारी।।
होइ लोक प्रिय पर उपकारी। दानी बनइ भांति त्रिपुरारी।।
रहहीं दसो छिद्र अनुकूले। बैन मृदुल बनु हरु पर शूले।।
बुधि विद्या व्यापइ परिवारे। जाहि हेतु तप करि संसारे।।
परहित मीठ बयन उर ओमे। शिवम् शिवा परसहिं बल सोमे।।
जहां करै शिव शक्ति बसेरा। तहं ते जाइ उजरि कलि डेरा।।
अज्ञ विज्ञ सब लह सफलाई। शिवम नाम भजि छबि चितलाई।।
विधि हरि देव सकल मुनिराया। जयति शिवाशिव ध्वनि उपजाया।।
सुमन वृष्टि कर आरति लाये। उपजु भाव जेस सुधा नहाये।।
जेस आपन खोवा सब पाये। सुर नर संगम जय शिव गाये।।
देखि महेश श्रद्धा पहिचानी। देन भाव लै कह मृदु बानी।।
कराशीश परसत शिवम, बोले इहि प्रकार।
सबै मनोरथ सफल बनु, आपु भगति अनुसार।।64।।
मोहुं शकति संग नमत जे, तेहि जानउं निज नाइ।
करन्ह कृपा तापर कबहुं, मन नाही अलसाइ।।65।।
करि कृपा शिव सभा निहारे। मानि लोक हित वचन उचारे।।
सुख दुख रूप व्यापु संसारे। सुविधा बाधा कार्य मझारे।।
भोग भावना जिव उर धारे। कर्म विरांचइ फल प्रकारे।।
बीज रूप फल गहि जग रोवा। नाम कथा मम करु सो धोवा।।
जे करु आपन भूल पखारन। मानि भगति ता सुनिय गुहारन।।
भावत चलन्ह सुपथ वसुधामा। करु जे नाम जाप प्रनामा।।
परम अलौकिक सृष्टि कहानी। इहि ता कथन करन्ह भल मानी।।
सृष्टि रूप जड़ प्रलय रूपा। महाघोर तम विकट अनूपा।।
सांय सांय अनथिर हलचाला। आदि न अन्त असूझ विशाला।।
तत्व न शब्द न ज्ञान विज्ञाना। रूप न आत्म न जीव प्रमाना।।

काल कराल करोड़ प्रकारा। ब्रह्मलीन सो ढंग अंधकारा।।
रहे न रवि शशि धरनी नीरा। बहहिं चूर बनि तमेउ समीरा।।
तम भट्टी महं खौलत सबहूं। तलक ज्योति सत बिना रूपहूं।।
सकी नाहि लहि मम प्रभुताई। जब लौं प्रलय अवधि सबलाई।।
प्रलय अंधकासुर उतपाते। विविध भांति हम सहि ता घाते।।
सहित शक्ति हम करि संघर्षा। भयउ सफल विगते दिन अरसा।।
सो विपदा नहि जाति भुलाई। सुनहु सफलता हम जेस पाई।।
जप तप ध्यान योग बलबूते। शक्ति साधना करि मजबूते।।
प्रलय थपेड़ा सहत अपारा। लाग रहेन न मिलत किनारा।।
बीते कछुक काल इहि ढंगा। भा थिर आसन योग प्रसंगा।।
गयउ प्रलय बंधि शक्ति चंगुलेउ। बनु प्रलय माया बल पंगुलेउ।।
बीज योग शक्ती प्रभुताई। प्रबल प्रलय पर शासन पाई।।
सथिर प्रलय बनु पर अंधकारा। आपु शकति मन इहै विचारा।।
अर्जित करिय प्रथम ज्योताई। ताहि वृते रहि कुछ सुख पाई।।
तिमे विचरु हम बचपन भांती। विकसन भाव उभरु बनि थाती।।
कह शिव रोध कीन प्रति घाता। दूज करन्ह सृष्टी हित बाता।।
तब संकल्प कीन्ह मन मांही। सहित शिवा प्रलय प्रति छांही।।
सर्व प्रकाशक सर्वस व्यापी। सबगुण ते सम्पन्न प्रतापी।।
सर्वज्ञ चार भुजा तन धारी। उपमा नाहि ताहि अनुहारी।।
सकै जौन करि जग रचनाई। शिवम मने अस मूर्ति बनाई।।
ज्योति वृत निवसत हम दोऊ। शक्ति मोर हित साध संजोऊ।।
सोचु सबै जेस आज विकासा। तानुसार रह मम प्रयासा।।
भा मन विरचउं दूज स्वरूपा। सृष्टि विरांचि बनै सोई भूपा।।
हम परोक्ष करि ता रखवारी। लै सृजन बनि लय संहारी।।
इहि विधि आपु बनेउ साकारा। करि बल शक्ति विष्णु निरमारा।।
निज नायक नांई तेहि मानिय। करि सहयोग जौ संकट जानिय।।

कह शिव विचरत ज्योति वन, हम शक्ती लै संग।
शक्ति ज्योति बल दृष्टि लै, मलेउ स्व वामू अंग।।66।।
देखउं सन्मुख ठाढ़ मिलु, पुरुष अनूपम एक।
कान्तिमान शोभाय रह, ताके अंग प्रत्येक।।67।।
रूप रंग प्रिय चारि भुज, तन पीताम्बर सोह।
शीश मुकुट मणि शान्त मन, दीखु जे ता मन मोह।।68।।

नयन कमल भुजदण्ड विशाला। दरसे लगइ जीति सकु काला।।
सन्मुख ठाढ़ भाव गंभीरे। मृदुल वचन बोला स्वर धीरे।।

काह बुलाउ देहु आदेशा। तन मन तत्पर करन्ह हमेशा।।
कह शिव गनि तेहि पूत समाना। मन मुस्कान हृदय सुख माना।।
कहेउं ताहि ते हम प्रिय बानी। व्यापक विश्व रूप तोहि जानी।।
वत्स नाम परु विष्णु तुम्हारे। हम तुम मंह तुम रूप हमारे।।
विरचन सृष्टि करहु तप जाई। देत तुमहिं इहि काज थमाई।।
श्वांस प्रश्वांस जाइ मिलि ज्ञाना। इहि परसहुं थाती वरदाना।।
सीमा ज्योति विष्णु भे बहिरे। जापहिं ध्याइ शिवाशिव अखरे।।
साधे करन्ह घोर तप रूपा। विरचन सृष्टि रूप भवकूपा।।
उतै शिवा शिव ज्योति मंझारे। बनिय सथिर तप बल चित धारे।।
करन्ह लगे निज ज्योति विकासन। करहिं शनै शन प्रलय निपातन।।
बाढ़िय ज्योति उपजु मन ज्ञाना। भावा करन्ह समय निरमाना।।
ज्योति पुंज रचु देव दिवाकर। शान्त भाव लय बनु निशि आकर।।
प्रगटा गगन पवन उतिराने। बले चारि पावक जन्माने।।
उत विष्णु तप करिय अपारा। तन ते उभरु अगन जल धारा।।
ब्रह्म रूप जल भव भय हारी। बनु जल सृष्टि न जाइ निहारी।।
सृष्टि तत्व शिव शिवा समेता। तम प्रकाश नभ दर्शन देता।।
अनल अनिल विष्णु भव पानी। फिरहिं परस्पर भांति मथानी।।
कह शिव बनु हम भांति कमोरी। रखु सब काबू महं बर जोरी।।
करि माया वश विष्णु शयना। बिगते ढेर काल दिन रयना।।
जागु न आपु जगावन वारा। बनै न कुछ व्यापित जल धारा।।
निज माया बल तहां पठायन। विष्णु नाभि कमल उपजायन।।
तासु नाल लम्बाइ अनन्ता। उपजा पुष्प पाइ जल अन्ता।।
अदभुद रूप शकति हितकारी। दिव्य मनोहर पीत नुहारी।।
कोटि भानु सम तिमे प्रकाशा। हिरण्यगर्भ ता नाम बकाशा।।
दिव्य वदन आनन रचि चारी। तिमेउ बाल ब्रह्मा निरमारी।।
जागु न विष्णु काल बहु बीते। भले कमल उपजा बनि हीते।।
उपजेउ नाभी सृष्टी ज्ञाना। जब हरि कमल प्रभा पहिचाना।।
कमल बीज ब्रह्म सम भव मांही। कह महेश सब संग सुहाहीं।।

कमल भवन स्थल जनम, विधि फिरहीं चहुंवार।
मिलत न आश्रय मातु पितु, बनहिं विकल लाचार।।69।।
सकत न ऊपर जाइ सो, अगल बगल जलधार।
जैसे बालक गर्भ महं, पउब सांस दुश्वार।।70।।
कमल नाल गहि तर चले, यदपि पाउ न अन्त।
फिरि आये पुनि कमल घर, भाव भजन भगवन्त।।71।।

कह महेश हम करि नभ बानी। करु तप ढेर आपु भल मानी।।
सुनि तप आयसु विश्व विधाता। वाणी मानि आपु पितु माता।।
जेस गर्भे शिशु ईश सुमिरहीं। मां पितु दरसन हेतु तरसहीं।।
तेस विधना तप कठिन संभारा। हेतू आपु विपति उद्धारा।।
चिन्ता करहिं सुनेउ नभ बानी। पाउ न दर्शन रहत गलानी।।
वाणी शक्ति स्वरूपा मानी। अजपा जप रहहीं ता ध्यानी।।
विष्णु नींद बनइ उत दूरी। भै इत विधि तप घड़ियां पूरी।।
नाभी नाल विष्णु जगि देखा। विस्मय उपजा मनहुं विशेखा।।
उठि अफनाइ नाल गहि धाये। देखा कमल बाल तप लाये।।
बाल विलोकिय विस्मय छावा। सोचु न जानु कहां सन आवा।।
विधि निहारि हरखेउ मन ढेरे। पाउ आपु सम हम बिनु हेरे।।
पाइ परस्पर आपु समाने। तदपि दोऊ मन शोक नशाने।।
पर विष्णु जांचे मन आपन। तौ पाये विधि ते बड़ता पन।।
लगे कहन्ह वर मांगु सहारा। देव अवसि लगु पूत प्रकारा।।
लागु न भल ब्रह्मा इनकारा। बात चीत बढ़ु बनु तकरारा।।
कह विधि श्रवन सुनेउ जो बानी। सो स्वर न लागइ तुम खानी।।
इहि ते मोहि नाहि परतीता। भले बनन्ह चाहत तुम हीता।।
बात अमेल परस्पर देखे। कह शिव माया करिय विशेखे।।
लिंगाकारा ज्योति अपारा। हम प्रगटाइ दीन्ह तेहि ठारा।।
सक्षम न दृष्टि विलोकन ताहू। भयो चकित विधि हरि लखि वाहू।।
दोऊ मन मद दोष दुराये। भा मन जेस मोहि भूल सताये।।
शक्ति कोउ प्रगटी इहि कारन। पंथ दिखावन रार बिगारन।।
सूझा मनेउ दोउ शिर नायउ। सूझ न आगु करन्ह कुछ आयउ।।
दोउ मन करन्ह लाग अन्वेषण। कवन वस्तु इहि रूप विशेषण।।
बुद्धि ओरानि मरम नहि जाना। ढूढ़न्ह अन्त दोउ अगुवाना।।
विधि ऊपर हरि नीचे ओरी। देखन्ह छोर चले बरसो री।।
अन्त न पाउ फिरेउ थल अपने। जहं ते कीन्ह रहे दोउ गमने।।

सुनहु सभा सुर शिव कहेउ, इहि विधि विष्णु दोउ।
सतत नमन वन्दन करिय, कई वर्ष दिन खोउ।।72।।

दीखहिं ज्योति और कुछ नाही। जाइ कहां दुज पंथ न पाही।।
भाव समर्पित वन्दन करहीं। ज्योति रूप मन चिन्तन धरहीं।।
जानन्ह ज्योति उपजि जिज्ञासा। मति अनुसार लगाइ प्रयासा।।
सकेउ न जानि खोउ मद आपन। बूझि शरण दुख करिय निपातन।।

जानि स्वपूतन बल बुद्धि हारा। करि परिवर्तन ज्योतीकारा।।
कम्पन बनेउ ओउम् दरसाई। ज्योति समस्त ओउम बनि आई।।
महानाद भा ओमाकारा। स्वयं व्यापु तहं विद्याचारा।।
ओउम् उचारण होवन लागा। श्रवन परेउ विधि हरि बल जागा।।
लीन्हेउ सकल तत्व थिरताई। व्यापिय सृष्टि शकति प्रभुताई।।
विधि विष्णु मन साहस आवा। हम का आपन बोध समावा।।
ओउम् नाद इहि ढंग निरन्तर। चलत रहा कुछ दिन पल अन्तर।।
शिक्षा सोई लोक हितकारी। गुण जेहि मा दुखिया दुखहारी।।
विधि हरि सकंट सकल दुराने। पर माया मन संशय साने।।
बूझन्ह देव शकति प्रभुताई। देखन्ह देव रूप ललचाई।।
कह बिनु रूप रंग छबि देखे। नाही नाथ बनत कछु लेखे।।
विधि हरि विनय ओउम स्वीकारा। प्रथम तिमे लेइ हम अवतारा।।

हम प्रगटेउ मुख पांच रचि, ओमाकारे मध्य।
विधि विष्णु मुद ढेर भे, पाइ रूप सानिध्य।।73।।

यदपि ओउम नाशक दुख पीरा। तिमे दीखु जे मोर शरीरा।।
परम सुभागी जाइ न तूला। बनु ता जीवन सुरता मूला।।
माथ ललाटे सोह अकारा। बीज योनि सम मांनु उकारा।।
गनु मकार आधार सभी के। आदि सृष्टि ते तलक अभी के।।
सहित भवानी रूप हमारा। विधि विष्णु मां पितु स्वीकारा।।
विष्णु वाम विधाता दायें। अंग बने हम तेहि समुझाये।।
नाम जन्म परिचय करवावा। दूज एक कर पकरि मिलावा।।
संशय शोक भूल हैरानी। दीन्ह दुराइअ भाखिय बानी।।
मुखे पंच हम विरचि प्रपंचा। सीख स्वरूप मंत्र देइ पंचा।।
ऊँ तत्वमसि महामंत्र बन। महामृत्युंजय पंचाक्षर पल।।
चिन्तामणि निज अन्तर लाइअ। सकउ सृष्टि गढ़ि सब बुधि पाइअ।।
ऋग्यजु साम शकति मन ठूंसे। नाना आकृति दृष्टि परुसे।।
रहब प्रणव महं आपु बतायन। अस पढ़ाइ लरिकाइं दुरायन।।
बल बुधि विद्या आपु विचारे। कै इन्ह मानेउ उत्तरधिकारे।।
तौ शिव सभा उभरु जिज्ञासा। अवलोकन चिर मूर्ति प्रकाशा।।
अन्तरयामी दीन दयाला। गयउ बूझि सुर भगतन हाला।।
सहित शिवा सो रूप संवारा। रह जो लीन प्रथम अवतारा।।
जयति जयति उपजिय सुरबानी। कह भै दया दयानिधि खानी।।
चरण शरण जे रह चितलाई। कह मिलु मुक्ति स्वर्ग सुख पाई।।
तुम विधि विष्णु धरायउ धीरा। तुम बिनु अब को हरु कलि पीरा।।

काम क्रोध मद लोभ तन, ब्रह्म यंत्र प्रकार।
लय उत्पत्ति दोऊ करहिं, निज बल बुधि आधार।।74।।
सुर नर दानव गात लगु, आपु सृष्टि संसार।
ज्ञान कर्म रुचि जासु जेस, फल मिलु तेहि प्रकार।।75।।

भयउं तृप्त प्रभु चिर छबि दरसिय। देहु गात यंत्रर सत सरसिय।।
नाथ दरस करि बनेउ सुभागी। कह आगिल कथ सुनन्ह नुरागी।।
कह महेश ध्यावइ जो मोहूं। तापर होति दया सब कोहूं।।
पुरुष पुरातन धर्म सनातन। माया मातन मानव गातन।।
निष्कल रूप अहउं अविनाशी। अगुण सगुण सब ढंग प्रबासी।।
लय उत्पत्ति पालक प्रति रूपा। सकल सृष्टि शिव शिवा स्वरूपा।।
ज्योति मर्म विधि विष्णु चिन्हाई। पुनि भविष्य गति काज बताई।।
सत्य रूप हम रहब अनन्ता। बनब सृष्टि हित रुद्र अगन्ता।।
रहब करत हम लय संहारा। वस्तु अकारथ मन हंकारा।।
पालक विष्णु विधि निर्माता। कह शिव सभा बीच अस बाता।।
शक्ति हमार प्रकृति स्वरूपा। बनु सो आगिल तन शतरूपा।।
रुद्र संग रह बनि रुद्रानी। ब्रह्मा संग वाक् ब्रह्मानी।।
विष्णु संग वैष्णवी रूपा। भव हित आपु बनै बहुरूपा।।
त्रय संग त्रय गुण त्रय निर्माना। त्रय तन त्रय ढंग भेद अमाना।।
त्रय अन्तर जे रखु तन अन्तर। पावहि दोष न बनु सिद्ध मंतर।।
रुद्र रूप गुण नीति स्वभाऊ। लाइ रचब सहयोग उपाऊ।।
इहि विधि त्रय तन भाखिय रिस्ता। देहि मिलाइ सो विधि हरि हस्ता।।
निज निज भार संभारहु अबहीं। चलि करु सृष्टि विरांचन सबहीं।।
हरन्ह कलह कलि रुद्राधारेउ। धरि सो महाकाल अवतारेउ।।
कहुं काली कहुं काल कराला। धरि धरि रूप हतइ कलिकाला।।
विद्या बाल युवा शुभ करनी। करु तीजे जे हित जग धरनी।।
तासु चौथ बीतइ सुख मांही। नाही कलि भय कुले नेराहीं।।

कह महेश विधि विष्णु कै, हतिय सकल संताप।
बुधि उपजिय लागे करन, विनय बूझि प्रताप।।76।।
लिंगाकारी ज्योति सो, आप रूप बिथरानि।
महि स्वरूप पुनि बनि चलिय, फिरु जल पर उतरानि।।77।।
निरनिमेष मोहि देखि रह, विधि विष्णु करि ध्यान।
दुखलय महि लै पाइ के, बोलेउ वन्दन बान।।78।।

महेशं सुरेशं सुरारार्ति नाशं,
विभुं विश्वनाथं विभूत्यंगभूषम्।
विरूपाक्षमिन्द्वर्कवह्निित्रनेत्रं,
सदानन्द मीडे प्रभुं पंचबक्त्रम्।।1।।
परात्मानमेकं जगद्बीजमाद्यं,
निरीहं निराकारमोंकारमेवम्।
यतो जायते पाल्यते येन विश्वं,
तमीशं भजे लीयते यत्र विश्वम्।।2।।
न भूमिर्न चापो न वह्निर्न वायु,
र्न चाकाश आस्ते न तन्द्रा न निद्रा।
न ग्रीष्मो न शीतो न देशो न वेशो,
न यस्यास्ति मूर्तिस्त्रिमूर्तिं तमीडे।।3।।
अजं शाश्वतं कारणं कारणानां,
शिवं केवलं भासकं भासकानाम्।
तुरीयं तमः पारमाद्यन्तहीनं,
प्रपद्ये परं पावनं द्वैतहीनम्।।4।।
नमस्ते नमस्ते विभो विश्वमूर्ते,
नमस्ते नमस्ते चिदानन्दमूर्ते।
नमस्ते नमस्ते तपोयोगगम्य,
नमस्ते नमस्ते श्रुतिज्ञानगम्यम्।।5।।

विधि विष्णु स्तुति करिय, मिलि स्वर आप मिलाइ।
सृष्टि हेतु चिन्तन करिय, शिव चरने चित लाइ।।79।।
लिंगार्चन लागे करन्ह, मनसा पूरक मानि।
सुरन्ह व्यथा भय दुख हरन, शिव प्रगटइ लिंगानि।।80।।

सुनि विधि विष्णु वचन विनीता। अन्तरध्यान बनेउ जगहीता।।
इत विधि विष्णु जीव रचाहीं। सचराचर जीवन जग मांही।।
पुनि महेश इत कह वच अपना। चलइ सभा गति रोध न कथना।।
सकै न जो दुख कोउ जग टारी। सुनि वन्दन हम देब निवारी।।
सुनि न हतउं जौ पर तन पीरा। तौ रहु पीड़ित मोर शरीरा।।
विधि विष्णु दीन्हेउ वर जैसे। गाये कथ परसब इहि वैसे।।

होइ कथा जे सुनु लवलेशा। देब न आवइ नेर कलेशा।।
पाउ बुद्धि बल सिद्धि सफलाई। मनसा पूरक कलिक नशाई।।
रहन्ह चहत इहि सूक्ष्म काया। गिरि कैलास थूल चह जाया।।
रहु सूक्षम बनि थूल समाना। आरति काल अवसरे ध्याना।।
सुनिय सभा अनप्रिय स्वीकारी। प्रद आश्वासन शिव त्रिपुरारी।।
भाखु सभा सुर भूलि न जाना। भोले भले इहां से जाना।।
ब्रह्मादिक शिव ओर निहारी। जोरि पानि मुख वचन उचारी।।
तुम समान को जग हितकारी। पालक पोषक भव भयहारी।।
सुर नर मुनि मन अन्तरयामी। जानत भाव दुरावहु खामी।।
वीणा धारी वीण बजाइअ। उपजा स्वर शिव श्रवन समाइअ।।
पुरवहु सकल मनोरथ मोरे। तुम बिन को विपदा भय छोरे।।
नाथ तुम्हारि कृपा प्रभुताई। गरल बनावति अमृत नांई।।
त्रिसुर सुनिय निज सूक्ष प्रभूता। सभा थापि करि कथ मजबूता।।

शक्ति समेतेउ देव त्रय, निज पुर चले तकाय।
होन कथा आदेश करि, तहं सूक्षम बैठाय।।81।।
सुमन वृष्टि पद नमन करि, सुर मुनि शीश नवाइ।
जयति शिवा शिव बोलि सब, गाइअ विनय विदाइ।।82।।
सहित शक्ति सुर तीन कै, वन्दन पूजन लाइ।
आमंत्रण मुनि सूत करि, शिवम कथा शुरुवाइ।।83।।

सुर मुनि सभा सोह हिम धामे। सबै करिय शिव शिवा प्रनामे।।
सक्षम करन्ह कलिक शमशाना। शिव पुराण सम न जग आना।।
शिव कथ महिमा सूत उचारी। कथा महातम भाखि अगारी।।
शिवम कथा जग दुर्लभ माही। सुनिय सकल भव दुर्लभ जाही।।
पुनि वन्दउं सारद सुर सरिता। युगल पुनीत मनोहर चरिता।।
कहत सुनत दोऊ अघ हारी। सृष्टि व्यवस्था कारक तारी।।
गुरु पितु मातु महेश भवानी। प्रनवउं ज्ञान ज्योति दिन दानी।।
कलि विलोकि जग हित हर गिरिजा। अन्तर ब्रह्म मंत्र बल सिरजा।।
अन्तर तासु प्रभाव प्रतापू। राखिय चूर करहि कलि आपू।।
सो उमेश बनि मोहि अनुकूले। कथन कथा रचि अवसर मूले।।
जे इहि कथहिं सनेह समेता। कहिहहिं सुनि हहिं समुझि सचेता।।
होइहहिं शिवम शिवा अनुरागी। कलिमल रहित सुमंगल भागी।।
सपनेउ सोचा होइ न झूंठा। सानुकूल बनहीं जग रूठा।।
शिव महिमा उपमा कछु नाही। पाउ जइस जे तथा सुनाहीं।।
ताहि विधाता जेहि विधि पाई। नारद जानि सो मोहि बताई।।

कहिहउं सोइ सम्वाद बखानी। सुनहु सकल सुरमुनि भल मानी।।
यदपि नाहि हम जानहु सबही। हेतु कथा हिय सभा विरचहीं।।
भले कथन कथ मिलु व्यासासन। पर न गनहुं श्रोता बुधि घाटन।।
राजत शौनकादि ऋषि जेते। कश्यप गौतम अत्रि समेते।।
परसुराम विश्वमित्र वशिष्ठा। चरकादिक त्रय युग ऋषि तिष्ठा।।
सुर परिवार सकल हिम बासी। आयउ सुनन्ह अमर कथ राशी।।
सुख परलौकिक लोक पसारे। श्रीराम ऋषि युग निरमारे।।
शिवम शिवा महिमा प्रभुताई। अपनाई कलि ध्वंस कराई।।
महाकाल बल सरिता ज्ञाने। स्वर्ग धरा धरि दीन्हेउ आने।।

शिवम शिवा प्रसाद लै, सूत शीश चितलाइ।
शिवम कथा प्रभुताइ बल, वन्दि चरन शुरुवाइ।।84।।
विश्व बन्धु शिव भाव रखु, सर्व सुखी मन नीति।
ज्ञान गंग सरिता परसि, चलत न सकु को जीति।।85।।

शिवम शिवा मति जे तन धारी। सो अजेय बसि महि नर नारी।।
जहं लौं शिवपुर हिमे प्रभाऊ। क्षेत्र आर्यावर्त कहाऊ।।
करु ब्रह्मादिक तहां बसेरा। बीन लिहे नारद करु फेरा।।
जब जब ब्रह्म बनेउ नर नांई। करि इहि धरनी ते प्रीताई।।
भारत मात नाम सुर भूमी। सम नहि कतहूं दीखु चहुं घूमी।।
एक बार इहि धरनी वक्षे। बनु संयोगन राज मलेच्छे।।
सुर नाही सुर संस्कृति नाशे। घटु सुरता सुर गै बनि दासे।।
सुर संस्कृति करि करुण गुहारी। शिव शरणे आई हिम वारी।।
कह स्वाहा ध्वनि होइ न धरनी। विवश देव भूले निज करनी।।
रहहिं क्षुधित पावइ बड़ त्राता। सकै नाहि बनि भव सुख दाता।।
दूजे कलि कलूष प्रभुताई। देश काल स्थिति बल पाई।।
मारि चौकड़ी भरइ छलांगा। जबरन दुष्वृति बोवइ आंगा।।
बनु जन पतित कलिक भय मारे। चलु निज गरिमा सबै बिसारे।।
कलह कपट आलस पाखण्डा। होइ न झूंठ कुमति बल खण्डा।।
बड़ अपराध अनीति कुचारा। बनु मन मस्तक कै जिमींदारा।।
भल न रहा पतिनी पति नेहा। पालहिं मनुज व्यसन बल देहा।।
होहीं पूत पिता संग रारा। हेतु भ्रात बनि रह हत्यारा।।
बनि बनि बीज रजो व्यापारी। तन प्रतिभा नाशै नर नारी।।
मातृ शक्ति रूपाजित नारी। करन्ह अनीति स्वभाव उतारी।।
राज नीति महं छाउ अधरमा। छल बल मुद विचर घर धरमा।।

परधन हड़पन चोर बजारी। सकल पथे धावइ ठगहारी।।
भय आतंकी विचरें नाना। आपन देह राखि बम साना।।
रोवइ सत्य हंसहि अन्यायी। गाउ अगुन वन्दित जबरायी।।
शिक्षा संग न रह विमलाई। भले करहिं विज्ञान पढ़ाई।।
जीवन देव न पालन ज्ञाना। तन मन व्याभिचार गढ़ु नाना।।
रह भल बुधि वैभव सम्पन्ना। सुख दूभर केउ नाहि प्रसन्ना।।
एक ते एक व्याधि बनु गाढ़े। लड़ु जीवन भर रोग अखाड़े।।
हीन पात्रता अविश्वासा। कलयुग सोह प्रमुख अभिलासा।।
ठगन्ह ठगाई कारज करनी। गनु वैतरनी जीवन वरनी।।
कलि कलि कोप प्रदूषण ढेरा। सन्त सुजन सुर जांइ खदेरा।।
जे बनु भाव भजन अनुरागी। सह निन्दा फिरु भांति अभागी।।
पावहिं नाहि कतहुं सन्माना। बाढ़ा गो वध पेड़ कटाना।।
नीति हेरानि अनीति उभरई। मानव धर्म गरत महं गिरई।।
विह्वल विकल फिरहिं दुखमारे। ऊंच नीच खल नृप संसारे।।
राजतंत्र मंह व्यापु घोटाला। दाबु कांख तर तेहि कलिकाला।।
पुरुष नारि निज धर्म विहीने। प्रगटावहि सन्तति बल हीने।।
व्यक्ति न भल परिवार कुचारू। भल कैसे बनु देश हमारू।।
पराधीनता पापाचारा। लाग असह्य सहि जाइ न भारा।।

संस्कृति करुण गुहार सुनि, करुणागार महेश।
गुरु सर्वेश्वर रूप धरि, प्रविशे उर प्रज्ञेश।।86।।

शिवम कथा सर्वेश बखानी। सुनि प्रज्ञेश परम सुख मानी।।
गुरु प्रेरण गहि शिवम शिवा बल। बनु तपसी श्रीराम हिमाचल।।
सुर संस्कृति सुरता उद्गारन। विरचा तप थल चलि हरिद्वारन।।
तट हिम धाम बसै हरिद्वारा। परम मनोहर स्वर्ग नुहारा।।
गंगा गोद ऋषिन्ह तप स्थल। महाकाल कै सोह तहां बल।।
राजहिं संग भगवती वामा। लै ब्रह्मास्त्र विरचु श्रीरामा।।
होइ गंग स्वर चलु श्रुति स्वाहा। हेतू करन्ह कलिक मल दाहा।।
बूते ज्ञान सहित विज्ञाना। पाइ रहहिं भूसुर बल नाना।।
महा मृत्युंजय महामंत्र ते। पोषित करहीं धर्म तंत्र ते।।
इहि विधि सुरन्ह बनहिं बलकारी। पोषिय मास दिवस तपधारी।।
भव भूसुरता करिय बलिष्ठा। बनि विश्वामित विरचि वरिष्ठा।।
पुरश्चरण साधिय चौबीसा। कलि वेधे निज कर सब दीसा।।
पराधीनता दोष दुरावा। स्वर्ग सौख्य सुरता पसरावा।।

गुरु शिव रूप शिवा गायत्री। आपु बनेउ ता जीवन यात्री।।
बसु शिव शिवा कृपा जेहि ठांही। बदलु असंभव संभव मांही।।

कहेउ सूत सुनु सभागण, श्रीराम कलि जीति।
आपु शकति जग बांटि गे, जे करु ताते प्रीति।।87।।
कलि जीतइ सुरता बढ़इ, धरा बसै सुरधाम।
असुराई नाही मिलइ, सुख लह जग अविराम।।88।।

कलम ते कलम करिय कलि शीशा। कलिक प्राज्ञ प्रभु प्रज्ञा ईशा।।
तन मन ते करि तपो साधना। दूरि दुराई लोक यातना।।
बनु कलि हते न बड़ प्रभुताई। कलि जीतन विधि विश्व थमाई।।
जे श्रीराम पथे अनुरागी। तेहि कलिकाल लगै सम छागी।।
पावइ मुकुति शकति मनुजाई। आपु शिवा शिव बनै सहाई।।
कहेउ सूत कलि नाशन हेता। बोवा जौन प्रज्ञा भव खेता।।
काटि ताहि जन बनै सुखारे। अन्ते नेर बैठु त्रिपुरारे।।
महामंत्र अक्षर चौबीसा। गनि उर दीप जे चलु सब दीसां।।
गायत्री तेहि कामधेनु बन। कल्प वृक्ष पारस रूपे तन।।
बनि चलु महाप्राज्ञ अनुहारे। मनुज सहित सुर विपति विदारे।।
असुरानास्था अधरम नीती। लागै सहज लेइ सो जीती।।
आंधी झंझावात तुफाना। कोउ दुष्वृत्ति करु सब शमशाना।।
व्यापइ अन्तर शिवम समर्थन। ग्रसित न करु कोऊ आकर्षन।।
कुल परिवार देश चहुंवारे। तूरहि कलह कलूष कगारे।।
देइ सथिर करि महि सुरताई। जाइ असुरता कलि बगिलाई।।
उपजइ आतम ज्ञान अखण्डा। मिलु विद्या बल शक्ति प्रचण्डा।।
शास्त्र नियम यम संयम संगे। ज्ञान ध्यान मिलु देव प्रसंगे।।
शान्ति कान्ति जागृत प्रगटाई। मिलै सहित जीवन सफलाई।।
उपासना साधन आराधन। ते उपजै मन महं प्रियतापन।।
जाइ न इन्द्रिय पंथ निपाते। देहिं उर्ध्वता निज बल बातें।।
भूत पिशाच सताउ न पिंजरा। व्यापु न शोषक पीड़क सजरा।।
अमृत बुन्द अमृता परसे। मिलु भल सन्तति जगहित दरसे।।
भाखु सूत सुर सभा ओनाहीं। जौन प्रज्ञेश ज्ञान उपजाहीं।।
आप समेत आन हित साना। भल साधे बनु युग निर्माना।।
करु सतकर्म सुपथ सद नीती। जेहि ते करहिं शिवा शिव प्रीती।।
भरम अविद्या मूढ़ी माया। मृग तृष्णा प्रीताई काया।।
ते उबरन विद्या वरदाना। कथेउ सूत प्रद प्रज्ञा निधाना।।
जौन शिवा शिव जीवन करनी। ज्ञान सो प्रज्ञ पसाइअ धरनी।।

महि मथि चित्त चिन्तन सभल, यज्ञ योग व्यायाम।
देश व्यक्ति परिवार कै, बांटु नवल आयाम।।89।।
बल मेधा सम्वेदना, प्रज्ञा श्रद्धा उभराइ।
सुर संस्कृति संस्कार ते, दीन्हेउ मनुज सजाइ।।90।।
वेद विद्या ऋषि नीति बल, कै सो डारि ओहार।
राज धर्म दोउ तंत्र कै, भै रक्षक त्रिपुरार।।91।।

जा गृहस्थपन रह तप साथे। ता जीवन सुख रह निज हाथे।।
युवा विभूति गवांवहि जोई। बनि रोगी जीवहिं सो रोई।।
सूतोवाच सूत्र प्रज्ञ भूपा। वाणी विमल अमृता रूपा।।
लोक चासनी चासहिं जोऊ। ता अघ तीर्थ कोउ न धोऊ।।
अइस अविद्या व्यसन विकारू। ज्ञान बांटि प्रज्ञेश निकारू।।
पातक तारक नेक प्रमाने। मिलहि प्रज्ञेश करिय अनुदाने।।
सोह शक्ति संग शिवम शिवा के। हिम ऋषि भाखेउ दरसेउ वाके।।
ऋषि सन्तान जगावा सोऊ। दूज जगाउ तो न सम वोऊ।।
महाप्राज्ञ प्रज्ञेश्वर करनी। सभा सुनाइ सूत मुनि वरनी।।
भोजन वचन करन्ह व्यवहारा। करु सब शोधन शास्त्र नुहारा।।
शिवम शिवा सुनहीं ता बानी। देहिं सोई मांगहु जेहि खानी।।
अगुन असुरता आउ न नेरे। अन्तर वचन निकसु शिव प्रेरे।।
पाउ सिद्धि सतसंगति साधे। आपु समेत जे रह तन आधे।।
आतम ज्ञान त्रिवेनी धारा। ते प्रज्ञेश्वर विश्व पखारा।।
ब्रह्म शिवो सच्चिदानन्दोहम्। पूर मनुज बनि हति अपनोतम्।।
जापहिं जौन मंत्र त्रिपुरारी। मंत्र सोई जग हृदय उतारी।।

सभा ओर संकेत करि, सूत कहिअ अस बैन।
पाउ न सुर मुनि लोकमहं, इन्ह सम दूज ते चैन।।92।।
जग जगाइ चिन्तन परसि, नव सृजन घट घोल।
सुधा समान उड़ेल देइ, नयन कान मुख खोल।।93।।
सुर मुनि चीन्हे मर्म निज, आपु शक्ति गंभीर।
अन्तर चेतन शक्ति बल, बना प्रखर बल धीर।।94।।
सदगति दुरगति आपु कै, मनुज आपु निर्मात।
तथ्य सत्य सब ढंग ते, सो निज भाग्य विधात।।95।।
आत्म देव कै होन लगु, सत अभिनव सिंगार।
कलि कल्मष दूरी परहिं, व्यापे सत्य विचार।।96।।
धर्म सनातन देव हित, रहत जौन ऋषि चाह।
पसरु धरनि शिवमुद बनै, बरसु कृपा सब राह।।97।।

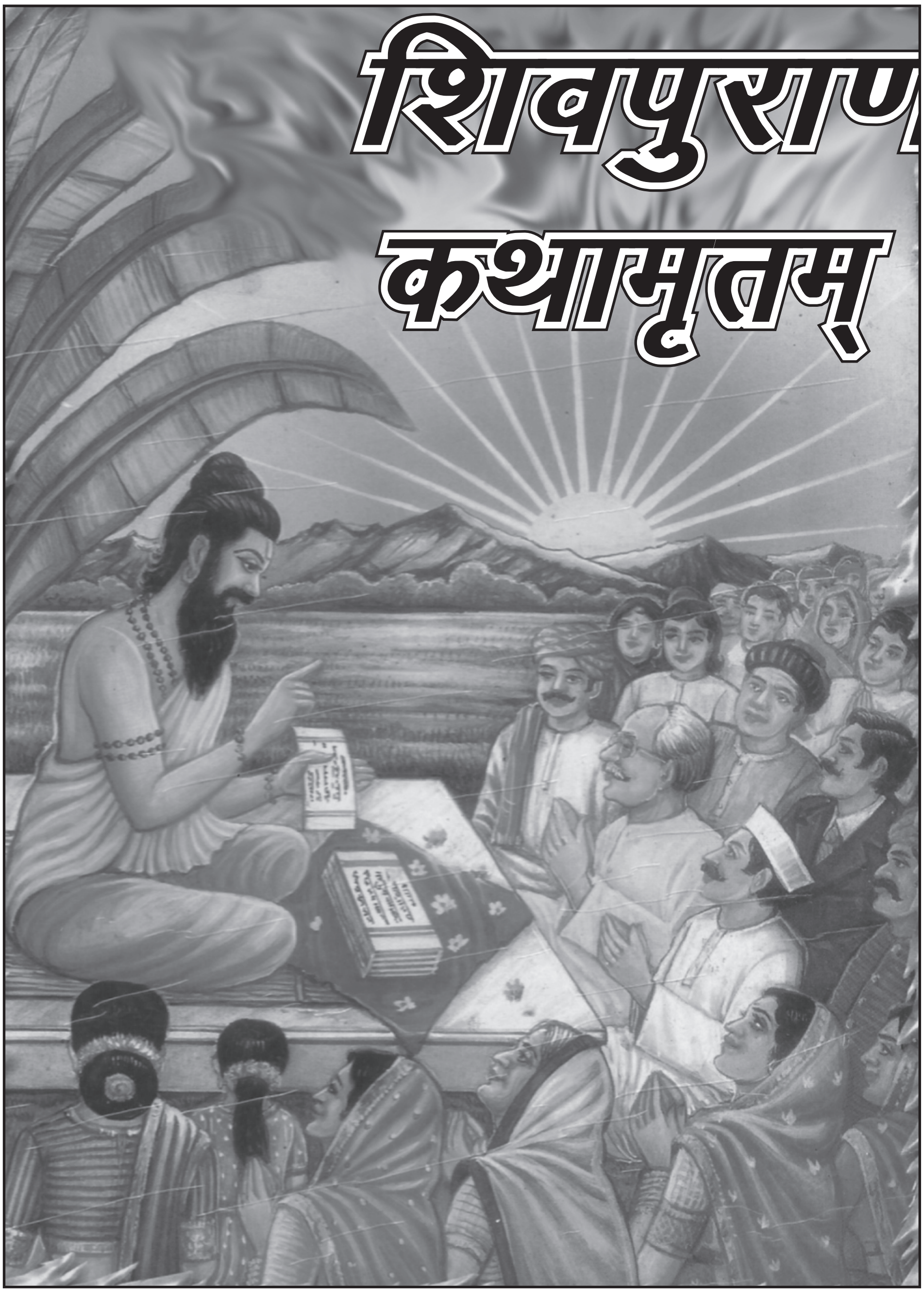

महामुनि सूत द्वारा शिवपुराण कथोपदेश

सूत कथन लगु अन्तर भाऊ। सुनहु सभा सुर तुमहिं सुनाऊं।।
युग ऋषि श्रीराम तप धारी। कलिक दुर्दशा देव उबारी।।
धरनि उभारिय ऋषि प्रभुताई। भव पसराइ शिवम प्रीताई।।
जिते मनुज साधिय निज कर्मा। पावइ शिवम भगति रहि धर्मा।।
सो शिव भगत जे पर उपकारी। साधक महामंत्र निशि वारी।।
ऊंच नीच लखु एक समाना। परसि सुमति राखै सनमाना।।
प्रज्ञा जगाइ सुपथ चलि आपू। जागु तिते संग शिवम प्रतापू।।
रखु पुनीत अन्तर सत नीते। उर आने उपजावइ प्रीते।।
इहि सम धर्म नाहि जग दूजा। जे करहीं शिव मन मति पूजा।।
मूर्ति पूजि फल पाउ न उतना। शिव चाहा पूजे फल जितना।।
कह जग मूर्ति पुजन आडम्बर। सोह न जब लौं सत शिव अन्दर।।
गायत्री मय भयउ प्रज्ञेशा। परसेउ परहित जग उपदेशा।।
बनु सो विश्व वंद्य वर्तमाना। निशि दिन गाइ शिवम गुण गाना।।
सियाराम सेवक हनुमन्ता। धरि उर भयउ सो सम भगवन्ता।।
शिव समान जग सत्य न आना। सत्य शकति सतसंग समाना।।
ब्रह्म सृष्टि पर माया छाया। तेहि प्रभुता बिसरैं सबु काया।।
यदपि ब्रह्म कण कण महं सोहा। पर सबते जग राखु न मोहा।।
स्वारथ लाइ करन्ह प्रीताई। सुर नर मुनि सब युगन्ह सुहाई।।
इहि ते वेद शास्त्र आचारा। मनुज हेतु भल शिवम विचारा।।
विद्या पहिन परखु गति काला। दृष्टि समान सबै संग पाला।।
भाव राखु सद गुन गुण भिन्ना। मधुरे स्वरे नाशु पर खिन्ना।।
करु सतकर्म सुधर्म संवारी। हित नर नारि जीव संसारी।।
अवलोके माया प्रभुताई। भल सो लेहि जे आपु बचाई।।
सो जीतइ माया संसारे। जिमे शिवम गुण सत आचारे।।

आपु नाहि चिरकाल कै, कथहुं कहानी एक।
शिवम कथा महिमा अतुल, सुनि बूझहु प्रत्येक।।98।।

ऋषि सुरन्ह शंका समधानी। सभा सुनाइ सूत कह बानी।।
सुर भूमी भुसुर करि बासा। करि शिव भगति करै कलिनाशा।।
पर जौ आपु अभागी बनहीं। तौ कुचार घर धरनि पनपहीं।।
आपु रहहिं दिन रैन दुखारी। देश न लह सन्तति संस्कारी।।
इहि सम काल कुदिन न दूसर। जौ भूसुर सोवइ तर मूसर।।
व्यापु त्राहि न होहि उबारन। पहुंचु न देव सहाइ गुहारन।।
ऐसन विपति व्यापु भव मांही। बढ़ु भौतिकता धर्म नशाहीं।।
नगर किरात रहत द्विज एकू। दुर्बल दारिद मति अविवेकू।।

अधम अनीति देन पर पीरा। लागइ प्रिय जेस कांकरि खीरा।।
मद्यपान करु भाउ कुचारू। ता सम दूज दुलभ ठगहारू।।
ता पथ चलहिं बेरावत नारी। करि वेश्यावृत्ति उमर गुजारी।।
पायउ देवराज गृह नामा। भय वश करु जन तिते प्रनामा।।
परम कुकर्मी सो दुरचारी। निशि दिन फिरइ नगर चहुंवारी।।
इक दिन विचरत पहुंचु प्रयागे। देह थकित चलि सका न आगे।।
ठग जानिय कोउ ठांव न दीन्हे। विवश शिवालय बास सो लीन्हे।।
शिव प्रसाद कृपा करि तापर। भा ज्वर पीड़ित द्विज निशि पाकर।।
सका न कहुं चलि भवा दुखारी। मन्दिर कोन पड़ा चुप मारी।।
चलत तहां शिव कथा परायण। सत संग वक्ता नर नारायण।।
चलत सुनत शंकर प्रभुताई। लीन्ह सो द्विज निज ह्रदय बसाई।।
बल बुद्धि हीन सुनिय एकागे। बड़ पछिताइ उपजु अनुरागे।।
आखिर होत मास दिन गमना। सो द्विज प्राण छोड़ तन अपना।।

मन्दिर रक्षक क्रिया करु, सो गा पुर यमराज।
तथल यातना देखि सो, मुख करु शिवम अवाज।।99।।

दीन दयाल दिवाकर देवा। हरखहिं वेगि दीन को सेवा।।
औढरदानी भव भय हारी। कीन कृपा लेइ ताहि उबारी।।
आपु स्वरूप अगं तन धारी। रुद्र स्वाभाव पठउ गण चारी।।
लै रथ आयेउ पुर यमराजे। यम दुतन्ह कहं लातन्ह गांजे।।
तानि त्रिशूल महाभय लावा। व्यापु कोलाहल करु यम धावा।।
बूझि शिवम गण शीश नवाये। करि वन्दन पूंछेउ केस आये।।
द्विज हित काज जानि स्वीकारा। दीन्हेउ ताहि संग सतकारा।।
त्वत दूतन्ह यमराज सिखावा। नाहि कबहूं शिव भगत सतावा।।
देवराज द्विज शिव गण लइके। रथ चढ़ाइ चलु निज सम कइके।।
शिव पुर गयो जहं रहु शंकर। सो माना आपन गण अन्तर।।
विवश कथा सुनु मास बिमारी। ह्रदय धरे लगु प्रिय त्रिपुरारी।।
शिव महिमा अनतूल अखण्डा। सकै जो करि यम दण्ड बिखण्डा।।
सोई बनत शिवम पहिचानी। शिवम भगति राखन्ह जे जानी।।
चीन्हत एक भगति जग मांही। ऊंच नीच कछु जानत नाही।।
कर बिनु कर्म करै विधि नाना। दीखु नयन बिनु सुनु बिनु काना।।
कर बिनु चलइ उतारइ पारा। पढ़त न कबहुं ज्ञान अपारा।।
करु कोई और करावइ औरा। अस माया विरचिय सबु ठौरा।।
स्वामी तीन लोक घर हीना। योगी भोगी सकल प्रबीना।।
मय महिमा पर सहज अनन्ता। देही शरण अघी जन सन्ता।।

भाखु सूत सुनु देवगण, महिमा शिवम अनन्त।
नाम जाप दरसन कथन, सुने भा खल दुख अन्त।।100।।
पामर द्विज शिव संगबसि, दरसाइअ इहि ढंग।
थोर भगति वर ढेर मिलु, सकल दोष करि भंग।।101।।

शिवम नीति जेहि शासन बरसे। सुमति सगुण सुध मिलु सब घरसे।।
भूपति प्रजा मेल परस्पर। निबहइ जैसे जन अपने घर।।
धर्म विखण्ड हीन पाखण्डा। रहहि व्यापि सुरता परचण्डा।।
राज समस्या उपजु न कोऊ। उपजै समाधान ता होऊ।।
कथहिं सूत सुर सभा ओनाहीं। नाना विधि महिमा गुन गाहीं।।
ब्राह्मण जाति देश हितराशी। जन जन जीवन मूल विकासी।।
ग्राम वाष्कल नगर मझारे। रहु द्विज एक सहित परिवारे।।
बसहिं तहां परु विन्दुग नामा। संग चन्चुला तासु रह वामा।।
तिय अति सुन्दर पतिव्रत धारी। पर विन्दुग अतिशय दुरचारी।।
अघी अधर्मी कुमगी काला। प्रिय वेश्यावृत्ति जीवन पाला।।
असन व्यसन सोहत जग जितरे। विन्दुग चलइ सबै पथ पकरे।।
बरजइ पतिनी वर्जित बाता। न माने पति परसइ त्राता।।
बीते बहुत काल इहि ढंगा। चलत कलह कुल कुपथ कुसंगा।।
व्यथा मनोगति सहत अनेकन। चढ़ु माथे उन्माद विशेषन।।
भांति अंवारा फिरु द्विज नारी। विधि कोपे तेहि सत्य विदारी।।
इत पति करनी कर्म नुसारे। भाउ अधोगति बढ़ व्यभिचारे।।
राखिस शूद जाति इक नारी। भै चन्चुला और दुखियारी।।
घटु द्विज आयु भवा बलहीना। घेरिस रोग मौत मुख लीना।।
नरक हेतु यम दूत घसीटे। देहिं यातना मारेउ पीटे।।
पुनि देइ योनि पिशाचे करनी। लाग फिरन्ह विन्ध्याचल धरनी।।

पति मरणे उपरान्त महं, चन्चलु भाउ कुचार।
मनोहीन जीवन जियइ, रहि संगे परिवार।।102।।
पर्व पाइ कवनव सुभल, गोकर्णे थल जाइ।
संग कुले स्नान करि, तीरथ देव मनाइ।।103।।

फिरन्ह लाग कुल संग चहुंवारी। इत उत देखत नजर पसारी।।
विचरण करत फिरत तीर्थालय। मिलु संयोगन एक शिवालय।।
होत तहां रह शिवम पुराना। आयउ शबद लगेउ प्रिय काना।।
दिव्य धाम शोभा प्रभुताई। कुल विलोकि ठहरन्ह मन लाई।।
मंगलकारी कथा पुनीता। सुनन्ह लागि बैठिय धरि चीता।।
वांचत कथा कथा वक्तालू। बन्द न भै जब ते भै चालू।।

सुनि सुनि श्रोता बनहि अनन्दा। खण्ड केउ केऊ ढंग अखण्डा।।
कथत कथा चलु ढेर प्रसंगा। पर इक आउ तिमे इहि ढंगा।।
बनु जे तिय परपुरुष सनेही। व्याभिचार करु बहु दिन देही।।
योना चारा विविध प्रकारा। मरेउ जाइ सो नरक मझारा।।
लोह सलाई अगिन तपाई। जबरन दूत योनि मंह डाई।।
पुनि करि लोहे खम्भ बंधाई। होवत मुसरन्ह मारु पिटाई।।
करु सो जो नाहिय कहि जाई। केउ न सहाई केउ न छुड़ाई।।
सुनु जे निज करनी अनुसारे। निज जीवन फल मनहुं विचारे।।
व्याकुल विह्वल भांति अभागी। सुनिय चन्चुला कांपन लागी।।
बनै न बैठत सकै न जाई। पल पल अन्तर दुख गरुवाई।।
लागे नयन बहन्ह जल बारी। पोछिय आंचल लाज संभारी।।
जाइ बताइ काहु ते नाही। बूझि भूल निज बैठि चुपाहीं।।

कथा समापन बनि गयउ, सबै गये निज ठांव।
व्यथित चंचुला धीर तजि, पंडित लग नियराव।।104।।

आंसु बहावत करुण कहानी। गाइस व्याभिचरी जिनगानी।।
अघी न मोसन दूजी नारी। जौन कमानेउं युव दिन चारी।।
निन्दनीय सो दोष अपारा। धिक धिक जीवन सर्व हमारा।।
हाय हाय हम अगुण कमाई। देहि सो दुख तो न सहि जाई।।
दुरगति दुर्दिन दुख दुसवारू। भय लागे केस होइ उबारूं।।
करुण व्यथित मुख आउ न बानी। झर झर बहै नयन दोउ पानी।।
कह मोरे गल लागि जो फांसी। दोनों लोक हेतु दुखराशी।।
जियब मरब दुइनव दुखदाई। कथउ मोर हित कछुक उपाई।।
गुरु पितु मातु तुंही सबु मोरे। लेहु उबारि कहउं कर जोरे।।
तुमहुं तुम्हारि कथा इहि ठांऊ। करि प्रेरित तुम्हरे पद लाऊ।।
लेहु उबारि यमे भय त्रासे। कछुक कथा कहि हति उपहासे।।
फाटत हृदय होउ सहारा। जाब न हम तजि चरण तुम्हारा।।

धीर बंधावत नारिमन, पंडित बोले बैन।
धन्य तुम्हारे भाग्य जगु, जौ कथ सुनि खुलु नैन।।105।।
पश्चाताप समाइ मन, करन्ह अशिवपन त्याग।
तासु दोष दुख दूरि बनु, करि शिव पद अनुराग।।106।।

अवगुण अधरम जीवन सिरजा। बिनु शिव कृपा न गनु उर उपजा।।
पापातंक करै शिव छारा। जैसे रवि नाशहिं अंधियारा।।
कहेउ विप्र सुनु श्रद्धा कुमारी। जग सर्वस्व रूप त्रिपुरारी।।
ब्रह्म बीज शिव सत्य स्वरूपा। सो पातक तारक भव कूपा।।

सोइ जगदीश कर्म गुण नाना। दुख सुख रचना तासु विधाना।।
सुनु त्रिया शिव अकथ कहानी। समुझत बनइ न जाइ बखानी।।
ईश्वर अंश जीव अविनासी। चेतन अविकृत जग सुखरासी।।
पाइअ शक्ति स्वरूपा गाता। माया वश्य रहहि मदमाता।।
जौ जड़ चेतन संग अमेला। भाउ न सतपथ खेलइ खेला।।
मेल अमेल न परै दिखाई। भले कथइ जग विविध उपाई।।
भल संयोग तुमहि विधि दीन्हा। भागा तम प्रकाश चित्त चीन्हा।।
उपजु सुमति उर परम सयानी। सो तुम हेतु बनिय सुखदानी।।
जौ सद बुधि संग कुमति असाझा। तौ रह जीवन सतपथ बाझा।।
दैहिक द्वार झरोखा नाना। पाइ कुमति करहीं विष पाना।।
प्रबल अविद्या कै परिवारा। जबरन घेरहिं राहु प्रकारा।।
आवत देखहिं विषय बयारी। आपु बुलावहिं खोलि किवारीं।।
यदपि विषय सुख करु जग प्रीता। पर यम नियम बिना कहं हीता।।
इतेउ चलै सब श्रुति विधि चारा। जप तप व्रत यम नियम विचारा।।
शिव समान सुर सहज न आना। तिमे प्रमुख गुण अगुन मिटाना।।
राखु हृदय शिव देह शिवा गन। लेहु दोष सब जारि अभागन।।
शक्ति श्रद्धा शंकर विश्वासा। रूप दीखु पुरवहिं सब आशा।।
तजु संशय भय पार सो करहीं। शिव कृपा मरणे पल टरहीं।।
धरु उर धीर न होहु अधीरा। अवसि दुराहिं शिवा शिव पीरा।।

आश्वासन पंडित परसि, तीय बंधावा धीर।
शिव पुराण लागे कथन, उपजिय सुखद समीर।।107।।
भरे नुरागे चन्चुला, कथा सुनन्ह सो लागि।
शान्त चिते एकागमन, अन्तर भगती जागि।।108।।

सकल अशिव सुधि दीन्ह बिसारी। श्रवन नयन तन मन शिव वारी।।
चन्चुल चंचलता करि चंगुल। बनिय सथिर राखिय मन पंगुल।।
देह दीप गढ़ि मन मनि बाती। वाणी विनय तेल दिन राती।।
आत्म दीप्त करु श्रवने ज्योती। नयने नीर दोष तन धोती।।
श्रद्धा सुमन भावना भगती। सत्य समर्पण शुचिता शकती।।
भोग भजन ते जप तप धूपा। शरण चरण आरति अनुरूपा।।
बनु शिवमय सुनि शिवम कहानी। शिव तजि आउ न दुज मुख बानी।।
पाछ अगुन गा जरि सब बिसरा। दीख परइ अन्तर शिव सगरा।।
भक्ति ज्ञान वैराग्य विचारे। शेष आयु इहि ढंग गुजारे।।
बिगत अन्त पल कष्ट विहीना। मन मुख शिवम शिवा रस लीना।।
पाइ चंचुला दिव्य विमाना। चढ़ि ता करि शिव धाम पयाना।।

आपु आन प्रद लोक प्रमाना। सहज दोष हर शिव भगवाना।।
जे सपनेउ लावै शिव प्रीता। होइ सफल जग बनु ता हीता।।
यम के दूत निकट नहि आवै। अष्ट सिद्धि नव निधि सुख पावै।।
चढ़ि शिव याने चलि पथ मांही। पाछिल कृत चंचुल सुधियाहीं।।
धन्य धन्य शिव कथा अनन्ता। गजब करिय सहजे दुख अन्ता।।
शंकर भजन परम हितकारी। विप्र शूद्र सबही अधिकारी।।
ते अलभ्य शिव पद को पावै। जे करि नेह कछुक पल ध्यावैं।।
शिव उदार करुणा वरुणालय। हरण दैन्य दारिद अवगुण भय।।
भेद शून्य जग जन जन स्वामी। सहज सुहृद हरहिं तन खामी।।
अति दयाल भोले भण्डारी। अग जग जीवन मंगलकारी।।

गणन्ह सहित शिव यान चढ़ि, शिव पुर पहुंची जाइ।
दिव्य अंग चंचुल बनिय, जब शिव सन्मुख आइ।।109।।

दिव्य धाम शिव लोक विलोकिय। चकित चंचुला बनिय अशोकिय।।
दीखु नयन शिवगण परिवारा। सेवत शिवम देव पुर सारा।।
वाम शिवा रह शिव पच आनन। प्रति संग तीन नयन शशि नागन।।
गौर अंग करुणा अवतारी। भस्मांगी सर्वस सुख धारी।।
सुरभित पुष्पित हृदय विन्दे। अवलोकिय चन्चुल नत वन्दे।।
ज्योति रूप शिव अति हरखाने। आवन नेर कथेउ मृदु बाने।।
कह भय त्यागु भवन भवकूपा। बसु निज धाम भवानी रूपा।।
तापर मुद मन बोलि भवानी। रहहू संग सखी सम मानी।।
कर फेरिय दीन्ही वरदाना। रहहु अभय शिव धाम ठिकाना।।
लाइ भगति शिवकथा जे सुनहीं। यम भय जाइ शिवम पुर मिलहीं।।
अभय चंचुला लह दिव्यताई। रहन्ह लाग शिव पुर हरखाई।।
विन्दुग प्रिया चंचुला देवी। गै बनि गौरी पति पद सेवी।।
रहि मुदकर गौरी सेवकाई। इहि विधि काल कछुक बिगताई।।
पुनि चंचुल मन उपजा माथन। पूरण होहिं करिय जोउ मांगन।।
आश भरोस पाइ विश्वासा। आये दिन निज चाह बकासा।।

एक दिवस गौरी पदे, शीश नाइ कर जोरि।
लागि विनय चंचुल करन्ह, दीन भावना घोरि।।110।।

जय जय तारणि जीवन माता। विश्व रूप तुम विश्व विधाता।।
ब्रह्म रूपिणी सुर मुनि सेवी। अगुणा सगुण प्रकृती देवी।।
अपरापरा शक्ति सब रूपा। उत्पति रक्षक ध्वसंक धूपा।।
तुम जग जननि षडानन माता। सम रक्षक नाशक सब त्राता।।
राखहिं देव त्रिदेव स्व अन्तर। वन्दत रहहिं भांति ब्रह्म मंतर।।

भव दुख हारी विपति निवारी। लेहु विनय सुनि मोरि गुहारी।।
अहउं इहां पर इक दुख घेरे। कहत न बनै लगै भय मेरे।।
आउ न चैन चंचुला रोवइ। लागि चरन नयनन जल धोवइ।।
चंचुल दशा उमा अवलोकिय। मानि सखी मुख वाणी बोलिय।।
कहु अन्तर दुख का तोहि त्रासा। हम प्रसन्न पुरउब मन आशा।।
नाहि अदेय मोहि कछु तोहू। रोकि आंसु भाखउ मुख वोहू।।

मुदित भवानी बूझि के, चंचुल शीश नवाइ।
कह गौरी पति कथा सुनि, मिले ठांव इहि आइ।।111।।
व्यथा सतावइ मोहि इक, पता न पति गति काव।
रहेउ आचरण नीच सो, न जाने केहि ठांव।।112।।
विनय चंचुला बैन सुनि, बोली गिरिजा मात।
हम देखत दिव्य दृष्टि ते, परेउ नरक ता गात।।113।।
पर इहि दिन गिरि विन्ध्य पर, विचरत रूप पिशाच।
पियत वायु जीवित अहइ, सहि नाना दुख आंच।।114।।

सुनि गौरी वाणी भय कारी। चंचुल व्यथा बाढ़ि भै भारी।।
विनवत चरण गिरी भहराई। करत नमन मन चाह सुनाई।।
देवि कृपा करि होउ सहाई। जदपि पाउ पति आपु कमाई।।
पर विनवहुं मैं बारम्बारा। कुत्सित बुधि पति मोर उबारा।।
तुम जानहु सब जानन्ह वारी। बनु जेहि विधि तेस बनु हितकारी।।
दुर्गति दूरि करहु दुखहारी। शिव प्रिया गिरि राज कुमारी।।
चंचुल विनय बनेउ शिर भारा। पार्वती विधि आपु विचारा।।
बिनु शिव कथा सुनाये ताको। योनि पिशाच न छूटइ वाको।।
सब विधि भल तुम्बुरु इहि हेता। तेहि बुलावाइअ विनय समेता।।
तुम्बुरु आइ नाइ पद शीशा। करिय नमन मांगिय आशीशा।।

जगदम्बा जगती जननि, तुम्बुरु ते कह बात।
हेतु बुलावा जाहि ते, भाखिय सो वृत्तान्त।।115।।

सुनु तुम्बुरु गन्धर्व धिराजा। सौपहुं एक करहु शुभ काजा।।
मोरि सखी चंचुला सयानी। सो मोसे कह बिनवत बानी।।
मम पति पता नाहि केहि ठांऊ। देहु मिलाउ मनो सुख पाऊं।।
सुनु तुम्बुरु हम सो स्वीकारा। होन सफल हम तुमहिं पुकारा।।
जेहि विधि मिलइ दिखाइब राहा। करि तुम श्रेय लेहु मन चाहा।।
सुनु तुम्बुरु ता पति अनभागी। विप्र रूप वेश्या अनुरागी।।
कोधी कुमगी कुमति कुकर्मी। क्रूर कठोर चडाल अधर्मी।।
वर्ष सहस मरणे उपरान्ता। नरक बास करि लह ता अन्ता।।

अब पिशाच बनि विन्ध्या नगरी। भोगत विचरत धरि अघ गठरी।।
ता सम दूज न कोउ दुरचारी। अघी कुकर्मी जन संसारी।।
बिनु शिव कथा उबार न होई। तुम ते भल कह दूज न कोई।।
जाहि ताहि शिव कथा सुनावा। हति पिशाच पन शिवपुर लावा।।
आयसु आशिश लेहु हमारो। लै संग चंचुल जा तेहि ठारो।।
जेहि विधि बनइ उबारि सो लावा। जांनु दूत जग जननि पठावा।।

गौरी उमा महेश्वरी, आयसु बूझि पुनीत।
लै चंचुल तुम्बुरु चले, धरनि ओर कर प्रीत।।116।।
तुम्बुरु मन सोचत चलत, कहब कथा भुत तार।
देवि वचन पूरण करन्ह, बा भल भाग्य हमार।।117।।

अमृत योग आपु विधि ढारा। अस दिन मिलब पुनः दुसवारा।।
तुम्बुरु चंचुल संग लिवाई। बिन्ध्याचल परिसर गे आई।।
अरखि परखि लखि ठांव पुनीता। लगु सुर सरि तट भल बड़ हीता।।
ठहरि तहां पुनि विचरन लागे। करन्ह पिशाच खोज चलि भागे।।
तौ निजने गिरि ऊंचे खाले। बन उपवन सब ठांव मझा ले।।
थल निजने गिरि ऊपर ठांऊ। मिलु पिशाच तुम्बुरु नियराऊ।।
भै सम्वाद मरम से जाना। तुम्बुरु संग चलन्ह बगिलाना।।
भाग पाछ ता तुम्बुरु धायउ। चलि कछु दूरि पकरि ता पायउ।।
जकड़ेउ ताहि पाश तन डारी। चलेउ घसीटत सुरसरि वारी।।
माया तंत्र मारि तेहि काया। तौ लगु चलन्ह पाछ पछुवाया।।
देह विशाल रूप बेढंगा। रोवइ हंसइ रहहि तन नंगा।।
सात हाथ नाभी ऊंचाई। नाक बेडौल नयन त्रय पाई।।
लगइ भयावह आकृति ताकी। अनुपम देखि पथिक चलि झांकी।।
उछलइ कूदइ रचहि बखेरा। जब तब दीन बनै सम चेरा।।
चलि तुम्बुरु सुरसरि तट आयउ। गात पाश तरु मूल बंधायउ।।
कैदी सम ता करिय प्रबंधा। पुनि तुम्बुरु लागेउ निज धंधा।।

शिव पुराण भाखन कथा, मण्डप तहां रचाइ।
तट सुरसरि थल दिव्यलखि, तुम्बुरु लीन्ह बनाइ।।118।।

वन्दन वार पताका लागेउ। सम शिव धाम ज्योति तहं जागेउ।।
अति रमणीय बना थल सोऊ। जहं शिव कथा कथन तय होऊ।।
पसरी बात उहां अबिलम्बा। हेतु कथा लगु कदली खंभा।।
कथहीं तुम्बुरु शिवम पुराना। उबरन हेतु भूत शैताना।।
देव दनुज मानव चलि आये। सुनि जे खबर तेई हरखाये।।
खग मृग वृन्द गंजेड़ी लोगू। आउ शराबी गनि भल योगू।।

असनी व्यसनी वेश्याचारी। बैठे पांति लगाइ अगारी।।
करहि नशा जे बम बम बोली। आये सोउ सुनन्ह गढ़ि टोली।।
चलहिं अनीते कुपथ कपूता। तहं लागइ चलि आइ बहूता।।
परेउं अभक्षी कै तहं डेरा। मन मनाइ निज दोष खदेरा।।
कुंभ पर्व सम लागी भीरा। आयेउ जे ते दुखेउ अधीरा।।
सब करि करि सुरसरि स्नाना। बैठे सुनन्ह कथा धरि ध्याना।।
चंचुल पति पिशाच नहवाई। बैठिय मण्डप नेर बिठाई।।
तुम्बुरु शिवम शिवा करि थापन। वन्दन लाइ कथा करि वांचन।।
तहं तुम्बुरु अमृत रस घोरिय। सब अघ धोउ भांति घन बोरिय।।
जेहि कथ तरहीं भूत पिशाचा। आन तरन संशय का वांचा।।
सप्त संहिता शिवम पुराना। कह तुम्बुरु भजि शिव भगवाना।।
श्रोता सकल कृतारथ भयऊ। पाश पिशाच पाप धुलि गयऊ।।
दिव्य अंग बनु गौर शरीरा। बनु पट शोभित बुधि बल वीरा।।
शिवम कृपा पाइस त्रय नयना। करु संग चंचुल शंकर भजना।।
नारदादि ऋषि लखि चकराने। गावहिं मुद महेश यश गाने।।

कथा लाभ लै सब गयउ, करि शिव शिवा प्रनाम।
विन्दुग चंचुल बसि रहेउ, तुम्बुरु मण्डप धाम।।119।।
पुनि तीनों शिव यान चढ़ि, शिव पुर पहुंचे जाइ।
शिवम शिवा सत्कार करि, निज गण लीन्ह बनाइ।।120।।
शिवम कथा महिमा अतुल, अघी पाप जरि जात।
नरक बचावत सुख धरत, बनत शिवा शिव नात।।121।।
शिव पुर विन्दुग चंचुले, पाइअ सुख प्रबास।
आशिष लै तुम्बुरु चलेउ, करि जहं आपु निवास।।122।।

सुनहु सभा सुर सूत उवाचे। लगइ न शिव भगतन भय आंचे।।
बिनु शिव कृपा दुलभ भगताई बिनु भगती शिव नाहि सहाई।।
सहज सुलभ सो सरल सभी को। भले अघी तन रहा कभी को।।
आदि अन्त सो मध्य प्रबासी। पंचानन जग प्राण प्रकाशी।।
शिव चिन्तक सेवी अनुरागी। लै यज्ञीय सुख बनि सतभागी।।
भूत भविष्य काल वर्तमाना। सदा कराउ सो युग निर्माना।।
महाकाल बनि भाग्य विचरहीं। दै प्रज्ञा मति पाप विदरहीं।।
जब कलि काल बनै बलवन्ता। बाढ़ै पाप होइ पुण्य अन्ता।।
सत्य हीन सब निन्दा लीना। रहहीं पर धन हर लवलीना।।
दुराचार दुष्कर्म अनेका। करहिं शूद सम विप्र प्रत्येका।।
पशु बुधि प्रीति पराई नारी। संस्कार बिनु बन अनचारी।।

शौर्य अभाव चौर्य प्रभुताई। भावइ चलन्ह कर्म बिसराई।।
करै लोग सतकर्म निरादर। पावहिं दुष्कर्मी बड़ आदर।।
मिलै नाहि भल आश अगारी। व्यसन विहार सबै प्रिय भारी।।
कपटी वेश प्रीति आतंका। प्रिय रावण गुण हर पुर लंका।।
रहहिं लोक परलोक नशाहीं। समझै सुनै नाहि सुधियाहीं।।
जौ अस अधम परै सब बखरे। कहेउ सूत सुनु सुरगण सगरे।।
तौ चलु महाकाल गोहराई। साधिय शिवम शिवा भगताई।।
महामंत्र बल संग सुपावन। करु जे लोक हितारथ धावन।।
अवसि बनै शिव ता अनुकूला। कलिमल नाशि हतइ सब शूला।।
घर उपजै सुख शिवपुर भांती। मांनु सो पाइ स्वर्ग सुख थाती।।
देव संस्कृति प्राण विधाता। यज्ञ पिता गायत्री माता।।
भजइ शिवा शिव संग महमंतर। निवसइ देव तासु उर अन्तर।।
चीन्हइ समय समय निर्माने। गनु सो सुर बल धन पहिचाने।।
करु एतिक पुरुषारथ जोई। ते लेहीं शिव कृपा संजोई।।

शिव भगतन तट आउ नहि, कलयुग कै उत्पात।
साधक जीवन देव कै, न पावहि आघात।।123।।
भांग धतूरा खांहि जे, सुल्फ गंजेड़ी लोग।
इत शिव भक्त कहाउ नहि, जे करि नशा प्रयोग।।124।।

करै आन दुख दर्द नशावन। सदाचार मय अन्तर पावन।।
रक्षइ धर्म विश्व भ्राताई। दीखु लक्ष्य गनु संग भगताई।।
विनवत सूत कहेउ इहि ढंगा। देहु प्रज्ञा धारक शशि गंगा।।
अनबन सोचब साधब हमसे। क्षमहु महेश सुधारहु अब से।।
जेहि विधि होइ नाथ हित मोरा। दीखु सो पंथ चलउं वहि ओरा।।
मिलु जैसे सविता ज्योताई। शक्ति ध्यान सो देहु थमाई।।
भुवन भूसुरन्ह होन पुनीता। परसहु प्रज्ञा बनि भव हीता।।
छीनहु राज अनीति कुचारा। मांगत देव सभा इहि ठारा।।
नाथ नाहि जौ होउ सहाई। जाउं कहां केहि लग दुख गाई।।
मुंह बाये धावा कलिकाला। पिछरन नाहि बिना महकाला।।
सहित सभा विनवत मुनि सूता। शिव स्वरूप कह वचन अगूता।।

जयति शिवा शिव विश्वपति, शंकर श्रीद ईशान।
त्रिपुरारी त्रिमार्ग धर, श्रीश तनू भगवान।।125।।

नमो रुद्राय नीलाय भीमाय परमात्मने।
कपर्दिने सुरेशाय व्योम केशाय वै नमः।।1।।
वृषभध्वजाय सोमाय सोमनाथाय शम्भवे।
दिगम्बराय भर्गाय उमाकान्ताय ते नमः।।2।।
तपोमयाय भव्याय शिव श्रेष्ठाय विष्णवे।
व्यालप्रियाय व्यालाय व्यालानां पतये नमः।।3।।
महीधराय व्याघ्राय पशूनां पतये नमः।
पुरान्तकाय सिंहाय शार्दूलाय मखय च।।4।।
मीनाय मीननाथाय सिद्धाय परमेष्ठिने।
कामान्तकाय बुद्धाय बुद्धीनां पतये नमः।।5।।
कपोताय विशिष्टाय शिष्टाय सकलात्मने।
वेदाय वेदजीवाय वेदगुह्याय वै नमः।।6।।
दीर्घाय दीर्घरूपाय दीर्घार्थायाविनाशिने।
नमो जगत्प्रतिष्ठाय व्योमरूपाय वै नमः।।7।।
गजासुरमहाकालायान्धकासुरभेदिनेर्सेयेन।
नीललोहित शुक्लाय चण्डमुण्डप्रियाय च।।8।।
भक्तिप्रियाय देवाय ज्ञात्रे ज्ञानाव्ययाय च।
महेशाय नमस्तुभ्यं महादेव हराय च।।9।।
त्रिनेत्राय त्रिवेदाय वेदांगाय नमो नमः।
अर्थाय चार्थरूपाय परमार्थाय वै नमः।।10।।
विश्वभूपाय विश्वाय विश्वनाथाय वै नमः।
शंकराय च कालाय कालावयवरूपिणे।।11।।
अरूपाय विरूपाय सूक्ष्मसूक्ष्माय वै नमः।
श्मशानवासिने भूयो नमस्ते कृत्तिवास से।।12।।
शशांकशेखरायेशायोग्रभूमिशयाय च।
दुर्गाय दुर्गपाराय दुर्गावयवसाक्षिणे।।13।।
लिंगरूपाय लिंगाय लिंगानां पतये नमः।
नमः प्रलयरूपाय प्रणवार्थाय वै नमः।।14।।
पंच वक्त्रं महावक्त्र कालवक्त्र गजास्यमृत।
दशबाहो महाबाहो महावीर्य नमो नमः।।15।।
अघोरघोरवक्त्रं त्वं सद्योजात उमापते।
सदानन्द महानन्द नन्दमूर्ते नमो नमः।।16।।
नमो नमः कारणकारणाय, मृत्युंजयायात्मभवस्वरूपिणे।
श्री त्र्यम्बकायासितकण्ठशर्व, गौरीपते सकलमंगलहेतवे नमः।।17।।

गौरीपतिशतनामस्तोत्रं देवदेव कृतं तु ये।
शम्भोर्भक्त्या स्मरन्तीह श्रृण्वन्ति च पठन्ति च।।18।।
न तापस्त्रिविधस्तेषां न शोको न रुजादयः।
ग्रहगोचरपीडा च तेषां क्वापि न विद्यते।।19।।
श्रीः प्रज्ञारोग्यायुष्यं सौभाग्यं भाग्यमुन्नतिः।
विद्या धर्मे मतिः शम्भोर्भक्तिस्तेषां न संशयः।।20।।

असुर विनाशक पाप हर, देव देव जग देव।
आदि अयोनिज रूप तुम, देवतेश मह देव।।126।।
सुर मुनि वन्दित गौरिपति, भव बाधा जंजाल।
ते रक्षा अब मोर करु, परहिं न प्राण बवाल।।127।।
लोक हितारथ ध्यान धरि, लै परमारथ भाव।
शिव स्वरूप महिमा अतुल, आगे सूत सुनाव।।128।।

नमो नमामी नमो नमामी। विश्व ईश शिव अन्तरयामी।।
ओं नमः शिवा शिव गणेशाय। तत् आदि शक्ति सत् सदाशिवाय।।
ओउम् मंत्र भव मंगलकारी। देवी देव वर्ग सब धारी।।
शिव पंचानन ऊँ स्वरूपा। उर भव पंच शिवा शिव रूपा।।
अछर पांच ऊँ नमः शिवाया। रक्षक मातृ रूप हर काया।।
शिव पूजा बिनु ऊँ अधूरा। महामंत्र बिनु होइ न पूरा।।
जय शिव शंकर औढरदानी। जय गिरि तनया मातु भवानी।।
सर्वोत्तम योगी योगीश्वर। सर्व लोक ईश्वर परमेश्वर।।
पराशक्ति पति अखिल विश्वपति। परं ब्रह्म परधाम परमगति।।
सर्वातीत अनन्य सर्वगत। निज स्वरूप महिमा स्थित रत।।
ठांव ठांव गृह गांव मझारा। लह पूजन शंकर परिवारा।।
जासु श्रद्धा जैसन भगताई। अनुसारे कुल वर कुल तांई।।
शिव शंकर अति सहज दयाला। भांती पूत विश्व जन पाला।।
वैसे शिवा रूप धरि जननी। पालहिं विश्व शास्त्र श्रुति कथनी।।
इन सम सहज सत्य नहि आना। कहेउ सूत मुख भाखु जहाना।।

शंकर अदभुत संग कुल, अदभुत पाये गात।
कुल वाहन अनमेल रह, तबहुं मेल सब खात।।129।।

शंकर संग विराजत नागा। ता लखि गणपति वाहन भागा।।
इत शिव संग बैल वृद्ध सोहे। उत गौरी संग बाघ घघोहे।।
सुनिय दहाड़ बैल भय भीते। कुल अनमिल पर एक दुज मीते।।
रहहीं सजग सबै कुल लोगू। गफिलाने उपजइ दुख जोगू।।
प्रथम पूज्य सकल परिवारा। विश्व व्यवस्था करि निरमारा।।
शेर बैल संग मूस सपेला। निबहत इहि ते जोड़ अमेला।।

होइ कबौं नहि ठेली ठेला। करहिं परस्पर मिलि सब खेला।।
जैसेन मात पिता संग चेला। भांती प्रीति रहइ हर बेला।।
पर आतमा आतमा सत्या। तत्व विवेक सत्य सब मिथ्या।।
रूप व्यवस्था सब गुन खानी। जगत व्यवस्था पति त्रय प्रानी।।
सुमति संगठन संग सहकारा। न्याय प्रेम सत शिष्ट विचारा।।
शिव कुल भांति तहां आनन्दा। शिव स्वरूप रहु परमानन्दा।।
करहिं विश्व जन ता सेवकाई। जहं श्रद्धा विश्वास सुहाई।।
पालि धरा सोई राम भगवती। दीन्ही सुर कुल वैभव शकती।।
प्रणव समेत मंत्र पच अक्षर। दायक सिद्धि मनोरथ भवकर।।
विधि हरि रुद्र त्रिविधि तन धारी। बनेव सृजन पालन लयकारी।।
अखिल विश्व पति भाग्य विधाता। गणपति शिव शंकर जग माता।।
वृषभ रूप नन्दी गण देवा। निशि दिन करहिं शिवा शिव सेवा।।
व्याघ्र चर्म परिधान मनोहर। रीछ चरम ओढ़ै गिरिजा वर।।
अभय वरद मुद्रा शुभकारी। कर त्रिशूल डमरू भय हारी।।
पिंगल जूट जटा सिर उत्तम। तन कपूर गौरं उज्ज्वलतम।।
सोहै गल रुद्राक्षे माला। मुण्डमाल तिरपुण्डे भाला।।
स्कन्द गणपति उमा भवानी। हेतु महेश मोद सुख खानी।।

दीन हीन मोसम अधम, चलि उबरै शिव द्वार।
माया ते मुक्ती लहहिं, वाणी सूत उचार।।130।।

अगिन स्वरूप शंभु संहारी। रूपा अगिन शिवा महतारी।।
शिव हित हेतु शिवा तन धरहीं। लोक हिते तब शिव अवतरहीं।।
शक्ति स्वरूपा उमा भवानी। काली रुद्रानी शर्वानी।।
गौरि ईश्वरी सर्व मंगला। शिव पत्नी बनि सृष्टी रचला।।
जथा न अन्तर त्रिसुर मांही। शक्ती त्रिधा तथा समतांहीं।।
लोक हितारथ काज नुसारे। विरचहिं त्रय निज रूप प्रकारे।।
एक समय त्रय देव मझारे। उठेउ परस्पर प्रश्न विचारे।।
हम त्रय एक विलग तन काहे। मानहि लोग धरे भिन्न राहे।।
बड़ रहस्य मय रहेउ प्रसंगा। दीन्हेउ विष्णु उत्तर इहि ढंगा।।
जब़ प्रलय सूना जग सारा। विश्व अरूप घोर अंधियारा।।
काल रूप शिव महाकाल बन। सेवी काल ढंग हमरो तन।।
काल नुकूल विरांचन कारन। काल विरांचिय विधि अवतारन।।
आदि प्रकृति रूप रचि तीना। त्रय सहयोग सफलता दीना।।
क्षोभ प्रकृति कीन जब सोई। त्रिगुण रूप रचि सृष्टि संजोई।।
तन नुसार सो करि बंटवारा। गुण अखण्ड तन रहा अपारा।।

अधोभाग शिव मांझे मोहूँ। उर्ध्व चतुर्मुख हिस्सा होहूँ।।
क्रम अनुशासन काज नुसारे। हम त्रय गुण तन जीवन धारे।।
शिव अधिकारी सप्त तत्व के। हेतु सृष्टि जो बड़ महत्व के।।
शिव समान कोउ ऊंच न आना। शिवा स्वरूपा तासु समाना।।
दामिनि ज्योति तड़क गति जितनी। राखु सहस गुन बड़ शिव अपनी।।
इतेउ शिवा शिव बल अनमापी। भगत भक्ति कर बनहिं प्रतापी।।
पुरुष अजन्मा आपु अकेला। दीखु सोई गति प्रलय बेला।।
आदि पुरुष शिव शक्ति महातन। मंत्र प्रसाधक धर्म सनातन।।
शिव दर्शन हर दारुण दोषा। जिन उर अन्तर तिनहि भरोसा।।
गौरी चरन पूजि हर ठारा। सुर नर मुनि निज विपति निवारा।।
बुद्धि विनायक देव गणेशा। देहीं सुमति दुराइ कलेशा।।

जासु नयन शिव दर्श करि, ध्याइ कथा सुनु कान।
अघ दुराइ कइनव जनम, भाखहिं शास्त्र पुरान।।131।।
शिव अगिनीमय वायुमय, ज्योति रूप हिम अंग।
सकुल तासु प्रभुता अतुल, सोइ रक्षक सब ढंग।।132।।

को तपसी जग शंभु समाना। शिव कुल भांति न जग कुल आना।।
सकल समस्या कै समधाना। शिव संदेश जय तप व्रत ज्ञाना।।
दर्शन योग शंभु परिवारू। भल मनसा फर सुख भव तारू।।
सकल अगुन हर कलिक कलेशा। शिव कुल नीति सुसीख सन्देशा।।
कुमति कलह हर करु कल्याना। भाग्य विरचि करु प्रज्ञा वाना।।
सकल देव ऋषि मुनि भव जेते। करि शिव सेवा वंश समेते।।
भव वन्धुत्व भाव संचारेउ। ग्राह्य करिय शिव कुल आचारेउ।।
असतो मा सदगमय ते प्रीता। भाव प्रसाधिय संत सभी ता।।
तमसो मा ज्योतिर्गमये पथ। खोजहिं जाइ तासु पथ को रथ।।
मृत्यु दुराइ अमरता गहहीं। भूसुर रूप स्वर्ग सुख लहहीं।।
विद्या वेद परसु हित जैसेउ। साधिय लेहिं मुक्ति फल कैसेउ।।
बढ़ु विवेक बनु युग निर्मानी। सभा सुनाइ कहिअ हरि बानी।।
दिखु भविष्य बनि क्रान्ति विचारक। उपजु भगति उर लोक सुधारक।।
साधइ सो प्रज्ञा अभियाना। शिव उपदेश परइ जेहि काना।।
बनु जेहि विधि जीवन हितकारी। सो शिव देह शिवा महतारी।।
विधना रांचिय सृष्टि संवारी। ताहि जे बनु भव व्यसनाकारी।।
जेस विधि सृष्टि विरांचन ज्ञाना। तुमहिं कृपा करि करि अनुदाना।।
तानुसार पुरवहु अभिलाषा। मांगत चाह भगति शिवदासा।।
करु सो समय प्रकृति विरांचन। जितेउ सतोयुग पाउ उथापन।।

अर्धनारीश्वर रूप तुम्हारा। रचु सृष्टी कह ऋषि परिवारा।।
ता प्रभुता जग प्रज्ञा मझारे। परसि सुधारहु अब संसारे।।
जेहि विधि मिलु प्रभु सो प्रभुताई। देहु सो बल बुधि नाथ उगाई।।
दिखहुं सो पथ जो बनु हितकारी। सो दिखाइ नहि दूज निहारी।।
तुम सबु सुनत प्रीति सबही ते। वन्दहुं सदमति मिलु अबही ते।।
तुम सम दाता देव न आना। करत देर कहि अरज बिहाना।।
जे करि भगति गहिय शरनाई। ताहि तुमहुं निज धाम बसाई।।
भव कलि काल दुकाल अकाला। बिनु महाकाल न पछरन वाला।।
नाशि त्रास भय करहु सुखारी। गौरीपति हे गंगा धारी।।

शंकर द्वादश नाम गुण, विनवत सूत सुनाउ।
पुनि लिंग महिमा कथन करि, ध्यावत सभा ओनाउ।।133।।
लिंग शब्द का अर्थ जग, जानत चिन्ह प्रकार।
निज लिंग पूजत आपु जे, बनु ते सुर अनुहार।।134।।
पर लिंग पूजन काहु नहि, शिव लिंग पूजन होत।
लय रचना दोऊ करहिं, बनि भव बीजक श्रोत।।135।।

ध्याइ सदाशिव दोउ कर जोरी। आगु सूत मुनि वचन उचोरी।।
पूजिय शिव लिंग बनु सब पूजा। चाहेइ पूजु देव नहि दूजा।।
शिव लिंग पूजन जग स्वीकारा। विधि हरि सुर नर खल परिवारा।।
विद्या वेद पुरान बखाना। लिंग पूजे शिव प्रद वरदाना।।
विधि पूजन संचरी संसारे। शिवम ज्योति लिंग दर्शि अपारे।।
करि लिंग पूजन रहु ब्रह्मचारी। तेहि मानहि शिव आपु नुहारी।।
ऋषि मुनि आदि भयउ भव जेते। लिंग पूजि भल पाइ अगेते।।
पत्नी व्रत पति व्रत सफलाई। शिव लिंग पूजि नेक जन पाई।।
इन्द्रिह सतसंग भाव पुनीती। राखि पूजि लिंग सकु सुर जीती।।
शिव लिंग महिमा अतुल अथाहा। साधक सफल बनै चौपाहा।।
रहु लिंग वेदी देवि सघेरा। करु लिंग ऊपर शंभु बसेरा।।
लिंग मूल ब्रह्मा नित छाजइ। विष्णु बल ता मध्य विराजइ।।
जेहि मन लिंग कुचारेउ प्रीता। पाउ सो नर्क न बनु सुर हीता।।
व्रत ब्रह्मचर्य लिंग सेवकाई। सो सेवा शंकर प्रीताई।।
गृह जीवन शंकर व्रत धारी। जांनु जे ते तन नाव नुहारी।।
इते लोक शिव शक्ति उपासन। सहज मानिगा कलिक विनाशन।।
बिरचत सृष्टि जबै विधि हारेउ। पूजिय शिव लिंग विनय उचारेउ।।
बनि मुद प्रगट भयउ त्रिपुरारी। आपु पुरुष आधा तन नारी।।
देइअ विधाता ज्ञान विज्ञाना। मैथुन विधि सृष्टी निर्माना।।
सो विधि पाइ विधाता सफले। लह विधि सृष्टि विकासन अगले।।
पर कछु चलै शिवत्व भुलाई। संसकार प्रभुता बिलवाई।।
करहिं प्रशंसा बहु प्रकारे। करि नहान तिय मूत्रागारे।।

गर्भ हेतु विधि मैथुनताई। करि जबरन अघ नापि न जाई।।
शिव उपदेश विधाता मानिय। तानुकूल मानव निर्मानिय।।
महाकाल साथी उनहूं का। भावइ शिवम नीति जिनहूं का।।
ता सम सत्य धर्म नहि आना। जिनहि पियारू शंभु विधाना।।
मानव अवगुण विपति विदारी। जग जन जीवन पावन कारी।।
जीवन जियन कला सोई जाना। जपु जे महामंत्र शिव ध्याना।।

शिव लिंग दरसन जे करइ, घटु ता पाप पहार।
निशिदिन वन्दन जे करइ, लह जीवन उद्धार।।136।।

पूजिय शिव लिंग व्रत उपवासे। होहिं पूर ता सब अभिलाषे।।
जाइ पार बनि सकल चुनौती। सफलइ देवी देव मनौती।।
जग नर नारी सुर मुनि सन्ता। मांनु लिंग शिव भांति अनन्ता।।
शिव लिंग मांहि होइ सृष्टी लय। लय ते बनहि कछुक सृष्टी कय।।
इहि कारण शिव लिंग उपासन। करि सुर मनुज टेकहीं माथन।।
बनु जेहि विधि शिव शक्ती समेलन। विधना खेल रचा सो खेलन।।
शिव लिंग पूजि विश्व नर नारी। बनु पावन शिव धाम पधारी।।

सहित सभा उठि सूत मुनि, हाथ जोरि शिर नाइ।
लिंगाष्टक वन्दन करिय, सो सुख नाहि समाइ।।137।।

ब्रह्ममुरारि सुरार्चित लिंगं, निर्मल भासित शोभित लिंगम्।
जन्मज दुःख विनाशक लिंगं, तत्प्रणमामि सदाशिव लिगम्।।1।।
देवमुनिप्रवरार्चित लिंगं, कामदहं करुणाकर लिंगम्।
रावणदर्प विनाशन लिंगं, तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगम्।।2।।
सर्वसुगन्धिसुलोपित लिंगं, बुद्धिविवर्धन कारण लिंगम्।
सिद्ध सुरासुर वन्दित लिंगं, तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगम्।।3।।
कनकमहामणिभूषित लिंगं, फणिपतिवेष्टितशोभित लिंगम्।
दक्ष सुयज्ञ विनाशन लिंगं, तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगम्।।4।।
कुंकुम चन्दनलेपित लिंगं, पंकजहार सुशोभित लिंगम्।
संचित पाप विनाशन लिंगं, तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगम्।।5।।
देव गणार्चित सेवितं लिंगं, भावैर्भक्तिभिरेव च लिंगम्।
दिनकर कोटि प्रभाकर लिगं, तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगम्।।6।।
अष्टदलोपरि वेष्टित लिंगं, सर्व समुद्भवकारण लिंगम्।
अष्टदरिद्र विनाशित लिंगं, तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगम्।।7।।
सुर गुरु सुरवर पूजितं लिंगं, सुर वन पुष्प सदार्चित लिंगम्।
परात्परं परमात्मकलिंगं, विश्ववन्द्य विश्वबीजं लिंगम्।
रांचक सृष्टिलयगति लिंगं, तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगम्।।8।।

साम्ब सदाशिव लिंग तट, करि लिंगाष्टक पाठ।
पाउ मुक्ति पुनि लोक शिव, लहहि सिद्धि तन आठ।।138।।
सभा मुदित एकाग भै, प्रगटायउ मन चाव।
महिमा सुनन्ह महेश कै, आगे सूत बताव।।139।।
लिंग दून वेदी बनइ, योनि पीठ अधिकार।
आगम निगम पुराण कह, लिंग रचना प्रकार।।140।।

विविध द्रव्य करु लिंग रचनाई। कह विधि पारद सब सुखदाई।।
मुक्ति भुक्ति दोऊ सुख देही। नर्मद बाण लिंग बल एही।।
बड़ प्रभाव रचना अनुसारे। कह पुराण पावइ सनसारे।।
चिपटा लिंग ढहावइ भवना। कर्कश छीनइ सन्तति अपना।।
एक पार्श्व स्थित पन भारी। धन परिवार विनाशन कारी।।
फूटा लिंग परोसइ रोगा। रूप छिद्र रचु हानी योगा।।
वक्र तिकोना आगु नोकारा। पूजन वर्जित कह श्रुति सारा।।
अति स्थूल क्षीण लघु काया। भूषित जौन सो करु हित दाया।।
गृही योग्य पूजन शुभकारी। रंग मेघाभ कपिल हितकारी।।
कपिल वर्ण लघु थूल समूला। होहीं नाहि गृही अनुकूला।।
बाणा वचन बाण लिंग नरमद। पूजिय होइ सुलभ भल फल सद।।
शिव लिंग अन्तर जगत समूचा। निज लिंग अन्तर जिव लघु ऊंचा।।
आगम निगम पुराण बखाना। लिंग पूजन भव शंभु समाना।।
लिंगार्चन व्यापित जगमांहीं। गांव नगर घर घर हर ठांही।।
करहीं नर्मद नित लिंग रचना। लै शिव आशिष बह गति अपना।।
नर्मद कांकर पाथर जोऊ। सो प्रिय प्रीति सदाशिव होऊ।।
इहि ते शुभ सुख दायक सरला। पूजिय लोग निवारहिं अभला।।
बनु शिव लिंग यद्यपि सबु ठाऊं। लघु भारी मन असी गनाऊं।।
कांसा तांबा शीशा लोहा। सोनादिक पर न करु छोहा।।
बाण लिंग शिव परम पियारा। पूजे करहिं आपु अनुहारा।।
भगती भाव श्रद्धा विश्वासा। जहां तहां करहीं हर बासा।।
लिंग थापिय लह पुण्य अनोखा। तट जप नाशइ दारिद दोखा।।
शिव लिंग पूजन जग अधिकारी। सकल जाति जन प्रति नर नारी।।
जे शिव लिंग न धरु जल धारा। तीरथ हरइ न ता अघ भारा।।
शिव अनन्त गुण शक्ति अनन्ता। कब हरखहि करहीं कब अन्ता।।
सकै न जानि वेद मुनि सन्ता। फल प्रद एक भगति दृढ़वन्ता।।

बाण लिंग भौंरा रंगत, पीठ अपीठ संग थापु।
मंत्र आमंत्रित लेइ करि, पाउ गृही प्रतापु।।141।।

पूजि सदाशिव लिंग स्वरूपा। सुर नर होहिं सुखी बनु भूपा।।
लिंग करइ नर तिय पहचाना। रांचन सृष्टि दीन्ह शिव ज्ञाना।।
गगन लिंग धरती आधारा। सप्त तत्व लै जिव निरमारा।।
शिव सर्वस दावानल रूपा। देखि व्यर्थ तेहि करहिं अरूपा।।
इते ताहि कह जग संहारी। जदपि सो करु नव तन निरमारी।।
विश्व रूप हर सद्योजाता। महामृत्युंजय पच मुख धाता।।
शिव नैवेद्य महा प्रभुताई। करन्ह ग्राह्य नाना मति पाई।।
पर जौ शिवम भाव भगताई। बनु भव हेतू विष्णु नांई।।
शिव ते मांगु क्षुधा प्रगटाई। देहि सो और रहहिं हरखाई।।
शिव समान को औढरदानी। पाइ शरण तेहि आपन मानी।।
करु जे समय अकारथ गाता। ताते न राखइ शिव नाता।।
जे लिंग पूज प्रीति अपराधे। सधहिं न ताहि साधना साधे।।

शिव लिंग थापन चाह जौ, ढूढु सुपावन ठांव।
तीरथ सरिता बाग मंह, करु घर नगरे गांव।।142।।

मन्दिर पश्चिम पूरब द्वारा। कह पुराण शिव लगै पियारा।।
पीठ त्रिकोण गोल चकलांगा। छोर अकोर थापु शिव लिंगा।।
महामंत्र ध्वनि उचारण। नमः शिवाय करइ जे धारण।।
शिव अन्हवाइ गिरत जलधारा। चीखु सुधा सम तौ बनु पारा।।
सदाचार व्रत प्रिय त्रिपुरारी। गल रुद्राक्ष त्रिपुण्ड संवारी।।
तीनहु रहु महेश त्रय नयना। सुरन्ह सुनाइ सूत कह बयना।।
राम नमः शिवाया। सुनिय वेगि हरखइ शिव काया।।
बेले पातिय विरांचिय। पाइ महेश भाग्य ता खांचिय।।
महिमा बेल अकूत अपारा। बल त्रिवेनी हर निरमारा।।
वेश भाव भव भजन पदारथ। शिव प्रियता करि पुरवन्ह स्वारथ।।
आपु भूलि शिव जगहित करहीं। सृजन पालन लय अनुसरहीं।।
सकल ठांव सब दिन ऋतु मासे। जावहिं पूजि स्वामि कैलासे।।
भारत ज्योतिष गणित नुसारे। बरस तीन अति मास निकारे।।
अधिक मास अधिकार महेश्वर। भा प्रदान मति सुरन्ह सुरेश्वर।।
सो अति मास महेश पियारू। बड़ पुनीत कह जन संसारू।।
बनु अति मास उपासन साधन। पूजन शिव दइ पार्थिव नामन।।
पूजन पार्थिव विधि उपचारा। करि जन होइं सहज भव पारा।।
शिवम नाम जप परम पुनीता। सकल दोष हर सम अमरीता।।

शंकर रूपी नाव बल, जाके संग सुहाइ।
मुक्ति पाउअघ छार बनु, अन्त धाम शिव पाइ।।143।।

नाक कण्ठ भुज हाथ गल, भौंह माथ रचु रेख।
शैव रूप दिखरात तब, पोते भसम विशेख।।144।।

जाप मृत्युजंय गल रुद्राक्षा। माथ त्रिपुण्ड रूप शिव पक्षा।।
पार्थिव लिंग उपासन करनी। त्रिवेनी सम तर वैतरनी।।
लिंग पार्थिव पूजन अवसर। व्रत मास रह ब्रह्मचर्य ऊपर।।
बनि पुनीत लै माटी पावन। थल चलि या मन्दिर करु आवन।।
नमः शिवाय ऊँ नम शिवाया। जपिय विरचु लिंग पार्थिव काया।।
विरचहुं लिंग अगूंठाकारे। रहि स्थित पूजन उपचारे।।
नीच भाग वेदी निगरारा। एकहि हाथ करइ निरमारा।।
ऊपर भाग नाम परु लिंगा। माझिल भाग पीठ प्रसंगा।।
लिगन्ह शीश सजावत गोली। नमः शिवम बोलत मुख बोली।।
लिंगाकार शुद्ध प्रकारा। राखि नेह विरचउ हर बारा।।
शिव परिवारा संग निरमारा। मानि अहउं तीरथ मझधारा।।
करि पूजन षोडश उपचारा। राखत ध्यान शिवा शिव वारा।।
पूजन ढंग वेद अनुरूपा। साधिय मिलहीं लाभ अनूपा।।
गाल बजावत बम बम घोषत। राखु मने जेस शिव मोहि पोषत।।
मानिय सन्मुख सोहत अपने। नाइअ शीश विनय करु वचने।।

शरणागत जन जानि मोहि, कृत्य ढंग अज्ञान।
होहु मुदित गौरी पते, देहु न अनबन ध्यान।।145।।

कारं विन्दुसंयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः।
कामदं मोक्षदं चैव काराय नमो नमः।।1।।
नमः प्रणववाच्याय नमः प्रणव लिंगिने।
नमः सृष्टियादिकर्त्रे च नमः पंच मुखाय ते।।2।।
त्वं ब्रह्मा सृष्टिकर्ता च त्वं विष्णुः परिपालकः।
त्वं शिवः शिवदोऽनन्तः सर्व संहारकारकः।।3।।
त्वमीश्वसे गुणातीतो ज्योती रूपः सनातनः।
प्रकृतिः प्रकृतीशश्च प्राकृतः प्रकृते परः।।4।।
नाना रूप विधाता त्वं भक्तानां ध्यान हेतवे।
येषु रूपेषु यत्प्रीतिस्तत्तद्रूपं विभर्षि च।।5।।
सूर्यस्त्वं सृष्टि जनक आधारः सर्वतेजसाम्।
सोमस्त्वं शस्य पाता च सततं शीतरश्मिना।।6।।
वायुस्त्वं वरुणस्त्वं च त्वमग्निः सर्वदाहकः।
इन्द्रस्त्वं देवराजश्च कालो मृत्युर्यमस्तथा।।7।।

मृत्युंजयो मृत्युमृत्युः कालकालो यमान्तकः।
वेदस्त्वं वेद कर्त्ता च वेद वेदांग पारगः।।8।।
विदुषां जनकस्त्वं च विद्वांश्चविदुषां गुरुः।
मंत्रस्त्वं हि जपस्त्वं हि तपस्त्वं तत्फलप्रदः।।9।।
वाक् त्वं वागाधि देवी त्वं तत्कर्त्ता तद्गुरुः स्वयम्।
अहो सरस्वतीबीजं कस्त्वां स्तोतुमिहेश्वरः।।10।।
नमः सर्वहितार्थाय जगदाधारहेतवे।
साष्टांगोऽयं प्रणामस्ते प्रयत्नेन मया कृतः।।11।
मंत्र हीनं क्रिया हीनं भक्ति हीनं सुरेश्वरः।
यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे।।12।।

मास काल श्रद्धा सहित, पाठ करै जन कोय।
मनोहारिणी मिलु प्रिया, वंश वृद्धि सुख होय।।146।।

प्रणमामि सदाशिव स्वरं। अखिलेश महेश्वर गौरि वरं।।
काशी कैलाश विरान घरं। तुम पुरुष पुरातन अर्ध नरं।।
शशि माथ छटा जट गंग धरं। वामांग उमा मन मनोहरं।।
त्रय लोक पतिं नर देव वरं। महिमा गुण तेज महा अपरं।।
अविनाश अनन्दित भीति हरं। प्रभु द्वैत अद्वैत परात्परं।।
भुज चारि भुजंग त्रिशूल धरं। तन गोर मनो प्रिय बघम्बरं।।
अविराम ज्योति लग सत्य परं। अन्तरयामी हर विश्व धरं।।
यति रूप अनूप सदा मधुरं। विश्व बीज विश्वेश्वर विश्ववरं।।
सर्वेश सुरेश अजर अमरं। वन्दउं परमेश्वर शिव शंकरं।।
जय कार्तिकेय जय विध्नहरं। जय जयति शिवा जग शक्ति धरं।।
जय पुरुष पुरातन महेश्वरं। धरि नेक नाम वसुधा विचरं।।
कैलाश हिमे थल प्रवासी। सोहत विश्वनाथ गृही काशी।।
केदार नील श्रीकण्ठेशा। शिव लिंग सुमाया वर वेशा।।
भीमेश्वर नीले कण्ठेश्वर। रुद्रादि गया तुम अम्बकेश्वर।।
वृषभध्वज रूप गो कर्णेश्वर। शशि भूषण सोमनाथ ईश्वर।।
तुम वेद पुरीश्वर त्यागराज। कालेश्वर सर्वेश्वर सुराज।।
छवि भीमराजपुर भीमेश्वर। तुम चोक नाथ बन चम्पकेश्वर।।
जय बैजनाथ जय वाटेश्वर। अघनाशी जय तुम तीर्थेश्वर।।
जय नारायण नर शंभु कुमेशा। मार्गेश जय जय कण्वेशा।।
नाथ गिरीश्वर विरूपाक्ष तुम। सोमेश्वर वेदारण्यम तुम।।
अगस्त्येश्वर महाबलेश्वर। राम लिंगेश्वर जय अर्केश्वर।।
कोटीश्वर शिव वृद्धा चलेश्वर। विजयेश्वर तुम नन्दिपुरेश्वर।।
तुम चण्डेश्वर अधियेश्वर जय। गंगाधर विमलेश्वर जय जय।।

नीडा नाथेश्वर शिव नामे। कुण्डलीश्वर जीवन जग आभे।।
जय नाम त्रिभंगीश्वर ईश्वर। जय राघवेश जय तण्डवेश्वर।।
जय धर्म रूप तुम श्री पतीश्वर। कतहुं कलाधर कहुं नकुलेश्वर।।
श्री नारायण मार्कण्डेश्वर। मंजुनाथ तुम तो विरचेश्वर।।
मधुरेश्वर जय जय व्यासेश्वर। तुमहिं स्वयंभू बन जैमिनीश्वर।।
कपिलेश्वर मणिमुक्त नदीश्वर। शूल टंक हर हर संगमेश्वर।।
पुष्प गिरीश्वर जय रामेश्वर। कृति वासेशर लंक मत्स्येश्वर।।
त्रिपुरान्तक तुमहीं सिद्धेश्वर। लिंग कलिगेंश्वर मल्लेश्वर।।
वाराहेश्वर जय कूर्मेश्वर। कल्की ईश्वर जय कृष्णेश्वर।।
बौद्ध रूप तुम बल रामेश्वर। रूप सदाशिव जग परमेश्वर।।
हो तुम एकादश रुद्रेश्वर। अमरनाथ जय पशू पतेश्वर।।
जयति जयति शंकर त्रिपुरारी। पुरुष पुरातन पालन कारी।।
सर्व रूप तुम नाथ गुणातन। रूप अजन्मा शक्ति सनातन।।
मंत्र तंत्र तुम वाणी रूपा। बुधि विद्या सब वस्तु स्वरूपा।।
बन अनबन तुम रूप उपासन। अन्दर बाहर करनी हाथन।।
भले नहि सुनु मोर विनीता। पर इक वचन मांनु जगहीता।।
चरनन श्रद्धा भाव भगताई। जाइ नाहि दूजेउ तन पाई।।

नाम जाप शिव स्मरण, करि पुष्पन प्रणाम।
करै विसर्जन पार्थिव, वन्दत शिव अविराम।।147।।
शिव लिंग प्रभुता देव सुनि, बूझि सरल मन भाउ।
मोद भरे मन सोच करि, करब विश्व सिखलाउ।।148।।

सूत महामुनि लगेउ बतावन। कथा शिवा शिव सुधा सुपावन।।
अवगुन सकल पाप दुःखहारी। वन्दन पूजन जप त्रिपुरारी।।
पर कलिकाल पुनीत जोराये। मानव मने भगति नहि भाये।।
नहिं बनु देव चरन अनुरागा। तप बिसारि कुपथे मन लागा।।
बिनु शिव कृपा सुधार न होई। सत संगति भगती भव कोई।।
सुनहु सभा जन मोर सिखावन। जौ चह कलि भय दोष भगावन।।
मांनु आपु तप भगवन खेता। बीज महामत बोवन चेता।।
दै उर्वरक तिमे सतसंगा। स्नेह नीर सीचेहुं गनि गंगा।।
लागइ सुधा बेल फल तामे। काटि बटोरि धरहु घर धामे।।
आप आन परिवार सुधारन। करु ताते फिरि लोक बजारन।।
भव शुचिताई शास्त्राचारा। शिव स्वरूप जौ हृदय उदारा।।
अवलोके शिव तत्व अखण्डा। जाइ कुमति जरि कलिक प्रचण्डा।।
भाग्य समेत करइ युग रचना। पुरवइ सोइ देखइ जोइ सपना।।

चार वेद छः शास्त्रमत, लोके कर्म प्रधान।
देइ जौन सोई मिलइ, होहिं आन न तान।।149।।

वचन मृदुलता भाव उदारा। इहि सम नाहि दूज संस्कारा।।
शिव पूजे लागइ प्रिय एहू। बिनु शिव कृपा सुलभ कहं केहू।।
अचलानन्द भगत भय हारी। औढर कृपा मंगलकारी।।
जासु कृपा पद रज प्रभुताई। पाइअ लोक तासु गुन गाई।।
जासु नाम गुण पद रज धूरी। उलट सीध जपि तरु भव भूरी।।
जासु नाम गुण गावत गाना। बनु भवतारन सुख जन प्राना।।
जासु नाम जप फल फरु ऐसा। नांघइ भव सुविधा रथ जैसा।।
जासु नाम शकती बड़ताई। मिलु अमाप त्रिदेव बताई।।
जासु भगत ते यम भय खावै। निज पुर ते शिव धाम पठावै।।
शिव पूजा विधि सरल प्रकारा। वस्तु नाहि लगु नेह सुचारा।।
पूजन लिंग महेश्वर चरिता। बरना वेद पुराण अमिरता।।
ब्रह्म रूप शिव निर आकारा। रूप सकल कारन साकारा।।
साक्षात लिंग ब्रह्म प्रतीका। हेतु सकल जन होइ कहीं का।।
सूत वचन प्रद सर्वानन्दा। जौ पूजन विधि सुनु ऋषि वृन्दा।।
शिव लिंग पूजन सर्व प्रदाता। हानि विहीन सर्व सुख दाता।।
बूझि देव ऋषि बहु हरखाये। मानहु अमृत बारिस पाये।।
पुनि कह सूत आगु मृदुबानी। सुर नर जौन सुनन्ह प्रिय मानी।।
पूरब काल समय बहु विगतेउ। सनत्कुमार सुधा रस परसेउ।।
सो पिय व्यास विशिख रस घोरा। मोहि समेत लोक सर बोरा।।
सोउ सुधा रस उपमन्यु बरना। मांनु कृष्ण हरि सर्वस सुधना।।
पाइ चलाइ प्रज्ञा अभियाना। परसिय लोक कलिक हर ज्ञाना।।
शिवम शिवा महिमा अदभूता। परम अलौकिक दिव्य अकूता।।
आदि अनादि अभय भय रूपा। माया उत्पत्ति प्रलय स्वरूपा।।
रवि शशि देव दनुज तन नाना। स्थिति स्मृति ज्ञान अज्ञाना।।
हीन अहीन अकामी कामी। जगत परे जग अन्तजामी।।
सर्व रहित पर सर्व विधाता। सब गुन हीन रूप छबि प्राता।।
कर बिनु कर्म करइ विधि नाना। पग बिनु चलइ सुनइ बिनु काना।।
अजर अमर घर लोक विहीना। वैभव दानी वैभव दीना।।
कुल अनमेल सबहिं ते मेला। अवर्णनीय महिमा ता खेला।।
एक नाहि संग विविध झमेला। तबहु अचिंतित रहु अलबेला।।
राखत दोष हलाहल संगा। आपु फिरत योगी बनि नंगा।।
पूजन पार उतारइ लिंगा। सो हिम बसहिं बहहिं शिर गंगा।।

पूजब शिव लिंग सरल बड़, पूजा फल अत्यन्त।
अनहोनी होनी बनहिं, पावहि शिवपुर अन्त।।150।।
ज्योतिर्लिंग महिमा कथन, जौ चह आगिल सूत।
सुनन्ह लगेउ सुर ध्यान दइ, बूझि पुनीत बहूत।।151।।

सौराष्ट्रदेशे विशदेऽतिरम्ये ज्योतिर्मयं चन्द्रकलावतंसम्।
भक्तिप्रदानाय कृपावतीर्णं तं सोमनाथं शरणं प्रपद्ये।।1।।
श्रीशैलश्रृंगे बिबुधातुसंगे तुलाद्रितुंगेऽपि मुदा बसन्तम्।
तमर्जुनं मल्लिकपूर्वमेकं नमामि संसारसमुद्रसेतुम्।।2।।
अवन्तिकायां विहितावतारं मुक्तिप्रदानाय च सज्जनानाम्।
अकालमृत्योः परिरक्षणार्थं वन्दे महाकालमहासुरेशम्।।3।।
कावेरिकानर्मदयोः पवित्रे समागमे सज्जनतारणाय।
सदैव मान्धातृपुरे बसन्तमोंकारमीशं शिवमेकमीडे।।4।।
पूर्वोत्तरे प्रज्वलिकानिधाने सदाबसन्तं गिरिजा समेतम्।
सुरासुराराधित पादपद्मं श्रीबैजनाथं तमहं नमामि।।5।।
याम्ये सदंगे नगरेऽतिरम्ये विभूषितांगं विविधैश्च भोगैः।
सद्भक्तिमुक्तिप्रदमीशमेकं श्री नागनाथं शरणं प्रपद्ये।।6।।
महाद्रिपार्श्वे च तटे रमन्तं सम्पूज्यमानं सततं मुनीन्द्रैः।
सुरासुरैर्यक्षमहोरगाद्यैः केदारमीशं शिवमेक मीडे।।7।।
सह्याद्रिशीर्षे विमले बसन्तं गोदावरीतीरपवित्रदेशे।
यद्दर्शनात्पातकमाशु नाशं प्रयाति तं त्र्यम्बकमीशमीडे।।8।।
सुताम्रपर्णी जलराशियोगे निबध्य सेतुं विशिखैरसंख्यैः।
श्रीरामचन्द्रेण समर्पितं तं रामेश्वराख्यं नियतं नमामि।।9।।
यं डाकिनीशाकिनिकासमाजे निषेव्यमाणं पिशिताशनैश्च।
सदैव भीमादिपदप्रसिद्धं तं शंकरं भक्तहितं नमामि।।10।।
सानन्दमानन्दवने बसन्तमानन्द कन्दं हतपापवृन्दम्।
वाराणसीनाथमनाथनाथं श्रीविश्वनाथं शरणं प्रपद्ये।।11।।
इलापुरे रम्यविशालकेऽस्मिन् समुल्लसन्तं च जगद्वरेण्यम्।
वन्दे महोदरतरलस्वभावं घृष्णेश्वराख्यं शरणं प्रपद्ये।।12।।
ज्योतिर्मयद्वादश लिंगकानां शिवात्मनां प्रोक्तमिदं क्रमेण।
स्तोत्रं पठित्वा मनुजोऽति भक्त्या फलं तदालोक्यनिजंभजेच्च।।13।।

करि द्वादश लिंग स्मरण, विनय भाव प्रगटाइ।
सम शरणागत सूत मुनि, ज्योति लिंग कथ गाइ।।152।।
मिलु शिव कृपा अवसि तेहि, जे चलु शिव अनुकूल।
लोक सकल सुख सुलभ बनु, होहिं दूरि भव शूल।।153।।

ज्ञान ज्योति अन्तर दिपै, आन दृष्टि सो देख।
बनि अनुगामी पाइ हित, बरनइ शकति विशेख।।154।।
शिवम शिवा वन्दन नमन, दर्शन व्रत व्यवहार।
भजन कीर्तन श्रवण कथ, कर सहजे भव पार।।155।।

सकल सभा सुर ऋषि मुनि जेते। कथेउ सूत सन वचन अगेते।।
कहु मुनीश ज्योतिर्लिंग प्रभुता। उत्पत्ति कथा समेते गुण ता।।
सुनिय सूत मन बड़ सुख पावा। सुधा नहावन आश उभावा।।
कह विलोकु शिव पावनताई। देहिं अवसि दुख दरिद दुराई।।
व्यसन विहारी लातन्ह मारी। निज पुर ते सो देहिं निकारी।।
पद अनुरागी हम सब उनके। जटा गंग शशि सोहत जिनके।।
सुनहु सभा सुर सूत उवाचे। सो शिव सृष्टि कला सब रांचे।।
करहिं भगत गण जहं स्मरना। होइ अवसि तहं शिव अवतरना।।
दिव्य दृष्टि चहुं देखि मुनीशा। ध्याइ मनहिं मन पद जगदीशा।।
ज्योतिर्लिंग कथ लगेउ बतावन। तारन तरन करन तन पावन।।
देव भूमि सुर करहिं बसेरा। आपु बतावहिं हम शिव चेरा।।
सोमनाथ शिव ज्योतिर्लिंगा। कह मुनीश सो अदभुत ढंगा।।
क्षेत्र प्रभास कठियावाड़ेउ। पूजै शिव भागइ दुख गाढ़ेउ।।
भगत भागवत शास्त्र पुराना। इहि लिंग महिमा अतुल बखाना।।

आदि काल सृष्टी हिते, करि विधि विविध प्रयास।
नाना बुधि विद्या देइअ, हेतु सृष्टि विकास।।156।।

कीन्ही सृष्टि विकास विशेखा। दक्ष प्रजापति परम सरेखा।।
तनया बीस सात उपजायउ। सकल ब्याह शशि संग रचायउ।।
करि शशि ब्याह नेह न सबते। रोहणी प्रीति करिय बड़ मन ते।।
शेष प्रिया सब रहहिं दुखारी। निज दुख पितु सन आइ उचारी।।
सुनिय दक्षमन व्यापु गलानी। चलि शशि ते बोलेउ मृदु बानी।।
ब्याह प्रतिज्ञा भूलइ जोई। पावइ रोग नरक दुख कोई।।
राखु सबै तिय ते सम नाता। मानहु चन्द्र दक्ष कह बाता।।
फिरे दक्ष कहि चन्द्र बिसारी। रोहिणी प्रीत रखिय मन भारी।।
साधइ सम पूरब व्यवहारा। राखइ अरु ब्याही तिरकारा।।
चन्द्र न सुधरत दक्ष विलोके। तनया सहित ब्यापु मन शोके।।
बाढ़ी पीर दक्ष देइ शापा। पाउ चन्द्र तुम क्षय सन्तापा।।
भये शोकाकुल शापित चन्दे। जाइ सभा सुर सुरपति वन्दे।।
कह निज कथ दुरगति बतराइअ। शीतल सुध केस महि बरसाइअ।।
जौ नाही हम बनब अरोगा। व्यापे अवसि धरनि दुख योगा।।

भये शशि आप दुखी विधि नाना। बिसरा भोग क्षयी तन साना।।
सुरन्ह परस्पर विशिख विचारा। शशि संग लै विधि धाम पधारा।।

आदर आसन दीन्ह विधि, बैठारेउ इक संग।
पुनि पूंछेउ आयउ केसस, काह मलिन शशि अंग।।157।।

रोग दुखाकुल कह शशि बाता। जगत विधाता जग सुख दाता।।
दक्ष शाप कह चन्द्र सकारन। रोग विनाशन आपु उबारन।।
मिलइ मुक्ति केस कथहु उपाई। नाहित लगत काल मुख पाई।।
शशि दयनीय दशा सुनि देखा। विधि तापर कह वचन विशेखा।।
शशि तुम छाउ आपु घर घामे। जेस रह सुर कुल भोगी तामे।।
पर नहि आन चन्द्र तुम दोषी। मिलु सोई फल जो रहु पोषी।।
जौ न सकै तिय पीर मिटाई। तौ न करइ ता संग अधमाई।।
दक्ष न दोष दोष सबु तोरा। इतेउ शाप तोहि आइ दबोरा।।
जहां सुमति अर्धांगिन संगा। मिलइ स्वर्ग सुख बह तट गंगा।।
नारि धर्म व्रत जहं नित फरई। आपु ब्रह्म तेहि गृह अवतरई।।
जे सुर चलहिं नारि प्रतिकूला। पाउ विविध दुख नाना शूला।।
सुर पुर सुख बनु दूभर तेका। नाहि तुमहिं अस देव प्रत्येका।।
जे नर नारि हेतु बनु पीरा। ग्रसइ कलिक मल रहहिं अधीरा।।
जेहि पुर नाहि नारि सन्माना। बढ़इ भ्रष्टता गुण हयवाना।।
जहं बढ्ढु वर्जित हार विहारा। बलत्कार कै तहं भरमारा।।
अबला बाल दीन संग अधरम। बोवइ नरक परोसइ कुकरम।।
विधि विधान अधमी अधमाई। करु जे रोग अवसि कोउ पाई।।
नारिन्ह त्राहि आपु बनु शापा। मिलै भांति केहि जाइ न मापा।।
सुरन्ह सुनाइ हेतु शशि लायेउ। वेद मूर्ति विधि वचन सुनायेउ।।
सुनहु देव कुल चन्द्र समेता। करु सुधार निज पथ नव चेता।।
साधइ नारि धर्म सदचारा। जौ चाहा आपन उदगारा।।
चलु जो कुपथ अनीति लोभाई। दुरमति तासु बनै शशि नांई।।

व्यापु जौन दुख चन्द्र तन, सो शिव सकै निवारि।
अस अघ जन्मे रोग को, दूज सकै न टारि।।158।।

सुरन्ह हितारथ आनन चारी। कह सब जाहु शरण त्रिपुरारी।।
जप तप करहु संग शशि देवा। भुवन पधारि सदाशिव सेवा।।
महामृत्युंजय काल निपातन। जपि सो दोष बिदारहु आपन।।
कहेउ सूत युग बनै नवीना। मनुज देव जौ तप लवलीना।।
विधि वाणी आदेश नुसारे। हेतू तप ऋषि देव पधारे।।
पाइअ पावन क्षेत प्रभासा। लागे तप हेतु निशि वासा।।

महामृत्युंजय साधन लागे। तब उर ज्योति शक्ति बल जागे।।
तन मन वाणी कर्म चन्द्र के। गयउ लीन बनि पति नगेन्द्र के।।
करत घोर तप गै दिन ढेरा। हरखि महेश आउ चलि नेरा।।
सहित शिवा बोलेउ इहि ढंगा। कहु शशि आपन विपति प्रसंगा।।
सुनिय महेश दीन्ह अमराई। कह शशि चलहु नीति अपनाई।।
सुमति सनेह सत्य सतकर्मा। सदव्यवहार साधना धर्मा।।
करि न सका जे पर कल्याना। पाउ अभल बनु ब्रह्म विधाना।।
दक्ष शाप न जाई दुराई। पर ताते हम रखब बचाई।।
पाउ पाख क्षय वृद्धि पखवारा। करहु भांति इहि जनम गुजारा।।
शाप विमुक्ता पूरण मासी। देत हेत तुम्हरे सुखराशी।।
पाइ चन्द्र सुर आपु प्रभूता। जोरि हाथ करि विनय बहूता।।
नाथ शिवा लै बसु इहि ठांही। इहि अभिलास सबै मन मांही।।
जिते अगारिय मो सम त्रासन। होहीं दूजेउ शाप विनाशन।।
विनवहुं नाथ लेहु इहि मानी। आपन दास दीन तन जानी।।
शिव स्वीकार लीन्ह शशि वचना। तब ते क्षेत्र प्रभासेउ रहना।।
सो शशि सोम नाथ धरि नामा। करहीं ज्योतिर्लिंग प्रनामा।।
लोक सहित परलोक सुधारत। तहां जे विनवत वचने आरत।।

तीन ताप भव शाप भय, रोग व्याधि उत्पात।
सोम नाथ शरणे परत, सहजे आपु दुरात।।159।।
ग्रह बाधा आवइ नहि, ऋषियन सूत बताउ।
ज्योतिर्लिंग महिमा कथन, अगिल दूज सुनाउ।।160।।

विश्व बीज शिव सत्य स्वरूपा। सृष्टा शिवा शरीर स्वरूपा।।
शिवा गात गुण ममता माया। न्याय प्रेम सत शंकर काया।।
निराकार साकार स्वरूपा। आपुहि शिवम सोह सब रूपा।।
आन्ध्र प्रदेशे कृष्णा नेरे। स्थित श्री शैल तेहि घेरे।।
तासु नाम दक्षिण कैलासू। भाखहिं शास्त्र पुराण प्रबासू।।
तहं शिव ज्योतिर्लिंग कहानी। अनुपम ढेर पुराण बखानी।।
चन्द्रगुप्त नगरी गिरि नेरा। सोह सुभागी बनि चहुं फेरा।।
परम मनोहर सब सुख सानी। न्याय नीति नृपति रजधानी।।
संयोगन विपदा पुर घेरी। नहि ओरानि बरु बनिय घनेरी।।
तनया तासु देखि विपदाई। अति अकुलानि बहुत घबड़ाई।।
घर सुख त्यागि धरिसि बन राहा। पहुंचिय श्री शैल पथ पाहा।।
तहां विलोकिस धेनु अपारा। भा मन रहन्ह संग तेहि ठारा।।
गोप वंश शैलाश्रित रहई। जप तप व्रत गो सेवा करई।।

नृपति सुता अस बनि अनुरागी। गो सेवा महं निशि दिन लागी।।
श्यामा गऊ एक रह ताके। ता पय दुहत रात कोउ आके।।
नृपति सुता उर चिन्तन छावा। दुह पय को सो जाइ रखावा।।
आपु छुपाइ बैठि इक झाड़ी। संयोगन इक दिन गै ताड़ी।।
बनिय कुपति डंडा लै धाइस। रहि दूरी सो मारि बहाइस।।
लाग न डंडा दीखु न भागत। गो लग आइ कटू वच वादत।।
पहुंचि विलोकु पाइ कछु नाही। नाना तर्क करै मन मांही।।
दीखु थने तर रह शिव लिंगा। लाग ज्योतिमय छकित भुजंगा।।
देखि दशा नृप तनया ऐसी। करन्ह विनय लगु बनि बुधि जैसी।।
श्रवन सुनिस वाणी पुनि सोई। जाहु भवन दुख आउ न कोई।।
जे भव बनहिं गऊ हितकारी। सब सुख लह शिव वचन उचारी।।
भव गौ सेवा पूजन मोरा। बांटिय वर हमहीं बनि चोरा।।
निवसब इहां हरन्ह दुख ऐसे। मारे विपति फिरहिं तुम जैसे।।

नृप तनया निज घर चलिय, पुर घर विपति दुरानि।
मन्दिर रचना दीन्ह करि, जहां ज्योति उतिरानि।।161।।
शिव अर्चन सब दुख हरन, नृप तनया चलि बांटु।
मल्लिकार्जुन नाम धरि, अनगिन के दुख काटु।।162।।

सो ज्योतिर्लिंग दरसेउ पूजेउ। ताप जाइ त्रय दुःख न दूजेउ।।
राज लोक भय दारिद दोषा। होहिं लुप्त साधेउ प्रदोषा।।
बाधा ब्याधा भव अपराधा। भगहिं जे गो सेवा शिव साधा।।
नेर नाहि आवहिं कोउ त्रासा। सहजे पुरवहि मन अभिलासा।।
देव भूमि देवन्ह दुख दूसन। नाशन प्रगटहिं नाग विभूषन।।
इहि विधि जहं तहं करहिं प्रबासा। करन्ह सुखी जग हेतू दासा।।
दरसिय देव मनुज सुख लेहीं। आतम साधन जे चित देहीं।।

सुनहु सभा सुर सूत कह, कालेश्वर प्रभुताइ।
नगर उजयनी धाम पै, प्रगटी जेस ज्योताइ।।163।।

श्री महाकालेश्वर जय जय। सदचित्त आनन्द शंकर जय जय।।
जयति जयति जय जगदीश्वर जय। साम्ब सदाशिव शिव लिंग जय जय।।
महिमा अपरमपार तुम्हारी। तुम समान को जग हितकारी।।
राजा रंक ऊंच अरु नीचा। समता नीर कृपा तुम सींचा।।
भारत मध्य नगर उज्जैना। तुम तापर करि कृपा नैना।।
चन्द्र सेन तहं नृपति पुराने। पूजहिं शिव करि प्रजा ध्याने।।
भाखहिं शिवम शकति प्रभुताई। वेद पुराण नीति अपनाई।।
रहहिं प्रजागण तन संस्कारी। सत्य सुनीति सुमति दरबारी।।

नृपति नित्य करि शिव लिंग पूजन। पाछे भोग राज कृत दूजन।।
इहि विधि करत गये दिन ढेरा। शिव सन प्रीति न नृप मन फेरा।।
शिव अर्चन नृप रचिय विशेषा। प्रजा बुलाइअ बांटि सन्देशा।।
पाइ बुलावा जन हरखाये। आइस उत्सव आनन्द पाये।।
नाना जन नृप भवन पधारे। तीय बाल यति उत्सव द्वारे।।
आवा मातु संग इक लाला। वर्ष पांच कै सो सुत ग्वाला।।
पुर घर तासु श्रीकर नामा। उत्सव देखिय उपजु मनामा।।
भवन फिरिय करि शिव सेवकाई। हमहूं बनब नृपति नर नांई।।
मातु हाथ गहि बोलन लागेउ। रहेउ जौन अन्तर अनुरागेउ।।

साधन सामग्री सकल, मातु देहु जुहवाइ।
शिव पूजन हमहू करब, जथा नृपति करवाइ।।164।।

तनय वचन सुनि कह महतारी। सुनु सुत हम गरीब कुल नारी।।
नाहिय समरथ नृपति समाना। जो उत्सव अस चलि घर ठाना।।
बाल मखान गोद लै माता। कुछ कहि पोंछिय आंसू गाता।।
पर मन चिन्तन बाल न खोवा। चित शिव पूजन रहा संजोवा।।
फिरा भवन जब संग महतारी। पथ लै शिला टूक कर धारी।।
बल बुधि जथा लीन्ह तेस थापी। राखिय शिव ते श्रद्धा अमापी।।
धूप दीप नित चन्दन करई। घटै न प्रीति दिनो दिन वरई।।
दिन दूना बढ्ढ राति चगूना। ध्यावइ नृपति भांति सबूना।।
एक दिवस अवसर अस आवा। रचि भोजन तेहि मातु बुलावा।।
बाल मगन शिव पूजन मांही। असुधि दीखु कछु सुनत सो नाही।।
देर विलोकि मातु रिसियानी। झिझकत चलिय बोलि कटु बानी।।
पूजन धन सो शिला बहावा। मार डाट फटकार सुनावा।।
जहं जेहि इष्ट होइ अपमाना। सो दुख बालक हृदय समाना।।
चिघरा बाल करुण करि जोरा। हठ करि देखइ पाथर ओरा।।
वचन न आव भाव रह ऐसा। भाखत शिव सन्मुख दुख जैसा।।
मातु फिरिय दइ और लपोटा। रोवत बाल गिरा भुंइ लोटा।।
मन अन्तर दुख होश गंवाइस। पर नाही शिव ध्यान भुलाइस।।
आशुतोष शंकर भगवन्ता। करुण विलोकिय प्रेम अनन्ता।।
दयासिन्धु दीनन हितकारी। ज्योति लिंग तंह दीन्ह उभारी।।
साज बाज बनु मन्दिर संगा। हेतु बाल तेहिं पुजन प्रसंगा।।
सहित शिवा शिव बाल उठाये। आंसु पोंछि वर विशिख सुनाये।।
कह इहि बसब करब दुख दूरी। तुम सन झेलहिं जेइ मजबूरी।।
पुरउब सकल भिलासा उनके। भांती तुम्हरेउ प्रीती जिनके।।

बनि बनि महाकाल अनुहारे। पुनि पुनि व्यथा हतब संसारे।।
दइ वरल बाल व्यथा करि खण्डन। अन्तर ध्यान भयउ जग वन्दन।।
पीछ मातु नगरी नृप आयउ। बाल भगति बंहु विधि गुण गायउ।।
शिव महिमा तेहि ठौर समानी। महाकाल ते कहि जग जानी।।

बाल श्रीकर चन्द्र नृप, अन्त पाउ शिव धाम।
सकल कामना सिद्धिप्रद, लह प्रत्यक्षे ग्राम।।165।।
सुनहु सभा सुर सूत कह, ज्योति लिंग जेस जौन।
तेस क्लेश तंह सहज मिटु, और चाह जे तौन।।166।।

शिव अकिलष्ट अखूट अगासी। रहत अछोभ अगेन्द्र प्रवासी।।
लौकिक पर लौकिक सुखदाता। अवढरदानी जग पितु माता।।
श्री ओकारेंश्वर सर्वेश्वर। इहि ज्योतिर्लिंग रूप महेश्वर।।
नाशत भगतन विपति कलेशा। मिलत अकारण कृपा महेशा।।
ज्योतिलिंग नाम ओंकारा। आपु प्रकृति करिय निर्मारा।।
सहित शिवा तहं शंभु बसेरा। करहीं आपु भगत घर हेरा।।
इहि विधि जहं तहं भारत धरनी। बसिय महेश कराउ सुकरनी।।
भारत मध्य नर्मदा धारा। बड़ पुनीत जल जीवन तारा।।
सरिता वृत्ते शैल मन्धाता। शिव पुर नाम तासु विख्याता।।
सो नृपति मन्धात तपस्थल। तीरथ रूप सुहात मनोचल।।
परम सुरम्य अन्न जल पवना। तहां वियापि रहइ दिन रयना।।
करहिं गमन तहं जे नर नारी। अघी तलक लेही तन तारी।।
बनहीं सुलभ आपु परिशोधन। करि परिक्रमा भगति विनोबन।।
पुरवत शिव जन आश भलाई। धाम जाप साधइ सेवकाई।।
पावइ काम मोक्ष बल धर्मा। अर्थ समेत मानवी कर्मा।।
दरस परस नर्मद स्नाना। हरत मनो दुख दै सुख नाना।।
बल बुधि विद्या शील स्वभाऊ। बाढ़त भागत कुमति कुभाऊ।।
भावत भजन भगति भूसुरता। सत्वृत्ति सदचिन्तन सदगुरुता।।
ओंकारे अमलेश्वर देवा। पूरक मनोदशा लखि सेवा।।

ऋषि मुनि मानव जाइ तहं, नाशहिं अन्तर पाप।
शिव कृपा सहजे लहहिं, जथा देहि मां बाप।।167।।
ज्योतिर्लिंग महिमा कथत, सूत उर्ध्व करि हाथ।
हर हर महादेव जय कीन्हे, सुर मुनि लै निज साथ।।168।।
फिरे हिमालय ओर तब, श्रीकेदार पुर धाम।
सुनन्ह मुदित ऋषियन्ह बनेउ, करि जय नत प्रणाम।।169।।

जयति शिवा शिव धाम तुम्हारू। विनवत द्वारे सुर परिवारू।।

सुमति संगठन नेह नुदाना। सदभाऊ सत्वृत्ति वरदाना।।
इहि अवसर कलिकाल प्रचण्डा। करि खण्डन सुख देहु अखण्डा।।
पुनि सुरता भव देहु उभारी। दीनदयाल देव त्रिपुरारी।।
तुम आद्यान्त रूप आनीता। अब आकीर्ण करहु सुर हीता।।
जेहि विधि ऋत ऋति बनु ऋजुराई। देहु कृपा करि प्रभु दिखराई।।
विनवत सुर मुनि मनुज समेता। चरणे शरण बैठि हिम खेता।।

सभा सुनाइअ सूत कथु, कह विधना इक बार।
पावनता सुविचार प्रद, हिम थल धाम केदार।।170।।

ज्योति लिंग महिमा अदभूता। तामें बसहिं सदा अवधूता।।
सुनहु सन्त गण देव स्वरूपा। तुम सब तारत जन भव कूपा।।
अन्देशक सन्देशक दोऊ। दरसि केतार कथै गुण वोऊ।।
बनि श्रद्धालु दै पर विश्वासा। आपन आन हरहिं भव त्रासा।।
जे हिम गिरि केतार दरसहीं। तरै सकुल पर अवगुण हतहीं।।
मानि आपु बतरावहिं आना। हिम गिरि धाम केतार महाना।।
स्वर्ग नुहारे लोक हिमालय। देव सम्पदा लै ऋषि पालय।।
जे ऋषि मुनि इहि करहिं बसेरा। तिन शिर जाइ हाथ हरि फेरा।।
बन तरु छांह पवन सुख पानी। देइ विवश करि कथन सुबानी।।
जप तप संयम सकल साधना। सफल सहज बनु मनो कामना।।
हिमगिरि बासी थूल सुदेवा। पूजनीय ता भल पद सेवा।।
तहां मदाकिनि अलकानन्दा। रिद्धि सिद्धि सुरसरी मुनिन्दा।।
भले शंभु बसहीं कैलाशा। पर केतार करि प्रभा प्रकाशा।।
नर नारायण गै हिम ठारे। चोटी पुनित पाइ केतारे।।
भावा मने करन्ह तप लागे। करि बड़ शिवम शिवा अनुरागे।।
निराहार गै बरस हजारा। रहेउ ठाढ़ इक पांव सहारा।।
भा बड़ तपसी नर नारायण। शिव साधक सविता पारायण।।
सुनि विधिना विष्णु हरखाने। मानि तपी बड़ कीर्ति बखाने।।
अन्त भूत भावन भगवन्ता। शंकर रूप अनादि अनन्ता।।
प्रगट भयो लै रूप सनातन। नर नारायण सनमुख आंखन।।
भव भय हारी जग हितकारी। भोले नाथ शंभु त्रिपुरारी।।
दरसि दोउ ऋषि भयो अनन्दा। विह्वल भाव विविध विधि वन्दा।।

चिन्मय चित चिन्तन भले, आदि अन्त न ज्ञान।
विश्वबीज प्रभुवर नमन, करु सेवक पर ध्यान।।171।।
जय शंकर शान्त शशांक रुचे रुचिरार्थद सर्वद सर्व शुचे।
शुचिदत्त गृहीतमहोपहृते हृतभक्तजनोततापतते।।

ततसर्वहृदम्बर वरद नते नतवृजिनमहावन दाहकृते।
कृत विविधचरित्रतनो सुतनो तनुविशिखविशोषणधैर्यनिधे।।
निधनादिविवर्जित कृतनतिकृत कृतिविहितमनोरथपन्नगभृत्।
नमभर्तृसुतार्पित वामवपुः सवपुः परिपूरित सर्व जगत्।।
त्रिजगन्मयरूप विरूप सुदृग दृगुदंजन कुंचनकृतहुतभुक्।
भवभूतपते प्रमथैकपते पतितेष्वपि दत्तकर प्रसृते।।
प्रसृताखिलभूतलसंवरण प्रणवध्वनिसौधसुधांशुधर।
धरराजकुमारिकया परया परितः परितुष्ट न तोऽस्मि शिव।।
शिव देव गिरीश महेश विभो विभव प्रद गिरिशशिवेशमृड।
मृडयोडुपतिध्न जगत् त्रितयं कृतयन्त्रणभक्तिविधातृकृताम्।।
न कृतान्तत एष विभेमि हर प्रहराशु महाधममोघमते।
न मतान्तरमन्यदवैमि शिवं शिवपादनतेः प्रणतोऽस्मि ततः।।
विततेऽत्र जगत्यखिलेऽघहरं हरतोषण पोष परं गुणवत्।
गुणहीनमहीनमहावलयं प्रलयान्तकमीश नतोऽस्मि ततः।।

चरण शरण परि विनय करि, नर नारायण दोउ।
कहेउ बसहु प्रभु धाम इहि, मोरे मन अस होउ।।172।।

जौ इहि विनय लेहु स्वीकारी। तौ दरसइ सब आयु हमारी।।
लोक हितारथ बनु बहु भांती। मानहु तौ गद गद बनु छाती।।
वचन पियारू भव हित कारू। सुनि हरखे कह इहि प्रकारू।।
इते मांनु हम मांग न आना। तुमहि पाइ मन मोद समाना।।
नर नारायण शीश झुकावा। कह अभिलाष पूर वर पावा।।
तुरत महेश लीन्ह परिवर्तन। ज्योति रूप बन तजि पाछिल तन।।
धरनी ज्योति लिंग बनि गयहू। शिव सम गिरि प्रभुताई भयहू।।
नर नारायण तप अनकूता। बनिय केतारनाथ प्रभूता।।
दरसि परसि मुक्ती जन लेहीं। जे श्रदालु बनु शंभु सनेही।।
जेहि देशे ऋषि देव विचारा। एक भांति तहं स्वर्ग नुहारा।।
व्यापइ धर्म संग विज्ञाना। तौ प्रजा हित नृप कल्याना।।
पावहिं वेद शास्त्र सम्माना। पालहिं जन अध्यात्म विधाना।।
ब्रह्मा विष्णु रूप विधाता। शिव समान को जग सुखदाता।।
पुरुष पुरातन दोष निपातन। हेत करहिं प्रभुता भव थापन।।
अन्तर प्रज्ञा देहिं उभारी। बनहिं देश हित जन तपधारी।।
भा को लोक भांति त्रिपुरारी। दाता ज्ञान आन दुख हारी।।
दीखिइ जहं तहं शिव प्रभुताई। रक्षति सुर मुनि प्रज्ञा उगाई।।
जब तब जहं तहं लै त्रिशूला। करहिं विध्वंस जौन प्रतिकूला।।

क्षेत्र गोहाटी ब्रह्मपुर, गिरिवर परम पुनीत।
श्री भीमेश्वर धाम तहं, बनि भा मानव मीत।।173।।

कथहुं कथा सो विशिख कहानी। कहा सूत बड़ हित मुनि ज्ञानी।।
महा प्रतापी भीम नरेशा। निवसइ काम रूप प्रदेशा।।
ता पितु कुंभकरन भा मरना। रह अबोध सो झूलत पलना।।
रहत मातु संग गै लरिकाई। बनु बल बली सूझ अधमाई।।
बूझि तनय बल कह महतारी। गा विधि कुंभकरण जेस मारी।।
सुनि पितु वध गति तड़पा योधा। करन वधन हरि लाइस कोधा।।
आपु अभीष्ट हेतु सफलाई। सहस बरस करि तप कठिनाई।।
देखि महातप प्रगटि विधाता। जग विजयी वर ताहि प्रदाता।।
वर बल पाइ देहि खल पीरा। सुरमुनि मानव भयो अधीरा।।
बनि सुर शासक छीनु उपासन। धर्म कृत्य करि लोप निपातन।।
जेहि विधि बढ़इ लोक असुराई। करै सोई ऋषि देव सताई।।
चलि सो कामरूप थल धावा। तहं नरपति करि समर भगावा।।
त्राहि त्राहि करि तीनहु लोका। भा असूझ इहि जाइ न शोका।।
अकुलाने सुर मुनि भूपाला। जाइ शरण शिव भाखु हवाला।।
पीड़ा हारी शिव त्रिपुरारी। रखु स्वभाव सुनु व्यथा गुहारी।।
कह भय त्यागि सबै गृह जाहू। वेगिय बधब आइ खल वाहू।।
सुर मुनि नृपति प्रजा समेता। आयेउ फिरि सबु आपु निकेता।।
अवसर अधिक मास चलि आवा। शिव लिंग पूजन नृप ललचावा।।
पर खल भीम चलाउ नुशासन। बधब ताहि जे करहिं उपासन।।
शिव अनुरागी करि नृप चोरी। लिंग पार्थिव विरचेउ खोरी।।
सुनिय भीम असि लै कुपि धावा। पहुंचि बधन लिंग खंग उठावा।।

लिंग गवा बनि रूप शिव, हुंकारेउ त्रिपुरार।
हाथ उठाये खंग लै, हुआ भीम जरि छार।।174।।
अदभुत कृत्य निहारि इहि, लगु विनवइ पुर लोग।
करु कृपाल कृपा इतिक, इहि सुख हो न वियोग।।175।।
पुर वाणी स्वीकार शिव, धरि भीमेश्वर नाम।
कुमति कलह ताके हतइ, जे करि जाइ प्रनाम।।176।।

लोक हितारथ पावन करनी। पर हित भाव बसै जेहि धरनी।।
तहां शिवा शिव करहिं बसेरा। प्रज्ञा ज्योति पसाइअ फेरा।।
देहिं जारि कलि कुमति कलूषा। जिमि नाशइ तम पूरब ऊषा।।
सहज सरल बड़ कृपा निधाना। पावहिं भक्त अभय वरदाना।।
अष्ट मूर्ति पंचानन चिन्मय। जय शिव ज्योतिर्लिंग ज्योतिमय।।

शिव ज्योतिर्लिंग मुक्ति प्रदाता। भाखहिं शास्त्र पुराण विधाता।।
धरनी धाम आप अनुसारे। सोन सुहागा वरनन वारे।।
जेहि शिव कृपा मिले इक बारा। जनम सात अग पीछ सो तारा।।
शिव कृपा सुर भूमि बिराजइ। ठांव अनेक ज्योति लिंग राजइ।।
भगतन भय बन्धन दुख टारन। रचहिं महेश अनेकन कारन।।
काशी धाम श्री विश्वेश्वर। लागत ह्रदय धाम महेश्वर।।

प्रलय कोप को पाउ नहि, कबहूं काशी धाम।
शिव रक्षहिं त्रिशूल लै, करहि प्रलय प्रणाम।।177।।

इहि कारण काशी प्रभुताई। महिमा अतुल जाइ नहिं गाई।।
करु तहं अनगिन तीर्थ बसेरा। सतत सुरन्ह करहीं तहं फेरा।।
विश्वेश्वर ज्योतिर्लिंग गाथा। गावहिं आगम लिखि निज हाथा।।
काशी धरनी धन्य निकेता। बसहिं जहां शिव उमा समेता।।
पार्वती परिणय करि शंकर। आये कैलाशे शिखरे पर।।
व्यापि अचिन्ता चिन्मय चीते। राखहिं योग समाधी प्रीते।।
पार्वती प्रियतम प्रीताई। अवलोकिय करि विनय सुनाई।।
नाथ मोहि इक लाज सतावत। पितु घर पति संग रहन्ह न भावत।।
करि विवाह तनया संसारी। तजि पितु घर जावहिं ससुरारी।।
चलहु उहां जहं तुम पुर ग्रामा। उपजत अन्तर रहन्ह ललामा।।
करि परिणय जौ लोक नुसारे। तौ सुनि मानहु वचन हमारे।।
पुरवहु नाथ मनोरथ मोरे। रहु जेहि विधि पति धर्म अंजोरे।।

पार्वती के वैन सुनि, सोचे शिव मुसकाइ।
गठरी मोटरी लादि लेइ, बुढ़वा बैल सजाइ।।178।।

करि शिव गृह आश्रम सम्माना। शैल त्यागि करि दखिन पयाना।।
बैल समेत पाछ जग जननी। आवत चला भारतीय धरनी।।
अवलोकत आपन घर द्वारा। चलत दिवस दस पांच गुजारा।।
भुंइं ढूढ़त आपन अनुसारे। चलि पहुंचेउ काशी दरबारे।।
कहेउ गयउं थकि जाब न आगे। नवगृह बनउब इहि प्रिय लागे।।
डेरा डन्डी गृह समाना। तहं उतारि देइ कृपा निधाना।।
माया पति माया मन कीन्ही। गयउ गृही बनि गृह रचि लीन्ही।।
तीन लोक पति अवढर दानी। संग सुहागिन करै किसानी।।
पूजहिं ज्योति लिंग तहं थापिय। सुर संस्कृति रस खेती साधिय।।
सो विश्वेश्वर विश्व गोसांई। धरि काशी आपन प्रभुताई।।
जे शिवपुर चलि कह वच आरत। पाप ताप ता शाप निवारत।।
सकल मनोरथ पुरवत वाके। मानिय प्रजा आपु पुर पाके।।

इतेउ बनै जे काशी बासी। पाउ ते सहज कृपा अविनाशी।।
काशी निवसहि कृपा निकेता। मानि बापु पुर उमा समेता।।

मानि उमा ससुराल गृह, चलि तिय धर्म नुसार।
सुर संस्कृति साधन हिते, सबते वचन उचार।।179।।
सुर संस्कृति काशी नगर, जेहि घर पालन होत।
मिलत उमा शिव तेज ते, सो घर ओतो प्रोत।।180।।
तीर्थ लाभ लह भक्तगण, रोग शोक दुख टारि।
जयति शिवा शिव कहत फिरु, नाद होत चहुं वारि।।181।।
जीवन गृही महेश कै, अवलोकिय सुर देश।
सुर संस्कृति साधिय सबै, पाइअ शिव उपदेश।।182।।

बसइ जहां शंकर परिवारा। तहां स्वर्ग सुख भुवन पधारा।।
जहं थल ऋषि मुनि तहां तपोवन। देखि दिव्यता मोह लोक मन।।
जहं शिव ज्योतिर्लिंग थापहीं। मिलु दरसे शिव धाम आपहीं।।
साधु स्वाभाव क्षमा हित आना। तापर भयहु त्रयम्बक आना।।
रह गौतम ऋषि दिन प्राचीना। बड़ तपसी वन्दहिं सुर तीना।।
रह द्विज गांव आश्रम नेरे। विप्रन्ह आवागमन घनेरे।।
द्विजन्ह तीय चलि सांझ संकारे। ऋषि आश्रम लह सीख अपारे।।
ग्राम द्विजन्ह तिय मिलि ऋषि नारी। रहहिं परस्पर मेल जोहारी।।
कछु दिन गये अजाने कारन। बनु ऋषि तिय द्विज नारि बिगारन।।
निज निज पति द्विज तिय ललकारी। कहि बनु ऋषि तिय प्रति अपकारी।।
ऋषि झगरा ते द्विजन्ह डेराने। मिलि गणपति आराधन ठाने।।
हरखे वेगि गजानन देवा। पाइ नुकूल द्विजन्ह व्रत सेवा।।
बोलेउ मांगहु वर मनमानी। देवइ अवसि सुनाइअ बानी।।

द्विजन्ह बूझि गणपति मुदित, भाखे क्रूर विचार।
सहित अहिल्या गौतम ऋषि, इहि ते देहु निकार।।183।।

अनुचित अगुण अन्याय अनीता। बरनि गणेश कहिय वच मीता।।
मांगु आन यह करन्ह अधमता। निन्दा करइ देव पुर जग ता।।
पर द्विज वृन्द गहिय अटलाई। मांनु न कुछ गणपति समुझाई।।
अन्त गजानन इहि स्वीकारी। इहि ते मुनि तिय देव निकारी।।
भगतन रक्षक बुद्धि विधाता। दिवस चारि गे पाइअ प्राता।।
बनि गौ गणपति आश्रम खेते। लागे चरन्ह हानि बड़ चेते।।
देखिय गौतम हाकन्ह धाये। हेतु भगावन डाट सुनाये।।
भागि नाहि डंडा लै लपके। भगइ डेराय धरनि पै पटके।।
माया काया गौरि गणेशू। आपु गिरिय भुंइ करि जिव शेषू।।

बड़ि गौगाई द्विजन्ह पसाई। गौतम गौ हत्या करि डाई।।
चहुंदिशि विप्रन्ह खबर अंटावा। आइ जे ते मुनि दोष लगावा।।
चकित दुखित क्षुब्धित मुनि ढेरे। देहिं सफाई आपु करेरे।।
चलिय न इक गो हत्या लागी। जुटे पंच बनि जे द्विज वागी।।
कह सब मिलि जेहि पुर हत्यारा। बसइ तहां कलि कलुष हजारा।।
जग स्वभाव करि दोष अनेकन। पर दोषी प्रिय लगत न देखन।।
सबै चाह मुनि जाइ दुराई। नाहित पाप परोसिन खाई।।
दूज विरोधी द्विज परिवारू। नहि भागइ तौ बधन उतारू।।
पुर सहयोग रहब दुश्वारा। करि बताइ सब विधि उद्धारा।।

धरनि परिक्रमा तीन करु, व्रत मास इक ठान।
नगर छोड़ि दूरी बसहु, लखि निर्जन स्थान।।184।।
एक शून्य फिर एक तक, ब्रह्म गिरि फेरा लाइ।
शिव लिंगार्चन शत घट, करु सुरसरी नहाइ।।185।।
बरस इग्यारह जाइ अस, करहु खेत कर दान।
आउ नाहि इहि ठौर फिर, तौ गनु भा कल्यान।।186।।

कातर मनोभाव ऋषि राई। प्रायश्चित उद्धार उपाई।।
लागे करन्ह आश्रम त्यागी। सहित तीय तहं ते कुछ भागी।।
द्विजन्ह कथन अनुसार मुनीशा। करिय कृत्य पसरा चहुं दीशा।।
लोक दृष्टि बनु पाप उद्धारा। पुनि गौतम दुज तप अरुवारा।।
जगत आत्मा शिव त्रिपुरारी। चरन शरन तप करि लै नारी।।
देखि घोर तप प्रगटि महेश्वर। कह मांगहु वर मने मुनीश्वर।।
कह गौतम सुनु दीनदयाला। गो हत्या अघ मोर निकाला।।
सुनिय महेश मोद भरि ढेरा। ऋषि गौतम तन शिर कर फेरा।।
लाइ नेह बड़ वचन सुनावा। गो हत्या जग झूंठ लगावा।।
जिन तोहि मारा तिन कहु मारी। तेहि देखहिं जग नयन पसारी।।

हाथ जोरि गौतम कहेउ, मुनि स्वभाव अनुसार।
नाथ क्षमहु नहि क्रोश करु, दोष हतहु संसार।।187।।

जौ द्विज पहि करतेउ अरिताई। तौ न करति हम तप तुम तांई।।
इहि स्वरूप प्रभु दरस न पउतेउं। अब जो पाइ तजब न इहि तेउं।।
भगत सुखारी जन हितकारी। लंहु कृपा करि इहि स्वीकारी।।
मो सम बहु जग जन लह पीरा। बसि इहि देहु तिनहिं मन धीरा।।
रोग शोक जारहु अघ सबके। जे आवहिं शरने चलि अब के।।
वचन विनीता भव भय हारी। बूझि महेश्वर मुद स्वीकारी।।
ज्योतिर्लिंग त्र्यम्बक रूपा। आपु बनेव शिव ढंग अनूपा।।

गोदावरी गौतमी गंगा। बहहिं तटे लै पुण्य प्रसंगा।।
होइ महा अघ कलह निपातन। देव त्र्यम्बक पूजु जे हाथन।।
मुनि महेश जगती हित कारन। लेइ नासिक नगरी अवतारन।।
धन्य महेश धन्य मुनिराई। करन्ह जे परहित जन्म गवांई।।
पावहिं शिव कृपा जन सोई। पर उपकार भाव जेहि होई।।
दोष जाइ लह पावन दृष्टी। रिद्धि सिद्धि मिलु पुष्टी तुष्टी।।

वैद्यनाथ शिव जयोतिलिंग, थल बिहार सन्थाल।
शास्त्र लोक दोऊ कथइ, तासु कथा इहि हाल।।188।।

एक बार लंका पति रावन। तप हेतू कीनेव हिम आवन।।
ज्योति लिंग जहं पाइ अनोखा। लाग करन तप जाइ न जोखा।।
असन बसन बासन व्रत नेमा। करत कठिन ऋषि भांति सप्रेमा।।
तबहुं महेश नाहि हरखाने। प्रीति घटिय न खल अकुलाने।।
काटि एक शिर शिवहिं चढ़ाई। काटत सतत शीश निज जाई।।
एक चढ़ावत दूसर काटत। इहि विधि गवा शीश नव छांटत।।
जबहिं दशम पर खंग उठावा। सो पीरा शिव देखि न पावा।।
परहित सरिस धर्म नहि भाई। वशीभूत शंकर तहं धाई।।
प्रगटि महेश लीन्ह असि थामी। बोले का तोहि आइस खामी।।
त्वरित शीश नव धड़ ते जोरी। पद अमराई दइ बरजोरी।।
धन्य धन्य बलिदान तुम्हारा। आशुतोष अस वचन उचारा।।
भाखहु चाह सनेही आपन। केहि कारन कीन्ही शिर काटन।।

कह रावण इहि ज्योति लिंग, चहत लंक लै जांउ।
एही वर प्रभु देहु मोहि, हाथे आपु उठाउं।।189।।

एवमस्तु कह औढरदानी। बनु रावण इच्छा वरदानी।।
धन्य तपस्वी कह त्रिपुरारी। नहि भूलेउ इहि बात हमारी।।
जौ कहुं देहु धरनि धरि एहू। उठइ नाहि लाये बल केहू।।
सबु स्वीकारि निशाचर राया। लिंग उठाइ पुर ओर तकाया।।
धावत पहुंचु बिहारे धरनी। लागी लघुशंका अनसहनी।।
पर उपकार भाव न जाके। न फल पाउ प्रभू वर पाके।।
मनुज एक रावण तहं देखा। तेहि थमाइ देइ लिंग विशेखा।।
आपु बना लघु शंका तत्पर। उत बड़ बोझ लाग नर मन पर।।
धरिय धरनि सो गा निज राहे। रावण फिरिय उठावा चाहे।।
बार बार बड़ जोर लगावा। उठइ नाहि भुंइ नाक भिड़ावा।।
गयउ हिरासि जोर करि हारा। मनहिं भजइ शिव बारम्बारा।।
योधा कुध भा पश्चातापा। अन्तर व्यापु विशद सन्तापा।।

दाबि अगूंठा कीन निशानी। खाली हाथ गा खल रजधानी।।
सहित त्रिदेव देव दल आइअ। थापि मंत्र पढ़ि विनय सुनाइअ।।
वैद्यनाथ ज्योतिलिंग नामा। भाखिय करहि सबै प्रनामा।।
फल अनन्त बाधा भय हारी। शान्ति प्रदायक रोग निवारी।।
कुमति कुभाव कुदृष्टि विनाशी। वैद्यनाथ जीवन सुखराशी।।
मनुज हितारथ सुर विस्तारा। हित ज्योतिर्लिंग बनु बहु ठारा।।
पर उपकार भावना जाके। शिव कृपा व्यापइ संग ताके।।
प्रज्ञापीठ नुहारेउ शंकर। ज्योति लिंग चहुं थापिय भुंइ पर।।
सुर सरि सम सब कह हित होई। पूजिय ज्योति लिंग जंह जोई।।
कह महेश ज्योतिर्लिंग साधे। भागहिं तीन ताप अपराधे।।
पाइ कूल पुरवहु अभिलासा। करि मंगल जानहु निज दासा।।
वीर्य ब्रह्म बल करउं पुनीता। राम स्वरूप शकति दै सीता।।
विश्व विधाता सर्व नियन्ता। देहीं जो ता होइ न अन्ता।।

भव हित कारन लेत शिव, ज्योतिर्लिंग कै रूप।
श्री नागेश्वर धाम बन, अद्भुत ढंग अनूप।।190।।

धर्म सनातन सुर इतिहासा। आगम निगम पुराण प्रकाशा।।
ज्योति दिखाइ सुधारिय मानव। तिते बेर बहु मारिय दानव।।
तबहूं भगति अधुर विश्वासा। अपनाइअ सहहीं बड़ त्रासा।।
भगतन परखन दनुज स्वभाऊ। बाढ़े अधम ईश प्रगटाऊ।।
वैश्य सुप्रिये भगत त्रिपुरारी। धर्म आतमा बड़ सदचारी।।
मन वच कर्म शिवार्चन साधक। भक्त अनन्य परम आराधक।।
चहूं ख्यात सुप्रिय भगताई। तट खल दारुक करु अरिताई।।
करइ उपद्रव असुर निकाया। नाना रूप धरइ करि माया।।
जिन आचरन देन पर त्रासा। सो कलि असुर पुराण बकासा।।
जेहि विधि बनै शिवार्चन रोधा। चलि सो नित करि दारुक सोधा।।
चली न सुप्रिय ते कछु ताकी। तौ लाइस मन विधि हमला की।।
नाव सवार सुप्रिय इक बारा। रहेउ जात कहुं तीरथ वारा।।
अवसर पाइ समय पहिचानी। घेरिस दारुक संग सेनानी।।
रह जित संगी नाव मझारे। बन्दी करि करु कारागारे।।
व्यथा न व्यापु सुप्रिय मनकाया। भजहिं सखा लै नमः शिवाया।।
उपदेशहिं शंकर भगताई। जीवन तारक मुक्ति सहाई।।
अवसि रहउ बनि शंभु सनेही। तबहिं आगु भल मिलु सुख देहीं।।

जहं बास ठांव रहन्ह सुप्रिय के, गा दारुक कारागार।
सुप्रिय बैठा दीखु सो, मुनि ध्यानी अनुसार।।191।।

दारुक डाटत बैन कह, अरे दुष्ट खल नीच।
सोचत विचरत काव तू, षडयंतर मन बीच।।192।।

बिनु जाने को कर परतीती। बिनु परतीत कहां थिर प्रीती।।
प्रीति बिना केहि भगति दृढ़ाहीं। ध्यान समाधि न प्रिय बिछुड़ाहीं।।
अन्तर विमल ज्ञान प्रभुताई। रहेउ व्यापि कारन कुछ तांई।।
सुप्रिय हेतु भगति प्रद धूपा। कारागार भा तीरथ रूपा।।
दारुक रूठु बाढ़ु मन कोधा। लीन्ह बुलाइ नेर कछु योधा।।
करि आदेश बधहु इन प्राना। नाहित जेल बसहिं शैताना।।
प्रान प्रघाती सुनि आदेशा। करिय नाहि सुप्रिय अन्देशा।।
टूट न ध्यान भले भय भारी। तब भै पीर मने त्रिपुरारी।।
मन एकागे आतुर नांई। सुप्रिय अन्तर शिव शरणाई।।
सब तुम्हार इहि देह हमारी। नहि चिन्तित इहि हम इहि ठारी।।
पर जो संग फंसे दुइ चारी। मरे हासहीं जन संसारी।।
जे अनदोषी दोष गे साना। लेहु बचाइ नाथ तिन प्राना।।
धावहु वेगि कृपालु हमारे। बिनु तुम को दुखिया दुख टारे।।
भगत भाव भगवान स्वरूपा। जावइ बनि प्रगटइ भव कूपा।।

लीन्ह सुप्रिय के बैन सुनि, कृपासिन्धु त्रिपुरार।
ज्योतिलिंग के रूप धरि, प्रगटेउ कारागार।।193।।

ज्योति देखि भै भगत निहाला। भा मन आइ गयो खल काला।।
पशुपत अस्त्र सुप्रिय कर सोहा। बैरी वधन उठा बल कोहा।।
गै बनि सुप्रिय दारुक घाती। लै सहयोगी संग उतपाती।।
अन्त पाउ सुप्रिय शिवधामा। बहु विधि करत नाथ प्रनामा।।
सो ज्योतिर्लिंग नाम बखाना। कहि नागेश्वर शास्त्र पुराना।।
काटइ बन्दि दोष दुख जग के। खल उत्पात पाप असुरन के।।
बनु सम सुप्रिय ता भगताई। विमल भगति बल जे अपनाई।।
बिसरु न परहित विपदा शूले। तौ नागेश्वर बनु अनुकूले।।
भव दुख हारी दोष निवारी। शिव ज्योतिर्लिंग जो जेहि ठारी।।
रोग शोक भव ताप निवारत। दै नाना सुख जीवन तारत।।
सूत शिवम महिमा प्रभुताई। कथत न थकहिं न सन्त अघाई।।

बार बार अवतार धरि, करि शिव जग उद्धार।
भूपर थापत ज्योति चलु, शक्ती आपु नुहार।।194।।

सेतु बन्ध रामेश्वर देवा। कथा अनूप ढंग महदेवा।।
करि लंका जय जब रघुराई। सागर उतरि ठहरु गिरिराई।।
सेन सीय ऋषि देखन आये। रण प्रसंग तहं बहुविधि गाये।।

धर्म सनातन जीवन पाला। जन मर्यादा दीन दयाला।।
अवलोकिय सुर मुनि ऋषि वृन्दा। बोले वचन कोशलानन्दा।।
प्रान प्रघाती जन भव पापी। निन्दनीय जग शास्त्र प्रलापी।।
विप्र वंश रावन परिवारा। कुल समेत हम करिय संहारा।।
मिलु केहि विधि इहि अघ छुटकारा। सुर मुनि ऋषि सब देहु विचारा।।
कीन पड़ाव इहां इहि हेता। अघ निवारि तौ चलु पुर केता।।
करि ऋषि मुनि स्वर एक उचारन। जनम मरण जगती कुछ कारन।।
देहिं जे आन पीर खल भांती। पाप न कोऊ लगु तेहि घाती।।
पुनि जासन बनु मुखेउ लराई। विधि न कथेउ तहं पाप गोसांई।।
प्रभु जेहिं मारा तेहि तन तारा। आखिर रहेउ मरन कोउ बारा।।
जेहि दरसे तरि लोक पातकी। मुक्ति सहज भव जाप नाम की।।
संग मर्यादा धर्म न आना। धर्मी करन्ह कहां अघ जाना।।
अघ कै मूल नाथ अन्याया। करु अपने संग या पर काया।।

कृपा सिन्धु रघुवंशमणि, सुनि के ऋषिन्ह विचार।
कह मन तन सन्तुष्ट बनु, पर आतम इनकार।।195।।

भले बधे कछु पाप न लागा। तिन तन तरेउ प्रान जे त्यागा।।
पर करुणा कराह खल नगरी। पाप समान पीर करु भितरी।।
तासु निवारन कथहु उपाई। तब जय मानब भल सफलाई।।
पर हित सरिस धर्म नहि भाई। पर पीड़ा सम नहि अधमाई।।
इहि चिन्ता खटकन दुख शूला। छूटु मोर लांघब तब पूला।।
सब मिलि भाखहु करुण दवाई। चलउं आगु तब तजि इहि ठांई।।
लीन्हेउ ऋषिन्ह राम वच मानी। साधि सर्व मति बोलेउ बानी।।
जहं ज्योतिर्लिंग धाम महेशा। बसइ तहां नहि कछुक कलेशा।।
देव सम्पदा फरु तेहि धरनी। इक मुख ऋषि मुनि प्रभु ते बरनी।।
हिमे ज्योति लिंग करइ बसेरा। लावइ जाइ कोऊ इहि बेरा।।

मारुत नन्दन गरजि कह, करउं प्रभू पद काज।
लाउब ज्योतिर्लिंग हम, जाइअ अबहीं आज।।196।।

राम पदे शिर धरि हनुमन्ता। वेगि चलेउ हिम पहुंचु तुरन्ता।।
ज्योतिलिंग ढूढ़िय नहि पावा। लागे करन्ह विनय तप ध्यावा।।
प्रगटेउ ज्योति रूप त्रिपुरारी। देर न करि पुनि चलु बलकारी।।
इत सबु दीखु मुहूरत जाई। गढ़ि बालू लिंग करिय थपाई।।
तब तक आइ गयउ हनुमाना। कृत्य विलोकि शोक मन ठाना।।
भव भय हारी भगत सुखारी। व्यथा विदारी पर हित कारी।।
सानि सबै मति कृपानिकेता। बोले वचन भगत हित हेता।।

बालू लिंग बगल इहि थापिय। लाइ जो पवन तनय तप जापिय।।
ऋषिन्ह सेन कपि सीय समेता। करिय विनय प्रभु विश्व निकेता।।
जयति जयति जय सुर रामेश्वर। ज्योतिर्लिंग ईश माहेश्वर।।
पाप ताप भव शाप निवारी। करुणा क्रन्दन शोक बिदारी।।
सुर हित कारी खल दुख हारी। रघुपति मनोताप संहारी।।
आइ शरण करि करुण गुहारी। तुम ओनात हो कोउ नर नारी।।
लेहु उबारी हर त्रिपुरारी। तीन लोक पति करु स्वीकारी।।
बसेउ सुरासुर नगर मझारी। विश्व विहारी महिमा धारी।।
पारी पारी करु अघ छारी। तुमहि पुकारी सबते हारी।।
तुम समान को कर रखवारी। खाली झोरी भरत भिखारी।।
इहि अवसर इहि विनय हमारी। सुरन्ह सुखी करु खल दुखटारी।।
जग हितकारी डमरू धारी। सुनि अनुकूल विनय कोउ ठारी।।
आदि देव शंकर त्रिपुरारी। भयो प्रगट मुख वचन उचारी।।
होहीं पाप ताप ता छारी। जे रामेश्वर राम निहारी।।
पावइ सहज मुक्ति नर सोई। करि रामेश्वर वन्दन जोई।।
दरसन मोर राम कृत करनी। जे साधिय सोई प्रिय धरनी।।

शिवलिंग नित पूजन करै, तन मन पावन भाव।
लोक पाप कलि दोष कुछ, सकै न डारि प्रभाव।।197।।
रामेश्वर पूजन करिय, कृपासिन्धु रघुवीर।
शिव प्रभुताई व्यापु तहं, राम चले धरि धीर।।198।।

पुरवहु भगत भाव अभिलासा। आपुहि लेन लोक हित श्वांसा।।
जन हित हेतु सुलभ बनि रहहीं। ठांव ठांव बनि ज्योति उभरहीं।।
ज्योतिर्लिंग देश कै जैसे। महाराष्ट्र घुश्मेश्वर वैसे।।
बसहिं देव गिरि निकट सुधर्मा। तीय सुदेहा रह प्रिय धर्मा।।
तपोनिष्ठ दोउ प्रेम परस्पर। सरल विचार भगत बड़ हरिकर।।
पर नहि सन्तति दीन्ह विधाता। इह दुख ढेर सोचि लगु घाता।।
मिलु ज्योतिष गणना परिणामे। पेट सुदेहा गर्भ न जामें।।
करि पति विनय सुदेहा रानी। पति परिणय संग बहिन ते ठानी।।
आइअ बहिन रहन्ह त्रय लागे। आपस प्रेम परम अनुरागे।।
परम सुन्दरी घुश्मा देवी। सब विधि बहिन स्वामि पद सेवी।।
सदाचारिणी परम पुनीता। शिव लिंग पूजन राखइ प्रीता।।
शत संग आठ करिय नित रचना। शंकर लिंग पार्थिव भवना।।
करइ विसर्जन नेर तड़ागे। इहि विधि करत ढेर दिन लागे।।
शिव कृपा घुश्मा उदराई। जन्मा तनय सबै हरखाई।।

दोउ तीय संग रहहिं निहाला। परम सनेह तनय प्रति पाला।।
बाढ़ु तनय परिणय दिन आवा। भुवन बहू बसि मोद बढ़ावा।।
आगु सुदेहा गै बनि खोटी। बिनु कारन उपजिय मति छोटी।।

सोचु सुदेहा आपु मन, घर में काव हमार।
जन्माइस घुश्मा तनय, करि पति पर अधिकार।।199।।

दिन दिन बढ़न्ह लाग कुविचारा। द्वेष ईर्ष्या पन व्यवहारा।।
फाटि बना मन कुलिश कठोरा। करन्ह वधन चह गोदी छोरा।।
नहि सुदेह कुविचार बुढ़ाने। बाढ़त भा वट बिरिछ समाने।।
लिखेउ विधाता जौन लिलारे। सो कोउ विधि टरै न टारे।।
एक दिन बनिय सुदेहा डाइन। लीन्ही खंग रैन अधि आइन।।
घुश्मा तनय काटि करि टूका। मूढ़ सान्त्वना धरि मनहूं का।।
पथिव विसर्जित करि जहं घुश्मा। लाश सुदेह फेंकु तेहि जल मा।।
भवा भोर पत्नी महतारी। सहित बाप करु करुण गुहारी।।
शिव भगतिन घुश्मा तपधारी। पूजन काल पूत गा मारी।।
लिंग पार्थिव अठशत रांची। करि पूजन दुख मने न खांची।।
प्रेम आंसु धरि शंकर चरना। मांगइ क्षमा भूल कुछ वरना।।
कारन दुखे न करि कमताई। पूजु पार्थिव नित दिन नांई।।
फेंका जहां तनय कर काले। करन्ह विसर्जन गै तेहि ताले।।
करिय विसर्जित फिरु घर वारी। तनय होशानि भवा दुख भारी।।
हाय निकसु मुख करुणाक्रन्दन। सुनि सहि गवा न मन जगवन्दन।।
महातेज युधि शत्रु विनाशन। प्रगटे तहां देवि दुख हातन।।
उग्र तेज करि लै त्रिरशूला। बोले अरि करि देहुं निमूला।।
लेहु तनय देहूं हम तोहूं। करि जीवित शिव दीन्हेउ वोहूं।।
पाइ तनय घुश्मा हरखानी। करत विनय बोली मृदु बानी।।

बहिन अगुन प्रभुवर क्षमहु, परम अभागिन जानि।
बसहु इहां हित आन करु, मोरि विनय इहि मानि।।200।।
परु घुश्मेश्वर नाम तहं, ज्योतिलिंग प्रभुताइ।
सुनि जे दरसन आइ करि, पूत अनेकन पाइ।।201।।
द्वादश ज्योतिर्लिंग कथ, ताप तीन संताप।
पाप शाप दुख शोक भय, नाशत पश्चाताप।।202।

सुनि सुर हरखे मुनि ऋषिराई। सूत वचन अदभुत सुखदाई।।
कह मुनीश शंकर अदभूता। को आंकइ महिमा अनकूता।।
सरस्वती कर कागज धरनी। स्याही सिन्धु दवात सबरनी।।
कलम कल्प तरु चाहे आंकन। होवइ विफल अइस प्रभुतापन।।

कहहिं करइ जे तृन भगताई। देहिं ताहि सुख सम गिरिराई।।
जग करि देहिं ताहि अनुकूला। बाधा विध्न नाशि भव शूला।।
सत्य साधना मनोकामना। करहिं न कोऊ तासु सामना।।
जप तप सबै साधना करहीं। मन अनुभूति समान न फरहीं।
भगति सनेह ढंग विश्वासे। अनुसारे उर ज्ञान विकासे।।
श्रद्धा समर्पण भाव विचारे। कह महेश तेहि करउं निहारे।।
बार बार शंकर गुण गाई। ऋषिन्ह समेत सूत शिर नाई।।
भस्मीगात छटा शिर गंगा। रक्षक भगत वरद मुद्रांगा।।
कंठ हलाहल मंगल कारी। जग पीड़ा दुख दारिद हारी।।
सुर मुनि वन्दित देव सनातन। तीन लोक पति गौरी साथन।।
धारी मुण्डमाल त्रिपुरारी। बनै अटल अब भगति हमारी।।
शशि शेखर सर्वेश्वर स्वामी। सुख समृद्ध करु शरण नमामी।।
पुरवहु नाथ मनो अभिलासा। सगुण विजय दुइ आत्म विकासा।।

सभा सुनाइअ सूत कह, नृत्य प्रदोष प्रसंग।
पाइअ सो सुख लोक केस, कहिय कथा तेहि ढंग।।203।।

नृत्य ताण्डव कला निकेतन। मानिय सुरगण करिय निवेदन।।
नेर महेश्वर गिरि कैलाशे। विनवत सुर गण वचन प्रयाशे।।
नाथ ताण्डव नृत्य तुम्हारा। इक देखिय मन कहत दुबारा।।
सकुच समेत कहन्ह भय आवत। बूझंहु मन तुम्हरे तक भावत।।
करि प्रणिपात लीन्ह सुर वचना। हेतु व्यवस्था कीन्ही रचना।।
गण समेत नन्दी अगुवाने। शिव आयसु पूरण निभुवाने।।
शिव शासन नन्दी प्रबंधा। बनु अविलम्ब दीन्ह सब कंधा।।
नृत्य परिसर कैलाश ठिकाना। करि आमंत्रित भा सब आना।।
परिसर विविध वस्तु रह जितरी। करइ न विधुन दूरि करि उतरी।।
न पिछरब पथ होड़ लगावत। जुटि आये सुरगण हरखावत।।
तहां गन्धर्वादिक दिगपाला। ठहरन्ह उचित ठांव प्रतिपाला।।
भव भय हारी देव सुखारी। समय निहारी शिव त्रिपुरारी।।
करि परिभ्रमण सभा निहारी। मुदित भाव डमरू डहकारी।।
थिरके आपु बने करताला। कमर झुकाइअ चरन उछाला।।
पग घूंघुर चारिउ कर ताने। साथ निकरु इक ताना नाने।।
करि लय उत्पत्ति एक ठिकाने। नचब शुरू करि विश्व सयाने।।
दीखु जे ता मन ताल लगावत। होत तरंगित शीश हिलावत।।
सरस्वती लक्ष्मी मह काली। नाचिय विष्णु विधाता हाली।।
आइ गयो नारद तेहि अवसर। तान बान नखरा तिनका वर।।

नारद निज वीणा दै ताली। हरि विष्णु मृदंग संभाली।।
सुरपति मुखे बांसुरी बाजी। कूदत ताल देत ब्रह्मा जी।।
भाव विभोर भरे अनुरागा। देखिय एक दूज मन लागा।।
करि वादन गायन मन हारी। सरस्वती दइ वीणा तारी।।
नाम कहां लौं जाइ गिनाई। नाचहि सुर समूह गिरिठांई।।
किन्नर यक्ष उरग गन्धर्वा। सिद्ध अप्सरा पन्नग सर्वा।।
नाचहिं गावहिं करि शिव विनती। भूलि आपु रह कह पर सनती।।
विस्मय कारी अदभुत ढंगा। नाचहिं शिव छलकहिं शिर गंगा।।
स्वेद शीत सोहा तन दोऊ। नाचत ढेर समय सब कोऊ।।

कटि भुज ग्रीवा चरन छप, अंग सचालन देख।
सबै अचंचल नैन भै, हरख किलोल विशेष।।204।।

चरण उछारी बांह पसारी। तालमताल भरत अंकवारी।।
अंगुरिन चुटुकि ताल दै तारी। इत उत चलै पता बिनु बारी।।
आपन आपन सबै संभारी। जाइ न वरनि सुरन्ह रस कारी।।
बन्द बयारी बहै न बारी। लागत निज निज नाच पियारी।।
सरिता शैल झूम इक ठारी। कबहुं न शिव अस लीला धारी।।
बनिय ज्योति शशि वन्दन वारी। मणि मुख धारी सांप फुंकारी।।
ताप विदारी भाव उतारी। थिरकि नाचहीं तीय नुहारी।।
हंसी संभारी सुर हंसि डारी। घूमइ हाथ शैल चलु भारी।।
तानन तारी शैल बिहारी। उछरत किलकत करि झनकारी।।
अचरज भारी विश्व निहारी। चलु आनन्दित आगु पछारी।।
गिरि थल व्यापु कोलाहल भारी। घुंघुरू गिरे ढिलानी सारी।।
केल किलोल हिलोल मचावत। डोल हिंडोल भांति गुन गावत।।
आन सुनावत आप ओनावत। भिड़त परस्पर मोद बढ़ावत।।
भले थके पर बन्द न भावत। तान ते तानि तान उपजावत।।
गौरी गणपति छमकि छगावत। चलत आग पिछ पांव उठावत।।
शुण्डोदर जब शुण्ड हिलावत। पट उड़ि टंगि घूंघट बनि जावत।।
आपु नाचि सब संग नचावत। विद्या वेद व्याकरण गावत।।
जे जैसे तैसे ते गावत। कोउ न काहु हंसि निन्दा लावत।।
आन प्रशंसा सबहुं सुनावत। शंभु ताण्डव नृत्य दिखावत।।
काली मनेउ मोद बड़ छावत। बढ़ि शिव ते मन चाह बतावत।।
आवा मोद ढेर दिन जावत। मांगहु जौन देन चित लावत।।

महाकालिका वैन सुनि, महाकाल यह बोल।
नृत्य ताण्डव शक्ति सुख, देखु सुरन्ह दृग खोल।।205।।

सुख न भगत भव पाउ इहि, तिनहि दिखावन चाह।
मिलइ सफलता काह विधि, ढूढु अगाड़ी राह।।206।।

जग जननी वरदायिनि अम्बा। स्वीकारा शिवमति अविलम्बा।।
भयउ सभा थिर नृत्य विरामा। प्रगटा विश्व सुखद परिणामा।।
सुरन्ह कालिका कीन संकेता। प्रगटन्ह भुवन सबै मन चेता।।
स्वयं कृष्ण बनि करि जगतारन। धरि महेश राधा अवतारन।।
पाटानन्द विरचि रस रासा। शुभ सुखकर भगतन अभिलासा।।
होहिं भगत जेहि भांति सुखारे। सोई मन भावै त्रिपुरारे।।
मातु पूजि पद कमल तुम्हारे। सुर नर मुनि सब बनै सुखारे।।
जहां साम्ब शिव शक्ति शिवानी। संरक्षण माता पितु खानी।।
सब विधि हिती लोक व्रत कोषा। मनुज मुक्ति प्रद होत प्रदोषा।।
सुनन्ह सूत मुख व्रत प्रभुताई। करिय विनय ऋषि चाह सुनाई।।
व्रत महिमा कछु कथहु मुनीशा। पूंछहि लोग गये कोउ दीशा।।
ऋषिन्ह विचार भाव प्रीताई। बूझि सूत व्रत महिम सुनाई।।

लोक अगिन शिव रूप गनु, अगिन व्रत रखवार।
व्रत तन मन शोधन करत, परसि सुधा उद्धार।।207।।

व्रत समान जग धर्म न आना। ऋषि मुनि व्रत सुर संस्कृति प्राना।।
इद्रिन्ह व्रत नाम परु धर्मा। मन व्रत तीरथ तन सत कर्मा।।
त्रिधा आस्था त्रय सुर सेवा। साधि समर्थ आत्मिक देवा।।
व्रत वैभव सोहइ संग जाहू। आशिष आश शरण प्रिय वाहू।।
जीवन दारु दवा दुस्सारा। व्रती दुवा करु ता निस्तारा।।
जहां उपासन व्रत अनुशासन। तहां करहिं मुनि देव प्रबासन।।
व्रत पूरक मानव अभिलासा। जीवन ज्योति शक्ति प्रकासा।।
दैहिक सकल अंग व्रतधारी। साधिय संयम नियम सुचारी।।
देह पात्रता शोधक काजू। व्रत समान अब तक न आजू।।
ऋषि मुनि ध्यानी ज्ञानी योगी। जाति कुजाति अजाति वियोगी।।
कोऊ देश नाहि कोउ ठांऊ।। जहां न रहु विधि व्रत मनांऊ।।
साधे व्रत जागे पच कोषा। भागै भूत विविध विष दोषा।।
अनुष्ठान जप तप पर सेवा। व्रत महान हरखु महा देवा।।
व्रतोपासना व्रत उपदेशा। साधिय आपु बताइ महेशा।।
परम्परा व्रत करि जीवन्ता। रहु सकु मनुज सुखी तक अन्ता।।
मोहि पियारू जन संसारू। व्रताचार जे हृदय उतारू।।
कहेउ सूत सुनु मुनि ऋषिराया। बिनु व्रत होत मनुज पशु काया।।
आपु व्रती शिव व्रत उपचारे। देहीं वर नहि करहिं उधारे।।

जन जन तारण होत व्रत, पर शिव रात्रि महान।
ऊंच नीच जन साधि तेहि, लहत शंभु वरदान।।208।।

सम शिव को जग पाउ न अपना। दै आपन बनहीं बड़ मगना।।
ध्यान शिवा शिव जे व्रत करई। संशय रहित सहज सो तरई।।
यदपि भूमि सुर संस्कृति पाइअ। सबै सुरन्ह मन हरख समाइअ।।
पर शिव पाइ दिवस शिवराती। हरखहिं आपु पाइ जन जाती।।
इहि दिन ते बड़ शिव प्रीताई। चाहत धन वर देहुं लुटाई।।
सुर नर मुनि कह शास्त्र पुराना। इहि व्रत जीवन हेतु खजाना।।
ऋतु बसन्त फागुन अंधियारी। त्रयोदशी तिथि शंभु पियारी।।
पाइ व्रते दिन व्रत अनुसारा। करु नित क्रिया भोर भिनसारा।।
पूजन सामग्री नुष्ठाना। साध भांति शिवराति विधाना।।
भले भाव रहु काम निकामा। देहिं महेश दोउ परिणामा।।
वन्दन विनय व्रत उपवासे। पुरवहि शिव सब के अभिलासे।।
राति जागरण फल अनकूता। मिलु केतना सो जाइ न कूता।।
जे साधइ शिव व्रत विशेषा। देहि ताहि निज धाम महेशा।।
आपु तरइ तारइ सुत नारी। पीढ़ी आग पीछ दुइ चारी।।
भगत उद्धारक शंकर अविचल। देव देव शरणागत वत्सल।।
पुरवहि मनोकामना सबके। रह शिव राति जे व्रत विधि रहिके।।
दिन परिणय को बना न दानी। तानुसार बनु औढर दानी।।
बांटहि विश्व आपु प्रभुताई। पाउ न सो जो नेर न जाई।।

अनजाने महं भील इक, कीनेव व्रत शिवराति।
शिव कृपा वर पाइ अस, शिव पुर रहन्ह बिसाति।।209।।
शिवम शिवा कथ परम प्रिय, सबै सुनन्ह प्रीताइ।
शिव राती प्रभुताइ फल, आगे सूत सुनाइ।।210।।

भील एक अधमी बनवासी। गुरुद्रुह नाम अतुल अघराशी।।
घरि चौबीस रहइ मन रांजे। क्रूर स्वभाव क्रूरता काजे।।
बनवासी भीलन्ह अनुसारे। रहा करत पोषण परिवारे।।
करि धन हरन आन गृह हाड़ी। वन बिचरिय मारइ मृग ताड़ी।।
इहि विधि रोज करत अघ नाना। तिते पोषु आपन कुल प्राना।।
करत बालपन ते अघ धंधा। आयु ओरानि भवा न मन्दा।।
पाप कमाई पाप सगाई। इहि तजि भील न गा दुज ठांई।।
भाव समर्पण श्रद्धा नुसारे। लह शिव कृपा जीव संसारे।।
पर द्रुह अन्त बनेउ सुर भांती। कथेउ सूत लह बल शिवराती।।
भील घरे घटना दिन एके। घटिय अइस उपमा न तेके।।

मात पिता पतिनी घर लरिके। भूख भूख भाखे इक स्वर के।।
भूख विकलता करुणी बानी। तड़फड़ात जाके घर प्रानी।।
सुनिय व्यथा व्यापइ मन सब के। सुजन कुजन मूढ़े बुधि जन के।।
लाग असह्य गुरुद्रुह मन ढेरा। कहि मृदुवच सुत तन कर फेरा।।
जात अबहिं लाउब कुछ आनी। हरब भूखि जिन राखु गलानी।।
अस कहि भील लीन्ह धनु बाना। पग बढ़ाइ करि विपिन पयाना।।
विचरण करन्ह लाग बन माझे। हेतु शिकार मनोबल बाझे।।
दिन गा भील शिकार न पावा। बैठे भानु शोक बड़ छावा।।
भवन फिरत लागइ बड़ि लाजा। कारण सफल न भा ता काजा।।
दूजे घर जन भूख भिखारी। गये तासु केस पीर निवारी।।
विविध विचार लाइ करि निर्णय। जाब न हम घर बिना मांस लय।।

विपिन अंधेरा बढ़ि गयो, भूख प्यास भा भील।
चलेउ बुझावन प्यास निज, नेर सरोवर झील।।211।।
झील सरोवर तट निरखि, करिय भील पहिचान।
नीर पियहिं मृग आइ इहि, अब सो समय नेरान।।212।।
अब इहि ते कहुं जाब नहि, बनु मन पूरन आश।
समय ठांव अस मिलु दोउ, जो खोवइ भुख प्यास।।213।।

मृग मारने की साधना में भील

शोक दुरान मोद भरु प्राना। भील भा आतुर करन्ह निशाना।।
चहूं निहारत मनहिं विचारइ। पता न केहि पथ कबके धारइ।।
इहि चिन्ता बिसरा निज चिन्ता। भूख प्यास आपन भिलवन्ता।।
को न गात बनु परम पुनीता। भूखे भजन गहे सदनीता।।
छिपि बैठन्ह इत उत भुंइ ताड़ा। पाउ अधी न निज मन आड़ा।।
उपजु न काह मने चतुराई। हरन आन धन मारन तांई।।
ठांव नुकूल आड़ न पाये। भील रचिय तब आन उपाये।।
तटे तड़ागे बेल बिरीछा। लागु सो ता पूरक मन ईछा।।
पाती डार पात सघनाई। भील तिमे रह आपु छिपाई।।
बेल बिरिछ चढ़ि गयो भिलारी। धनु शर लै हाड़ी जल भारी।।
धरि प्याऊ जल मोटी डारी। आपु भील धनु बान संभारी।।
ब्याध ब्याधि बनि बैठा डारे। पियत न नीर समय चलु टारे।।
नयन खोलि पथ सकल निहारत। को आवहिं ऊपर ते ताड़त।।

लिखा लिलारे तासु रह, आशुतोष वरदान।
अवसर आज नेरान सो, गा बनि सर्व विधान।।214।।

बैठा भील बेल तरु जाही। रह शिवलिंग तरे तेहि छांही।।
संयोगन अवसर शिवराती। रह भूखा प्यासा मृग घाती।।
जापर कृपा प्रभु कै होई। आनि सुयोग देहि विधि कोई।।
बेल नाहि सो बनेव शिवालय। देई भील ह्रदय प्रभुता धय।।
जिमि कोऊ पथ पाती खुरके। भील संभरि इत धनु शर झटके।।
इहि चिन्ता आवइ अब कब के। आशा भील राखु धनु तन के।।
शाखा थिरके मटुकी छलके। नीर गिरइ शिव लिंग पल पल के।।
भा शिव लिंग पर पाति परत के। फल उपजइ शिव राति व्रत के।।
होन लाग अस पूजन शिव के। लगु बदलन बुधि व्यापे जिव के।।
भूख प्यास पीड़ित अघ तन के। प्रथम प्रहर गा अस पूजन के।।
लगु सो आशुतोष प्रिय मन के। पूजा भील अगुन ढंगन के।।
करुणा ब्यापु काह मन हम के। सोचु भील बेले तरु थम के।।
पर स्वभाव कारज वश बल के। न विचलब करि कर झटकन के।।
मटुकी लुरकि आध जल लुढ़के। सहस पात गिरि चढ़ु औघढ़ के।।
तब लौं मृगिय विकल प्यासन के। आई झील नीर घाटन के।।
भरत चौकड़ी कूद उछर के। बूझि रैन रहु मने निडर के।।
खड़खड़ान ध्वनि पाइ श्रवन के। चौंकि निहारन लगु वृक्षन के।।
देखिय व्याध साध धनु तन के। नाही वचब बाण अब इनके।।
प्रभू प्रेरणा बसि दोउ दिल के। ठाढ़ि मृगी भै मने विकल के।।

व्याध दशा अवलोकि मृगि, बोली करि चित्कार।
अबहिं व्याध नहि मारु मोहि, भाखहु आपु विचार।।215।।

शिवराती अर्जन प्रभुताई। रह भी ले उर बड़ करुणाई।।
ठहरु व्याध न करि सन्धाना। कहब स्वार्थ निज मन भलमाना।।
कह भूखे दुख कुल परिवारा। हेतु भूख हर तोर संहारा।।
सुनिय मृगिय लाइअ मन धीरा। बोली अवसि हरब तुम पीरा।।
पर इक पीर हमारि शिकारी। सुनु करुणा करि विनय हमारी।।
हम बनेल पशु मांस हमारे। पाइ सुखी जौ तुम परिवारे।।
मोहि स्वीकार देह परमारथ। गये लागि बनु पूरण स्वारथ।।
देहु पियन जल बाल बतावन। स्वामी सौपि करब पुनि आवन।।
धरब देह अस काज पुनीते। दुख ता हरब जो जग जन जीते।।
इहि सम पुण्य काज का अर्चन। लागे परहित काजे पशु तन।।
अवसर इतिक देहु बन चारी। शपथ खाउं हम शिव त्रिपुरारी।।
फिरउं न जौ हम वचन नुसारे। तौ भव जग अघ बसै कपारे।।
जग विश्वास घात अघ जोऊ। ता भय कुल समेत हम होऊ।।
विनय भाव करुणा सत बैना। को जीतइ सम धर्म दुजैना।।
अन्तर भील करिय विश्वासा। पर ऊपर अस वचन बकासा।।
को जग आवत प्राण गवांवन। कह जाहू पर करु पुनि आवन।।

पानी पिय हरिनी चलिय, कहि रखु मन विश्वास।
मिलब आइ कुछ देर मंह, तजि संशय धर आस।।216।।
भूखे प्यासे व्याध तन, करत दीन उपकार।
प्रभुताई शिवराति बल, अन्तर होत सुधार।।217।।
शिव अर्चन प्रथम पहर, भील करिय इहि ढंग।
दूज पहर मंह आइ मिलु, पुनि ऐसन प्रसंग।।218।।
प्रान दान करि एक के, बन चर नाहि चुपान।
आन आश करि डार पै, साधे तीर कमान।।219।।

बिगते घरी मृगी दुज आई। भिलवा हड़बड़ान अफनाई।।
डार डुगी पाते खड़खाने। संभरा भील बाण सन्धाने।।
घट जल ढुरुकि नहाने शंकर। ऊपर ते गिरु बेल पात बर।।
इहि विधि शिव अर्चन जिमि बनई। तिमि लगु बनन्ह व्याध भलमनई।।
ब्याध बिलोकि मृगी चिल्लानी। भरे विनय करुणामय बानी।।
कहु काहे मोहि मारन ताने। देहु बताइ लेहु इहि माने।।
भाखेउ भील भुखा कुल मोरा। भूखि भगाइब मांस लै तोरा।।
विनवत मृगी भाखु मृदु बानी। चाह तुम्हारि लीन्ह हम मानी।।

पर तन प्यासी बिछुड़े लरिका। प्यास बुझाइ करउं तिन खरिका।।
देहुं बताइ जाउं हित आनेउ। फिरउं न जौ तौ न दुख मानेउ।।
पर पीरा हित जाहि मरण बन। पावइ मुक्ती आपु सहज तन।।
जौ जानइ कुल कृत्य हमारा। तौ चलु तेस भावी परिवारा।।
चिन्ता मोहि मरन कै नाही। कारन कथन उपजु मन माहीं।।
दूजे आज दिवस शिव राती। कहब न झूंठ न बनु वचघाती।।
देहुं वचन हम फिरब दुबारा। देइ आश्वासन बहु प्रकारा।।
परम पुनीत अघी तन तारी। पाइ दिवस हम काह निहारी।।
कुल घर भूखि तुम्हार मिटाउब। भय वश नहि कह प्रण वश आउब।।
शिव कृपा बनचर मन भावा। स्वीकारा अस वचन सुनावा।।
जिन आवत तिन कह इहि खानी। देहु जाइ कह आवन बानी।।
प्यास बुझाइ मृगी गृह आई। कुल बुलाइ संकल्प सुनाई।।

बेल पत्र शिव प्रीति बड़, घट जल बनु सम गंग।
दूज पहर शिव अर्चना, व्याध लहे वर संग।।220।।

जापर कृपा करै त्रिपुरारी। करु सो जौन तौन हितकारी।।
अवसर तीज पहर अधियाये। तट सरुवर मृग एक दिखाये।।
व्याध बिलोकि सोचु मन अपने। अबकी अवसि पूर बनु सपने।।
पग अड़ियाइ डार बल लाइअ। धनु डोरी खैंचिस अफनाइअ।।
डार डुगी भै खड़खड़ पाता। जाइ गिरइं जे करु अघ घाता।।
बनु जब जब झुग झुग तरु डारी। तब तब अवसि गिरै घट बारी।।
पाइ दोउ सुख औढर दानी। गनिय अर्चना भगतन खानी।।
दीन्ह कृपा करि भा खल पावन। तौ मन भा नहि तीर चलावन।।
सुनिय मृगा खड़खड़ ध्वनि पातन। डारिय बेल बिरिछ पर आंखन।।
देखेउ एक व्याध सन्धाने। बा शर छूटन्ह बचै न प्राने।।
आतुर बैन मुखे मृग बोला। चाह काह तुम मम पशु चोला।।
व्याध कहा कुल भुख दुखारी। चाहत इहि स्वारथ तोहि मारी।।
बूझिय भील काज दुख पीरा। बोला हरिण वचन मृदु धीरा।।
इहि शिव धाम आज शिवराती। काज दुजे मिलु पर दुख धाती।।
तटे तड़ाग फिरहिं वन चारी। मोहि लागइ तीरथ अनुहारी।।
बनेउ बियापि रही शिव छाया। करु जे विनय दीखु तिन काया।।
तुमहिं समर्पित करि बनराया। हम निज प्राण समासे काया।।
विनवहुं एक विनय स्वीकारा। देहूं गति बताइ परिवारा।।
करि परतीत मानि इहि लेहू। जो पर देहुं देहिं विधि तेहू।।
हरि पुरवहिं सब आश तुम्हारे। जौ तुम पुरवहु वचन हमारे।।

बनब न झूंठ हरब पर पीरा। पर रखि रोकु एक घरि तीरा।।
आजु झूंठ अन्याय अनीता। साधे मानु नरक ते प्रीता।।
मांनु न मांनु प्राण तोहि अर्पन। खात शपथ अपने शिव अर्चन।।
बिना दिव्य जीवन सदज्ञाना। लहत न मान न प्रिय पर प्राना।।
कीनेव हरिण बैन लाचारा। उपजु व्याध मन करुणा धारा।।
एक गई दुज तीजे वचने। सुनिय भील सोचइ मन अपने।।
जे आवत ते मांगत एही। कारन विधना का रचि देहीं।।
भीलराज मृग बैन न तोरा। स्वीकारा आपन शर मोरा।।
भाखेउ भील जाहु गृह अपने। कुल बतराइ करहु इहि गमने।।
बड़ अचरज कौतुक मन लाई। मन थिर बैठु पहर त्रय जाई।।

बनु शिव व्रत अनजान तहं, भूखा प्यासा भील।
तीनहु आशा राखि मन, बैठ विटप तट झील।।221।।
उत त्रय जाइअ आपु कुल, कहि संकल्प हवाल।
बनि सहृदयी एक दुज, राखि समय का ख्याल।।222।।
प्राण समर्पण करन्ह मृग, चले बनेश्वर ओर।
बाल पीछ पछुवाइ चलि, वन्दत शक्ति अघोर।।223।।
भाव भरे सब हम मरब, आन बचाउब प्रान।
आइ गयेउ सब बेल तर, बोले मीठ जबान।।224।।
मारहु या कहु घर चलहुं, आपन पीर मिटाउ।
हरिण पंच परिवार तहं, भाव विनीत दिखाउ।।225।।
चकित व्याध मृगन्ह निरखि, भाव काज व्यवहार।
शिव अर्चन प्रभाव ते, मन भा परम उदार।।226।।

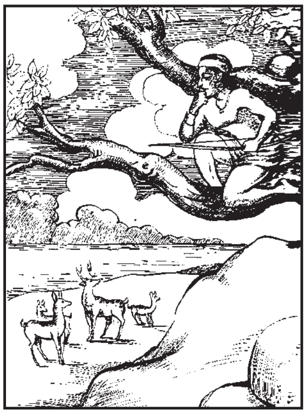

मृग वापस आने पर भील को पश्चाताप

हरिणी करनी भील निहारी। विसिमत अंगुरि दांत तर डारी।।
बसहिं विपिन मृग वंश समेता। आतुर देह देन हित हेता।।
तिन कह धन्य धिकारिय आपू। नर तन पाइ जियउं करि पापू।।
को मोसम अधमी जग मांही। पाइ मनुज तन सब बिलवाहीं।।
हम आपन अघ केहि विधि काटी। सुर दुर्लभ तन करि देइ माटी।।
अस पछितात शोक मन धारे। धरि धनु तरु ते धरनि पधारे।।
मृगन्ह अगारेउ शीश झुकावा। कर जोरे पुनि वचन सुनावा।।
पाउ जो तुम ते कहुं नहि पावा। मिटिय भूख कुल मोर अघावा।।
तुम करनी नहि जाइ बिसारी। भांति सकल हम तोर अभारी।।
पूजनीय तुम जन संसारी। बनि पशु तन इत पर उपकारी।।
पर हित हेतु सबन्ह कै करनी। दरसिय इहां मुदित बन धरनी।।
परहित लागि तजहिं जे प्राना। तेहि गुण गावहिं सन्त पुराना।।
परहित भाव जासु मन मांही। ताहिय जग दुर्लभ कछु नाहीं।।
परहित वचन जासु मन काया। तापर कवच रूप हरि छाया।।
परहित जे जन कबहुं न करहीं। बनिय अभागी नरके परहीं।।
कह वनचर सुनु पशु वनचारी। मुक्त करत तुम हमहिं उबारी।।

मनुज मनुजता व्याध गहि, शिव अर्चन बल संग।
मुक्त मृगे परिवार करि, देखि विपिन बनु दंग।।227।।

जगत आत्मा शिव सर्वेश्वर। अन्तरयामी तन अखिलेश्वर।।
श्रद्धा समर्पण दोऊ तन के। व्रत उपासन सब पहरन के।।
अवलोके महेश त्रिपुरारी। हरखे प्रगटे वचन उचारी।।
भीले मांगु मांगु मन मानी। तोहि पूजन करनी प्रिय मानी।।
दरसिय भील पाउ दिव्यताई। चरण गिरेउ वर मांगि न पाई।।
भयेउ मनेउ जेस सर्वस पावा। भगति अचल बल हृदय समावा।।
अन्तरयामी औढर दानी। परम मुदित बोले मृदु बानी।।
श्रृंगवेरपुर करु प्रबासा। मिलहिं राम घर रखु विश्वासा।।
धन वैभव यश शील स्वभाऊ। सुख सम्पन्न करिय गिरिराऊ।।
बसा भील तहं लै परिवारन। लाग करन्ह पथ राम निहारन।।
इत मृग ओर महेश निहारी। योनि मुक्त करि सुरता ढारी।।
कुल समेत सुर धाम पठावा। सो थल व्याधेश्वर कहलावा।।
सुनहु ऋषीगण भाखिय सूता। शिवराती व्रत बड़ प्रभूता।।
पुनि पुनि आइ जबै शिवराती। तब तहं साधि सुजन उतपाती।।
लेहिं लाभ आपन तन तारी। थल व्याधेश्वर बहु नर नारी।।
विविध भांति करि गान मुनिन्दा। लेहिं काटि त्रय तापिक फन्दा।।

शिव महिमा स्तुति करिय, सूत सकल मुनि संग।
मानि सबै अमराइ व्रत, करि धारण मन अंग।।228।।

महोक्षः खट्वांगं परशुरजिनं भस्म फणिनः,
कपालं चेतीयत्तव वरद तन्त्रोपकरणम्।
सुरास्तां तामृद्धिं दधति च भवद्भ्रूप्रणिहितां,
न हि स्वात्मारामं विषयमृगतृष्णा भ्रमयति।।1।।
ध्रुवं कश्चित् सर्वं सकलमपरस्त्वध्रुवमिदं,
परौ ध्रौव्याध्रौव्ये जगति गदति व्यस्तविषये।
समस्तेऽप्येतस्मिन् पुरमथन तैर्विस्मित इव,
स्तुवंजिह्रेमि त्वां न खलु ननु धृष्टा मुखरता।।2।।
अमुष्य त्वत्सेवासमधिगतसारं भुजवनं,
बलात् कैलाशेऽपि त्वदधिवसतौ विक्रमयतः।
अलभ्या पातालेऽप्यलस चलितांगुष्ठशिरसि,
प्रतिष्ठा त्वय्यासीद् ध्रुवमुपचितो मुह्यति खलः।।3।।
यद्द्धिं सुत्राणो वरद परमोच्चैरपि सती–
मधश्चक्रे बाणः परिजनविधेयस्त्रिभुवनः।
न तच्चित्रं तस्मिन् वरिवसितरि त्वच्चरणयो–
र्न कस्याप्युन्नत्यै भवति शिरसस्त्वय्यवनतिः।।4।।

द्वादश शंकर नाम गुण, छबि द्वादश उर धारि।
द्वादश लिंग प्रभुता कथिय, ऋषियन ओर निहारि।।229।।

पशु पति शिव महेश चण्डेश्वर। महामृत्युंजय अध नारीश्वर।।
विश्व रूप हर सद्योजाता। दिग्वह रूप पंचमुख धाता।।
उमापतीश्वर औढर ध्यानी। कामौढरि शिव औढर दानी।।
धाम हिमालय गिरि घर वासी। शीत प्रीत केतार प्रबासी।।
काशी विश्वनाथ त्रिपुरारी। महिमा अगम अपार तुम्हारी।।
सत्य समान धर्म नहि आना। कहि माना शिव आपु मकाना।।
बैद्यनाथ चित भूमि बिहारे। ठांव रहन्ह सो तुमहि पियारे।।
गोदावरि नासिक मन भावा। बनिय त्र्यम्बक दोष दुरावा।।
भीम नाम लै भीमा तीरे। करत दूरि जन मानस पीरे।।
नाग नाथ कालेश्वर रूपा। ओंकार भव परम अनूपा।।
मलिकाअर्जुन श्री रामेश्वर। शक्ति प्रदाता विजय विशेश्वर।।
घुश्मेश्वर नाशक दुख फन्दा। शिव सर्वातम परमानन्दा।।
अजरानन्द अक्षरानन्दा। पूर्णानन्द सच्चिदानन्दा।।
शान्त रूप भव बोधानन्दा। अमृत रूप अनन्त अनन्दा।।

ब्रह्मानन्द आत्मा नन्दा। परमानन्द ध्रुव आनन्दा।।
अचल असीम अपार अनन्दा। ज्ञान अचिन्त्य परत्परनन्दा।।
अपरिमेय आनन्द सानन्दा। ध्यानी विज्ञानी आनन्दा।।
सर्वानन्द तत्व आनन्दा। सब आनन्दा घन आनन्दा।।
महा अनन्द अखण्ड अनन्दा। आनन्द आनन्द शिव आनन्दा।।
महिमानन्दा जारत गन्दा। तीनहु ताप लोक त्रय फन्दा।।

शिव महिमा नहि जांनु सकु, सुर अज वेद पुरान।
मूढ़ मुनिन्ह कहं शरण रखि, देत आपनो ठान।।230।।

काग हंस नर मूढ़ गवांरा। चलु उड़ि उड़ि शक्ती अनुसारा।।
पर नभ अन्त पाउ न कोई। तानुसार शिव महिमा होई।।
यदपि मनुज तन पंख विहीना। उड़हि पाइ सदचार प्रबीना।।
सदाचार शुभ मुक्ती सुखदा। दुराचार सम दूज न विपदा।।
आसुरि सम्पति नरक नुदाने। काटइ मनुज पंख वरदाने।।
द्वादश ज्योर्तिलिंग ज्योतीमय। अष्टमूर्ति शंकर हर सब क्षय।।
अछर पंच ओम नमः शिवाया। काया छाया प्रद शिव दाया।।
शिव लिंग साक्षात शिव रूपा। भव अध नर नारी अनुरूपा।।
वेदी लिंग शकति प्रभुताई। बनि प्रकृति व्यापइ सब ठांई।।
लिंग मूल महं ब्रह्म राजहीं। मध्ये विष्णु शकति साजहीं।।
ऊर्ध्व महेश सृष्टि आधारा। बनि रांचइ बहु विधि संसारा।।
शिव लिंग पूजन जे अलसाई। रहु ताते सबु देव रिसाई।।
सुरन्ह बैर शिव भावत नाही। सहित अनीति अधम जगमांही।।
गगने लिंग पीठ महि मानी। मुख महेश उपदेश बखानी।।
समय प्रकृति शिवम बलबूते। उपजइ सृष्टि बताइअ सूते।।
लिंग पूजत करु मने कल्पना। पूजत मनहुं शिवा शिव चरना।।
बरनेउ सुर मुनि शास्त्र पुराना। लिंग पूजा शिव चरित समाना।।
मानव देह विषय मद लोभी। वर्जित जौन रहै प्रिय वो भी।।
बिनु शिव पूजे होइ न पारा। जीवन जाइ व्यरथ संसारा।।
बनु शिव शिवा चरन अनुरागी। करहिं कृपा जन जानि अभागी।।
जनम मरण दुख व्यापइ नाही। जौ शिव शिवा भगति उर ठांही।।
दुर्लभ जौन रहइ सुर हेता। देहि सुलभ करि कृपा निकेता।।
लिंग अर्चना जन भव तारी। दैहिक अवगुन मन अघ छारी।।
जान अजान करै कोउ भांती। प्रद फल अदभुत व्रत शिवराती।।
पूजन लिंग दक्षिन सुखमूला। नाही आन दिशा अनुकूला।।
पूजे नेह सहित शिवलिंगा। पाउ तीर्थ फल गोता गंगा।।

व्रत शिवराति लिंग सुखरूपा। सुनि सन्तन मन हरख अनूपा।।
मानि आपु कहं परम सुभागी। बनेउ महेश चरण अनुरागी।।
धूप दीप नैवेद्य करि, होन लाग शिव गान।
स्वर गूंजे जयकार करि, सभा हिमे स्थान।।231।।
नमामि शिव शिवा चरन त्रिलोक नाथ नन्दनं।
अनादि आदि सर्व मय महेश गौरि वन्दनं।।1।।
अनन्त शक्ति रूप धर प्रचण्ड पाप खण्डनं।
ललाट शशि त्रिशूल कर, प्रसीद वर सुसन्तनं।।2।।
शान्ति रूप निर्विकार गंग धार उर्ध्वनं।
ब्रह्म ज्योति प्रज्ञाधार नाथ हे त्रिलोचनं।।3।।
पावन पतित उबार प्राण धार भगतनं।
नाग साज गले हार सत्य शिव सनातनं।।4।।
जय महेश जय दिनेश ज्ञान न विवेचनं।
भांति भांति आपु भांति कथत शास्त्र शेषनं।।5।।
विश्वनाथ गौरि पतिम् ईश अखिलेशनं।
काशी कैलाश नाथ देव महादेवनं।।6।।
हम अजान कुछ न ज्ञान नाही मंत्र बुधि घनं।
चरण शरण तरण आश गूंज मन शिव दासनं।।7।।
गुरु गायत्री गणपते, गौ गीता गुरु धाम।
गुरु पूर्णिमा गंगा गौरी, गान ग्राम प्रनाम।।232।।
सकल मानि वन्दत फिरउं, ओछी भगति हमारि।
दूज आश नहि जाउं कहं, चितवहु पलक उघारि।।233।।
जयति जयति जय विश्वपति, सर्वेश्वर सुखमूल।
अन्तरयामी प्रज्ञा करु, कथ जीवन अनुकूल।।234।।
चित चिन्तन कर कर्म गुण, भाव भजन मति रंग।
रहउं नाथ चरणे लिपटि, लगै न मन पर संग।।235।।

इति श्रीमद्शिवशक्तिकथायां सकल कलिकलुषविध्वंसने प्रथमः अध्यायः शिवाय खण्डः

नमः शिवाय

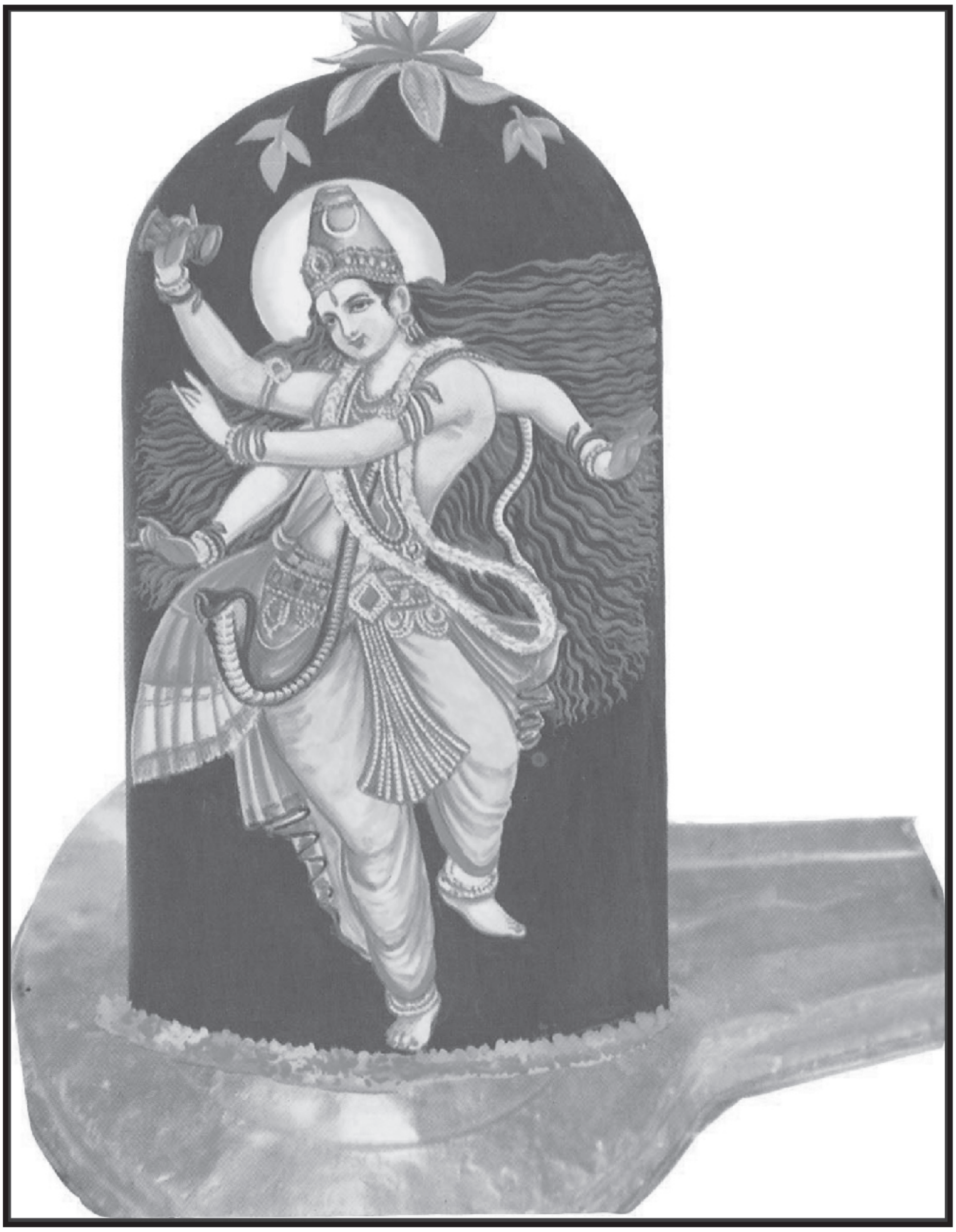

नमः शिवाय